श्रीदुर्गापूजा-पद्धतिः

प्रणेता – पं. मोहनलालशर्मा 'पाण्डेयः'

JACL-KRC
023414

श्रीदुर्गादेव्यै नमः

दन्तिद्वेष्योर्ध्वदेहा दनुजदवदवा दाडिमीदन्तदीप्तिः
देवेभ्यो दानदात्री दितदितिजदला दुःखदारिद्र्यदात्री।
दैवज्ञा दिव्यदर्शा दिशि दिशि दरदा दुर्गदैत्येन्द्रदात्री
दुर्गा दुर्दम्यदेशा दलयतु दुरितं दातदैतेयदर्पा।।

– मोहनपाण्डेयः

शैलपुत्री

स्कन्दमाता

ब्रह्मचारिणी

कात्यायनी

चन्द्रघण्टा

कालरात्री

सिद्धिदात्री

कूष्माण्डा

महागौरी

श्रीदुर्गापूजा-पद्धतिः

प्रणेता

पं. मोहनलालशर्मा पाण्डेयः

राष्ट्रपतिसम्मानितः, वाचस्पतिपुरस्कारसभाजितः

श्रीवाणी-अलङ्करण-विभूषितः, जयपुरम् (राजस्थानम्)

*

सम्पादकः

पं. रामकिशोरशर्मा

साहित्याचार्यः, ज्योतिर्विद्, अनुष्ठानप्रवीणः

*

सहसम्पादकौ

पं. प्यारेमोहनशर्मा

सम्पादकः, भारती-पत्रिका

पूर्वनिदेशकः, राजस्थानसंस्कृतअकादमी, जयपुरम्

डॉ. ताराशङ्करशर्मा 'पाण्डेयः'

प्रोफेसर एवं साहित्यविभागाध्यक्षः

जगद्गुरुरामानन्दाचार्य-राजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयः, जयपुरम् (राजस्थानम्)

*

हंसा प्रकाशन, जयपुर

35
22-10-10
SV-2024
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
जयपुर परिसर, जयपुर
पुस्तकालय
क्रमांक 23414
12·2 N

JACL-KRC
023414

श्रीदुर्गापूजा-पद्धतिः

स्वत्वाधिकारः - लेखकाधीनः

संस्करणम् - २०१०

मूल्यम् - समर्पणम् (न्यौछावर)

प्रकाशकः -

हंसा-प्रकाशन

संस्कृत एवं हिन्दी साहित्य के प्रकाशक एवं विक्रेता
५७, नाटाणी-भवन, मिश्रराजाजी का रास्ता,
चांदपोल बाजार, जयपुर -३०२००२ (राज०)

दूरभाष - ०१४१-२३१८३६५, मो. ९४१४०६६१६५, ९४१४०६७५८०

अक्षरयोजकः - लोकमित्र, सूरजपोल बाजार, जयपुरम्

मुद्रकः -

श्रीदुर्गापूजा-पद्धतिः

॥ अनुक्रमणिका ॥

१	पुरोवाक्	- महामहोपाध्याय देवर्षि कलानाथ शास्त्री	१
२	सम्पादकीयम्	- पं. रामकिशोरशास्त्री	११
३	महाशक्तियों का प्रादुर्भाव	- पं. मोहनलाल शर्मा 'पाण्डेय'	१५
४	भगवती महालक्ष्मी की महिमा	- पं. प्यारेमोहन शर्मा	२१
५	ब्रह्मस्वरूपिणी भगवती सरस्वती	- प्रो. ताराशंकर शर्मा 'पाण्डेय'	२४
६	पराशक्ति भगवती श्रीदुर्गा	- पं. राधामोहन शर्मा	२८
७	नवरात्र व्रतविधान	- डॉ. राजेन्द्र कुमार तिवाडी	३१
८	दुर्गासप्तशती-सारगर्भित मीमांसा	- पं. राकेश शर्मा ज्योतिषी	३४
९	राजस्थान की सिद्धिप्रदा महाशक्तियाँ	- पं. राधेश्याम व्यास	४०
१०	स्त्रियः समस्तास्तव देवि ! भेदाः	- डॉ. राजेश्वरी भट्ट	४६
११	श्रीदुर्गापूजा-पद्धतिः	- पं.मोहनलालशर्मा 'पाण्डेय'	४९

परिशिष्टांशः

नानाग्रन्थेभ्यः

१२	श्रीदुर्गासप्तशती, कामनापरत्वेन चण्डीपाठ-संख्या		२८३
१३	कामनाभेदेन दुर्गापाठे सम्पुटितमन्त्र-प्रयोगः		२८५
१४	सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम्		२८७
१५	दुर्गाद्वात्रिंशन्नाममाला		२८९
१६	सप्तश्लोकी दुर्गा		२९०
१७	श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्		२९२
१८	बटुकभैरवब्रह्मकवचम्		२९६
१९	बटुकभैरवस्तोत्रम्		२९९
२०	दुर्गासप्तशतीहवनविधानम्		३०४
२१	देवीपद्यपुष्पाञ्जलिस्तवः	श्रीरामकृष्णपरमहंस	३०९
२२	वज्रेश्वरीस्तवः	पं. दुर्गाप्रसाद द्विवेदी	३१६
२३	सुवर्णालक्ष्मीनक्षत्रमालास्तवः	आशुकवि हरिशास्त्री दाधीच	३१९
२४	श्रीदुर्गापूजन-हवन-सामग्री		३२७
२५	पद्धति-प्रणेता परिचय	- डॉ.राजेन्द्र तिवाडी	३३३

◆◆◆◆

पुरोवाक्

- महामहोपाध्याय देवर्षि कलानाथ शास्त्री

शक्ति पूजा की परम्परा

भारत में शक्ति की उपासना और भक्ति की भावना एक सांस्कृतिक पहचान के रूप में सदियों से स्थापित हैं । वेदकाल से ही शक्ति भारतीयों को ऊर्जा देती रही है । गुलामी के दिनों में जब जनमानस पीड़ा और बेबसी का जीवन जी रहा था, भक्ति आन्दोलन ने उसे ढाढस दिया । तब शक्ति की भक्ति की एक नई धारा चल निकली । आश्विन और चैत्र के नवरात्र के दिनों में सभी धाराओं की शक्ति पूजा इस देश में अनेक हृदयावर्जक रूपों में उभर कर आ जाती है । शक्तिपूजा की तीन धाराएँ सुविदित हैं - तान्त्रिक शक्ति पूजा जिसमें दश महाविद्याओं की उपासना शामिल है जिसे सदियों से गोपनीय रखा जाता रहा है, दूसरी नव दुर्गाओं की पौराणिक पूजा जो दुर्गा पूजा के अंग के रूप में उसके साथ नौ दिनों तक की जाती है, तीसरी तंत्र, पुराण और इतिहास की मिश्रित परंपरा की देशव्यापी शक्तिपीठ पूजा जिसके अन्तर्गत समूचे देश में फैले ५१ शक्तिपीठों की अलौकिक मान्यता दूर दूर से भक्तों को उनकी तीर्थयात्रा के लिए आकर्षित करती है जिसमें कामरूप की कामाख्या से लेकर उत्तर की वैष्णवी देवी (वैष्णो देवी) तक के मन्दिरों में भक्त मत्थे टेकने जाते रहते हैं । सदियों की इस परंपरा ने भारत देश को पूर्व से पश्चिम और उत्तर से

दक्षिण तक जिस प्रकार एक सूत्र में बाँध कर राष्ट्रीय एकता की संजीवनी पिलाई है वह रोमांचक हैं ।

यह तो सुविदित ही है कि इन शक्तिपीठों को पौराणिक गाथा में लिपटे विश्वास ने, इस इतिहास ने श्रद्धा की एक डोर में बाँध रखा है कि जब दक्ष यज्ञ में सती ने आत्मदाह कर लिया था और भगवान् महादेव उसके क्षतविक्षत शरीर को बाँहों में लेकर समूचे देश में घूम रहे थे, उस समय सती के जो -जो अंग जिस-जिस स्थान पर गिरे वे शक्तिपीठों के रूप में भक्तों के तीर्थस्थल बन कर अमर हो गए । तंत्र चूडामणि नामक ग्रन्थ में जो ५१ शक्तिपीठ गिनाये गए वे सारे भारत में फैले हुए हैं किन्तु यदि उनमें किसी प्रान्तविशेष के मूर्धन्य देवी मन्दिर परिगणित नहीं हैं तो भक्तों का मानस कैसे सन्तोष प्राप्त करे? राजस्थान की जनता को सदियों से संबल देने वाली देवियाँ जैसे साँभर और शेखावाटी की शाकम्भरी, बाँसवाडा की त्रिपुरसुन्दरी, आमेर की शिलामाता आदि तथा आद्या शक्ति के रूप में सदियों से पूजे जाने वाली लोक देवियाँ जैसे बीकानेर की करणी माता, करौली की कैला देवी, सीकर की जीण माता (जयन्ती), अनेक राजकुलों की आराध्या नागणेची, अनेक वर्गों की कुलदेवियाँ जैसे मारवाड की दधिमथी, फलौदी की लटियाल, अन्य क्षेत्रों की शीतला, चौथ, आवड, राणी सती- ये सब यदि शक्तिपीठों में नहीं गिनाये जाएँ तो वह सूची पूरी कैसे मानी जाए? ये हमारी लोकदेवियाँ भी हैं, कुलदेवियाँ भी हैं, तांत्रिक शक्तियाँ भी हैं । इनके स्थल हमारे साधना-पीठ हैं, पूजापीठ हैं ।

दुर्गापूजा

इन देवियों की पूजा और साधना की अनेक विधियाँ देश में प्रचलित हैं । चंडीपाठ, आवरणपूजा के साथ अपनी आराध्या

की पूजा, शतचंडी या सहस्रचंडी नाम से विख्यात वे अनुष्ठान जो विधिवत् निर्मित वेदियों में आहुतियों के साथ किए जा रहे यज्ञ कर्म के कारण आगम और निगम के समन्वय का प्रतीक बन गये हैं, ये सब विभिन्न नैमित्तिक पूजा और साधना के प्रकार हैं। नित्यपूजा और साधना भी की जाती है प्रतिदिन दुर्गापाठ द्वारा। इसी के एक प्रकार के रूप में शरत् काल में की जाने वाली शक्ति पूजा अर्थात् नवरात्र पूजा भी इस देश की प्राचीन परम्परा है। देश के पूर्वी अंचल, विशेषकर बंगाल में तो यही वर्ष का प्रमुख उत्सव होता है। नवरात्रों की दुर्गा पूजा वहां का सबसे बड़ा पर्व और 'पूजा' का अवकाश सबसे बड़ा अवकाश होता है। उत्तर भारत में अवश्य ही नवरात्रों के साथ रामलीला के जुड़ जाने से यह भ्रम होने लगता है कि नवरात्र कहीं रामचरित्र से सम्बद्ध न हो। अब तो शोध विद्वानों द्वारा यह भ्रम दूर कर दिया गया है कि विजयादशमी का रावण वध के साथ ऐतिहासिक सम्बन्ध नहीं है केवल पारंपरिक संबंध ही है। अनेक नगरों में रामलीलाएं आज भी रामनवमी के अवसर पर होती हैं। जब से बनारस की रामलीला विजयादशमी पर शुरू की गई थी तब से यह परम्परा अन्य नगरों में भी चल निकली किन्तु नवरात्र या विजयदशमी का रामकथा से संबंध नहीं है। आश्विन शुक्ल में नवरात्र स्थापना और दुर्गा पूजा पूरे देश में हजारों वर्षों की मातृपूजा की उस परम्परा का स्मरण दिलाती है जो आदिमकाल से चली आ रही है। आज तो इसने पौराणिक परम्परा के अनुसार उस दुर्गा की उपासना का रूप ले लिया है जिसका चरित्र मार्कण्डेय पुराण के तेरह अध्यायों में निबद्ध है। दुर्गा के चरित्रों में दुर्गा द्वारा महिषासुर का वध, चण्ड और मुण्ड का वध, शुंभ और निशुंभ का वध इत्यादि उपाख्यान निबद्ध हैं और इनमें लगभग ७०० श्लोक होने के कारण इस

चरित्र को 'दुर्गा सप्तशती' कहा जाता है। इसी का पाठ नवरात्र के ९ दिनों में किया जाता है और इसके तीन भाग कर प्रथम चरित्र महाकाली को, मध्यम चरित्र महालक्ष्मी को और उत्तर चरित्र महासरस्वती को समर्पित किया जाता है। पुराणों में मातृपूजा को पौराणिक आख्यानों के साथ जोड़कर इन तीनों शक्तियों को क्रमशः शिव, विष्णु और ब्रह्मा की शक्तियाँ बताया गया है जब कि शक्ति पूजा को शिव की अर्धांगिनी पार्वती के साथ जोड़कर उसे शैव और शाक्त आगमों की तांत्रिक परम्परा का अंग भी बनाया गया है।

तांत्रिक रहस्य

तान्त्रिक पूजा की यह परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। देश में जिस प्रकार वेदों की ऋषिप्रज्ञा समादृत है उसी प्रकार तंत्रों की साधना भी। वेदों को निगम और तंत्रों को आगम कहा गया है। निगम और आगम का समान महत्त्व माना गया है। तान्त्रिक विद्याओं की यह परम्परा भी इतनी विशाल और रहस्यात्मक है कि उसका ओर छोर पाना असंभव है। पूरे तंत्र साहित्य का आकलन अब तक नहीं हो पाया है जिसका प्रमुख कारण यह रहा है कि तंत्र विद्या को आरम्भ से ही इतना गोपनीय और रहस्यात्मक बनाकर रखा गया कि उसका प्रचार तो दूर, उसे जानबूझकर छिपाया जाता रहा। इसके फलस्वरूप तंत्र का अधिकांश साहित्य आज भी अमुद्रित है। जो साहित्य उपलब्ध है उसका भी विस्तार इतना है कि उसका संकेत भी महासागर की थाह पाने का प्रयत्न सा लगता है। आज सामान्य भारतीय को पौराणिक परम्परा की देवियों का तो ज्ञान है तांत्रिक परम्परा की देवियाँ अब भी संकेतों से ही अभिहित की जाती हैं।

नवदुर्गाएँ

आज नवदुर्गाओं की जो पूजा की जाती है वह पौराणिक परम्परा की देन है । पुराण में सिंहवाहिनी दुर्गा के ९ स्वरूप गिनाये गए हैं । शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि महागौरी और सिद्धिदात्री । नवरात्र के ९ दिनों की गणना के साथ तथा कन्याओं की पूजा के रूप में इनकी आज भी पूजा की जाती है । किन्तु तान्त्रिक परम्परा में जो शुद्ध चैतन्य की उपासना मानी जाती है उसमें दश महाविद्याओं की साधना की जाती है । महाविद्या से तात्पर्य गुह्य (गुप्त) विद्या का है जिसे आगम परम्परा ने स्थापित किया है । ये आगम शैवागम और शाक्त तंत्र इन दो शाखाओं में विभाजित किये जा सकते हैं । शैव तंत्र भी शिवागम, भैरवागम आदि अनेक शाखाओं में विभक्त है । आगम साहित्य की शाखाओं में यामल, डामर, पांचरात्र आदि अनेक भेद-प्रभेद शामिल हो गए हैं । आगमों का मूल प्रतिपाद्य परमाद्वय विज्ञान का सूक्ष्म विश्लेषण था । शुद्ध चैतन्य किस प्रकार हमारी चर्या को प्रभावित करता है इसका विश्लेषण कर इच्छा ज्ञान और क्रिया तीनों का तादात्म्य करके चित् शक्ति की उपासना इन आगमों में बतलाई गई है । मध्यकाल में शायद आगमों का शास्त्रीय पक्ष उतना चमत्कारजनक नहीं लगा जितना क्रियात्मक पक्ष । इसलिए आज तांत्रिक क्रियाओं के रूप में मारण, मोहन, उच्चाटन आदि टोने-टोटके और श्मशान साधना, अघोर साधना जैसे प्रकार ही तांत्रिक साधना के रूप में सामान्य व्यक्ति द्वारा भ्रमवश समझ लिए जाते हैं जबकि आगम की मुख्य विषय वस्तु ये नहीं हैं । मध्यकाल में यौगिक क्रियाओं का समन्वय कर तांत्रिक साधना को इस प्रकार की उग्र साधना या वामाचार का रूप दे दिये जाने के कारण आज सामान्यतः ऐसी

धारणा फैल गई है कि तांत्रिक क्रियाएं या तो उग्र होती हैं या किसी के अहित के लिए प्रयुक्त की जाती हैं लोकभाषाओं में कापालिकों और जोगियों की जो कथाएं प्रचलित हुई उनके कारण शायद यह धारणा बन गई हो ।

महाविद्याएँ

शैवागम और भैरवागम, यामल और डामर तथा पांचरात्र (वैष्णव तंत्र) के अतिरिक्त जो शाक्त तंत्र हैं उनका भी विस्तार बहुत विशाल है । शंकराचार्य ने अपनी आनन्दलहरी में ६४ तंत्रों का उल्लेख किया है । प्रत्येक तंत्र में किसी न किसी पुरुषार्थ का विवरण है । इनके द्वारा महामाया समस्त भुवनों को मोहित करती है । उस मोहपाश से बचने के लिए तथा जन्म मरण के जाल से छूटने के लिए इस महामाया की उपासना की जाती है । यही कारण है कि न केवल शंकराचार्यों के प्रत्येक पीठ में बल्कि समस्त आचार्यों के प्रतिष्ठानों में कुल देवी या उपास्य देवी के रूप में एक शक्ति अवश्य पूजी जाती है । विवाह आदि के मंगल अवसरों पर आज भी पुरोहित षोडश मातृकाओं की पूजा कराता है । इन १६ माताओं में गौरी, पद्मा, शची, मेधा आदि १५ माताएं पूजी जाती हैं और १६ वीं माता के रूप में कुलदेवी का पूजन होता है । सारे भारत में कुलदेवी कोई माता ही होती है, पुरुष देवता यह स्थान आज तक नहीं ले पाया । शक्ति पूजा की इस तांत्रिक परम्परा की प्रमुख महाविद्याएं दस हैं जिनमें प्रत्येक की साधना के लिए सैंकड़ो तान्त्रिक ग्रन्थ लिखे गये हैं । ये महाविद्याएं हैं काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, त्रिपुर भैरवी, धूमावती, वगलामुखी, मातंगी और कमला । प्रत्येक महाविद्या की पूर्णता के लिए उनके साथ एक शिव (जिन्हें क्रियात्मक उपासना में भैरव भी कहा जाता है) की अवधारणा की गई है । शिव और शक्ति का यह संयोग ही इच्छा और क्रिया का

संयोजन है । शक्ति के बिना शिव को शव माना जाता है । शव भी शक्ति का स्पर्श पाते ही शिव बन जाता है ।

इन महाविद्याओं की पूजा इतनी गुप्त रखी जाती है कि आज भी इनके वास्तविक नाम छिपाने की परम्परा है । काली को इसीलिए आद्या भी कहा जाता है, महाकाली भी, चंडी भी । तारा को द्वितीया भी कहा जाता है, उग्रतारा भी, एकजटा भी, नीलसरस्वती भी । षोडशी को तृतीया भी कहा जाता है, श्रीविद्या भी, त्रिपुरा, त्रिपुरसंदरी और ललिता भी । श्रीविद्या बुद्धि, शास्त्र, वैदुष्य, सौन्दर्य और काव्य शक्ति देने वाली देवी मानी जाती है इसलिए इसकी उपासना के सैंकड़ों प्रकार विद्वत्कुलों में प्रचलित हैं । श्रीविद्या के मुख्य १२ सम्प्रदाय हैं जिनमें अनेक लुप्त हो गये हैं कुछ आज भी प्रचलित हैं । यह माना जाता है कि वैदिक ऋषि अगस्त्य की पत्नी लोपामुद्रा ने श्रीविद्या की उपासना की थी । उन्हें सिद्धि प्राप्त होने पर उन्होंने अपने पति अगस्त्य को भी इसकी दीक्षा दी । यह लोपामुद्रा सम्प्रदाय आज भी चल रहा है । इससे यह सिद्ध होता है कि श्रीविद्या की उपासना दक्षिण भारत तक फैल गई थी क्योंकि अगस्त्य को दक्षिण भारत का ऋषि माना जाता है । श्रीयंत्र जो शक्ति पूजा का प्रमुख यंत्र है इसी देवी का यंत्र माना जाता है ।

उपासना प्रकार

तांत्रिक पूजा की सभी देवियों के पृथक् पृथक् स्वरूप, ध्यान, बीजमंत्र, यंत्र और साधना पद्धतियां प्रचलित हैं । यद्यपि तांत्रिक साधना गोपनीय रूप से यंत्र को सामने रखकर की जाती है तथापि इन देवियों के जो स्वरूप वर्णन मिलते हैं उनके आधार पर इनकी मूर्तियां भी बना दी गई और मंदिर भी स्थापित हो गये । कलकत्ता की काली का मंदिर, बांसवाडा के त्रिपुर सुंदरी का मंदिर, दतिया का पीताम्बरा पीठ इसी कारण प्रसिद्ध हैं । छिन्नमस्ता का ध्यान और स्वरूप तो अत्यन्त अद्भुत है । इस देवी

ने अपना सिर काटकर अपने हाथ में लिया हुआ है और स्वयं अपना खून पी रही है। इस स्वरूप का गूढ़ रहस्य तंत्र के अध्ययन से ही समझ में आ सकता है। वल्गामुखी को बगलामुखी भी कहा जाता है और पीताम्बरा भी। इसका स्वरूप समुद्र के बीच शत्रु की जिह्वा खींचते हुए बताया गया है। इसलिए मुकदमें में जीत के लिए या विवाद में शत्रु पर विजय के लिए इसकी उपासना अद्भुत फल देने वाली बताई गई है। इसी देवी का नाम पीताम्बरा है जिसकी उपासना पूरे देश में प्रचलित है किन्तु जिसका दतिया स्थित पीठ प्रसिद्ध है। मातंगी को शूद्रवर्ण की बताया गया है और उच्छिष्ट चांडाली भी कहा गया है। कमला ही लक्ष्मी का स्वरूप है जिसकी पूजा धन के लिए की जाती है। कमला धन की देवी है तो धूमावती दारिद्र्य, वैधव्य और अभावों की देवी है। हमारे यहां दोनों की पूजा होती है। धूमावती को कुरूप, कृशकाय एवं विधवा बतलाया गया है। सौंदर्य के साथ असौन्दर्य की यह पूजा तांत्रिक उपासना की विशेषता है।

इन सब उपासनाओं के प्रकार अत्यन्त गोपनीय होने पर भी इन पर लिखे हजारों ग्रंथ आज भी उपलब्ध हैं जब कि हजारों ग्रंथ तांत्रिकों के घरों पर गुप्त रूप से रखे जाने के कारण लुप्त हो गए होंगे। इनके सैंकड़ों बीज मंत्र भी उसी प्रकार गुप्त हैं। इन सबका संकेत तांत्रिकों की सभाओं में भी कूट संकेतों से किया जाता है। कादि, हादि, कहादि इस प्रकार के शब्दों से ऐसे ही संप्रदायों (काली ललिता, तारा) के संकेत दिये जाते हैं। सृष्टि संहार और संहार से सृष्टि के क्रम की पूजा का यह चक्र तांत्रिक उपासना की सामान्य धारा के अन्तर्गत आता है। तभी तो मृत्यु के भय का नाश करने वाली काली को श्मशान में शव पर खड़ी और लपलपाती लाल जीभ वाली बताया जाता है। विश्व में सबसे बड़ा भय मृत्यु का होता है अतः उस पर विजय पाने वाली यह देवी तभी तो साधक को सब भयों से मुक्त कर देती है।

शक्तिपीठ

समस्त भारत को तीर्थों की शृंखला में एकबद्ध करने का क्रम जिस प्रकार वैष्णव भक्ति ने चलाया था उसी प्रकार देश के कोने कोने में १२ ज्योतिर्लिंगों की स्थापना द्वारा शैवागम ने भी अपना देशव्यापी विस्तार किया था। ठीक उसी प्रकार एक पौराणिक उपाख्यान द्वारा शक्ति के सिद्ध पीठों की शृंखला भी पूरे देश में फैला दी गई जैसा हमने पहले स्पष्ट किया है। यह मान्यता इस कथा से उद्भूत हुई कि जब शिव की पत्नी सती के पिता दक्ष ने यज्ञ किया और शिव को नहीं बुलाया तो सती अत्यन्त क्रुद्ध हुई और स्वयं पिता के यज्ञ में पहुंची। अपने पति का अपमान सहन न करने के कारण उसने यज्ञवेदी में ही शरीर त्याग कर दिया। यह सुनते ही शिव भी वहां पहुचें और सती का शरीर गोद में लेकर उन्मत्त की तरह घूमने लगे। उनकें क्रोध से प्रलय की आशंका करते हुए विष्णु ने सती के शरीर को चक्र से काट दिया। सती के अंग भारत के विभिन्न प्रदेशों में जा गिरे। जहाँ जहाँ ये अंग गिरे वहाँ शक्ति के सिद्ध पीठ बन गए। ये ५१ शक्ति पीठ आज भी उपासकों के तीर्थ बने हुए हैं और कामरूप कामाख्या से लेकर गुजरात तक तथा हिमालय से लेकर कन्या कुमारी तक फैले हुए हैं। तान्त्रिक शाक्त उपासना की इस परम्परा ने हजारों वर्षों से पूरे देश को मातृपूजा के एक सूत्र में बांध रखा है। राजस्थान में भी ऐसे अनेक शाक्त पीठ आज भी हजारों श्रद्धालुओं को आकर्षित करते हैं जैसा पहले कहा जा चुका है। बीकानेर की करणी माता, आमेर की शिला देवी, बाँसवाड़ा की त्रिपुर सुंदरी, नागौर की दधिमथी तथा करौली की कैला देवी कुछ ऐसे सिद्ध पीठ हैं जो श्रद्धालुओं में अद्भुत और अलौकिक शक्ति का संचार करते रहते हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ

इन समस्त देवियों की आराधना के विविध प्रकार हैं। दुर्गा अथवा चण्डी की पूजा, आराधना आदि की परंपरा सारे देश में

प्रचलित है । ऐसी दुर्गापूजा विधि एक साथ प्राप्त हो जाए जिससे सामान्य साधक और पूजक दुर्गापूजा, पाठ, शतचण्डी आदि अनुष्ठान सुविधा से कर सके इस हेतु राष्ट्रपतिसंमानित तथा वाचस्पति पुरस्कार, श्रीवाणी-अलंकरण आदि अनेक पुरस्कारों से अलंकृत विद्वत्प्रवर कविवर पं० मोहनलाल शर्मा पाण्डेय ने यह शक्तिपूजा पद्धति तैयार की है जिसमें विविध अनुष्ठानों की विधियाँ वर्णित हैं ।, पूजा प्रकार स्पष्ट किए गए हैं तथा दुर्गापाठ का पूरा विधान बताया है । पं० मोहन लाल शर्मा पाण्डेय ने इस प्रकार की विविध पूजापद्धतियाँ प्रणीत कर प्रकाशित करवाई हैं यह सुविदित है । श्रीराम की, हनुमान् की, श्रीकृष्ण की, श्रीगणेश की तथा शिव की पूजा पद्धतियाँ इन्होंने तैयार कर जिस प्रकार विद्वज्जगत् तथा साधक समूह तक पहुँचाई हैं उसी प्रकार शक्तिपूजा का यह विधान भी सब तरह के साधकों और पाठकों के लिए उपयोगी, उपकारी एवं संग्रहणीय सिद्ध होगा इसमें संदेह नहीं है ।

इस उत्तम कार्य के लिए विद्वत्प्रवर पाण्डेयजी को अनेक साधुवाद एवं बधाइयाँ समर्पित हैं ।

राष्ट्रपति सम्मानित
महामहोपाध्याय देवर्षि कलानाथ शास्त्री
अध्यक्ष,
आधुनिक-संस्कृत-पीठ,
जगद्गुरुरामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर
प्रधान संपादक,
"भारती" संस्कृत-मासिक-पत्रिका
(**भूतपूर्व अध्यक्ष,** राजस्थान-संस्कृत-अकादमी
तथा **निदेशक** संस्कृत-शिक्षा एवं भाषा विभाग,
राजस्थान सरकार)
सी/८, पृथ्वीराज रोड़, जयपुर ।
दूरभाष - २३७६००८

सम्पादकीयम्

- पं० रामकिशोर शास्त्री

महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती स्वरूपा दुर्गादेवी महत्तत्त्वादिरूप व्यापक इन्द्रियों से अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड में समस्त वस्तुओं को प्रकाशित करती है, तथा अपने द्वारा उत्पन्न किये हुए जगत् के जीवों के शुभाशुभ कर्मों को देख कर विशेषरूप से उनके अनुरूप फल की व्यवस्था करने के लिये समस्त विभूतियों को धारण करती है । देवी की महिमा अपार है । एक समय समस्त देवता भगवती देवी के समीप गये और नम्रता से पूछने लगे - हे महादेवि! आप कौन हो? तब देवी ने कहा मैं ब्रह्मस्वरूपिणी हूँ मुझ से प्रकृति-पुरुषात्मक सद्रूप और असद्रूप जगत् उत्पन्न हुआ है । मेरा स्वरूप ब्रह्मादिक नहीं जानते हैं, इसलिये अज्ञेया हूँ, मेरा अन्त नहीं मिलता है, अतः अनन्ता हूँ । मेरा लक्ष्य दिखाई नहीं देता है, अतः मैं अलक्ष्या हूँ । मेरा जन्म समझ में नहीं आता है , अतः अजा कहलाती हूँ । मैं अकेली ही सर्वत्र व्याप्त हूँ, अतः एका कहलाती हूँ । मैं अकेली ही विश्वरूप में दिखाई देती हूँ, अतः नैका हूँ । इसलिये ऋषि महर्षि, देवगण, तथा मेरे उपासक मुझे अज्ञेया, अनन्ता, अलक्ष्या, अजा, एका, और नैका नामों से मेरी स्तुति करते हैं ।

देवभूमि भारत में उस पराशक्ति पराम्बा भगवती की सगुणोपासना विभिन्न विग्रहों में अनादिकाल से सनातन रूप से होती चली आ रही है । शास्त्रों में इसी पराशक्ति को परब्रह्म परमात्मा के रूप में दुर्गा, काली, लक्ष्मी, सरस्वती तथा नवदुर्गाओं के नाम से अभिहित कर उनकी उपासना का मार्ग निर्दिष्ट किया गया है ।

यही निर्गुणस्वरूपा देवी जीवों पर दया करके स्वयं ही सगुण-भाव को प्राप्त होकर, ब्रह्मा, विष्णु, और महेश रूप से उत्पत्ति पालन और संहार कार्य करती हैं । स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं -

त्वमेव सर्वजननी मूलप्रकृतिरीश्वरी ।
त्वमेवाद्या सृष्टिविधौ स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका ।।
कार्यार्थे सगुणा त्वं च वस्तुतो निर्गुणा स्वयम् ।
परब्रह्मस्वरूपा त्वं सत्या नित्या सनातनी ।।
तेजःस्वरूपा परमा भक्तानुग्रहविग्रहा ।
सर्वस्वरूपा सर्वेशा सर्वाधारा परात्परा ।।
सर्वबीजस्वरूपा च सर्वपूज्या निराश्रया ।
सर्वज्ञा सर्वतोभद्रा सर्वमङ्गलमङ्गला ।।

- ब्रह्मवैवर्तपुराण - २-६६/७-१०

तुम्हीं विश्वजननी मूल प्रकृति ईश्वरी हो, तुम्हीं सृष्टि की उत्पत्ति के समय आद्याशक्ति के रूप में विराजमान रहती हो और स्वेच्छा से त्रिगुणात्मिका बन जाती हो । यद्यपि वस्तुतः तुम स्वयं निगुर्ण हो तथापि प्रयोजनवश सगुण हो जाती हो । तुम ब्रह्मस्वरूप, सत्य, नित्य एवं सनातनी हो । परमतेजःस्वरूप और भक्तों पर अनुग्रह करने हेतु शरीर धारण करती हो । तुम सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी, सर्वाधार एवं परात्पर हो । तुम सर्वबीजस्वरूपा, सर्वपूज्या एवं आश्रय रहित हो । तुम सर्वज्ञ, सर्वप्रकार से मङ्गल करने वाली एवं सर्वमङ्गलों की भी मङ्गल हो ।

उपनिषदों में इन्हीं को पराशक्ति के नाम से कहा गया है - उस पराशक्ति से ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र उत्पन्न हुए । उसी से सब मरुद्गण, गन्धर्व, अप्सराऐं और बाजा बजाने वाले किन्नर सब ओर से उत्पन्न हुए । समस्त भोग्य पदार्थ और अण्डज, स्वेदज, उद्भिज्ज, जरायुज जो कुछ भी स्थावर जङ्गम, मनुष्यादि प्राणिमात्र है, सब उसी पराशक्ति से उत्पन्न हुए ऐसी वह पराशक्ति है ।

राष्ट्रपतिसम्मानित पं० मोहनलाल पाण्डेय शर्मा मेरे सहपाठी रहे हैं । प्रारम्भ में इन्होंने तथा मैंने स्व० ग्यारसीलालजी वेदाचार्य से सस्वर वेदमन्त्रों का अध्ययन किया, तत्पश्चात् जयपुर के प्रसिद्ध संस्कृत विद्या केन्द्र महाराज संस्कृत कालेज से राष्ट्रपति-सम्मानित प्रो० जगदीशशर्मा जी से साहित्य का अध्ययन किया । पूर्व जन्म के सञ्चित कर्मों से लोकशास्त्र तथा विभिन्न काव्यशास्त्रों के गहन अध्ययन से काव्य मर्मज्ञों की शिक्षा से सतत अभ्यास करने से पाण्डेय जी की काव्य प्रणयन में प्रवृत्ति प्रादुर्भूत हुई । इनके काव्य-रचना-व्यापार में स्वयं वाग्देवी सरस्वती यथेष्ट अभिवाञ्छित शब्दार्थ को प्रकट करती है । प्रारम्भ में आपने गणेश, श्रीराम, कृष्ण, हनुमान् व शिव आदि देवों की पूजा-पद्धतियों का निर्माण किया, अब यह दुर्गा-पूजा पद्धति आपके हाथ में आ रही है । आपने पत्रदूत, नतितति, संस्कृत-काव्य-कौमुदी आदि काव्य, पद्मिनी, रसकपूर उपन्यास, अभिनन्दन-पत्र, विद्वत्परिचय पद्यों का निर्माण किया है और कर रहे हैं ।

इस पूजा-पद्धति के प्रकाशन के लिये पं० मोहनलाल शर्मा पाण्डेय के आदेश से तथा स्वयं के लिए भगवती दुर्गा देवी द्वारा प्रदत्त अनुपम प्रेरणा से हंसा-प्रकाशन के संस्थापक तथा संस्कृत व हिन्दी साहित्य के प्रकाशक एवं विक्रेता श्रीरामशरण नाटाणी ने अपनी स्वीकृति प्रदान की । नाटाणी ने समय-समय पर धर्मानुष्ठान

कराये हैं तथा अपने ग्राम (खण्डेला) में शिव परिवार दुर्गा आदि देवताओं के भव्य मन्दिर बनाकर वैदिक विधान से उन देवताओं की प्राण-प्रतिष्ठा आदि धार्मिक कार्य सम्पन्न कराये हैं ।

अत: मैं इनके परिवार एवं सहयोगी वर्ग के दीर्घायुष्य तथा नैरुज्य की सदैव भगवान् आशुतोष शंकर तथा जगज्जननी भगवती श्रीदुर्गा देवी से कामना करता हूँ । प्रकाशन के लिये आपको सहर्ष धन्यवाद ।

''देवेन केनाऽपि हृदि स्थितेन यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि'' इस पंक्ति के अनुसार परामबा पराशक्ति भगवती श्री दुर्गा देवी की अनुकम्पा से श्री पाण्डेयजी द्वारा रचित श्रीदुर्गापूजा-पद्धति का सम्पादन कार्य करने का मुझे शुभावसर प्राप्त हुआ है ।

आशा है भक्त समुदाय तथा विद्वज्जनों में इस पूजा-पद्धति का अत्यधिक स्वागत होगा और इसके प्रवर्तकगण तथा प्रकाशक आदि पुण्य व यश के भागी होंगे । महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती स्वरूपा श्रीदुर्गा-देवी के चरणारविन्दों में प्रणति सहित सभी सहयोगियों को मेरी शुभकामनाएँ समर्पित हैं ।

सम्पादकः
पं. रामकिशोरशास्त्री
साहित्याचार्यः, ज्योतिर्विद्
कर्मकाण्डप्रवीणः जयपुरम्,
(राजस्थानम्)

६७१, टिक्कीवालों का रास्ता,
(अन्धेरी दरवाजा), किशनपोल
बाजार, जयपुर चलदूरभाष-
९४१४६०७१४०
दूरभाष-०१४१-२३१११००

महाशक्तियों का प्रादुर्भाव

-पं० मोहनलाल शर्मा पाण्डेय

महाकाली का प्राकट्य

प्रलय समय में समस्त संसार के जलनिमग्न होने पर भगवान् विष्णु शेषशय्या पर योगनिद्रा में शयन कर रहे थे । उस समय भगवान् के कर्णमल से उत्पन्न मधु और कैटभ नामक दो भयानक राक्षस ब्रह्मबीज का वध करने को उद्यत हो गये । भगवान् विष्णु के नाभिकमल में विराजमान प्रजापति ब्रह्माजी ने जब उन दोनों भयानक असुरों को अपने समीप आते हुये और भगवान् जनार्दन को शयन करते हुये देखा तब एकाग्रचित्त होकर ब्रह्मा ने भगवान् विष्णु को जगाने के लिये एकाग्रहृदय से भगवान् के नेत्रकमल में स्थित योगनिद्रा की स्तुति की । -

हे देवि! आप इस समस्त संसार की उत्पत्ति, स्थिति, संहार करने वाली हैं । आप ही महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृति और महामोहस्वरूपा हैं । दारुणरात्रि कालरात्रि महारात्रि एवं मोहरात्रि भी आप ही हैं । आपने भगवान् विष्णु को भी योगनिद्रावश कर दिया है । विष्णु, शङ्कर एवं मुझ ब्रह्मा को आपने ही शरीर धारण करने को बाधित किया है । इस प्रकार आपकी स्तुति कौन कर सकता है ? हे देवि! अपने प्रभाव से इन असुरों को मोहित कर इन्हें मारने के लिये भगवान् को जगाओ । इस प्रकार स्तुति करने पर वह महामाया भगवती भगवान् के नेत्र मुख नासिका बाहु तथा हृदय से निकल कर प्रत्यक्ष खड़ी हो गई ।

तब भगवान् उठे और देखा कि दो भयङ्कर राक्षस ब्रह्मा को खाने के लिये उद्यत हो रहे हैं । ब्रह्मा की रक्षा करने के लिये स्वयं भगवान् उन से युद्ध करने लगे । युद्ध करते हुये भगवान् को पाँच हजार वर्ष व्यतीत हो गये । उस समय महामाया ने उन राक्षसों की मति को मोहित कर दिया । अतः वे अभिमान पूर्वक भगवान् विष्णु को कहने लगे - हम तुम्हारे युद्ध से अत्यन्त सन्तुष्ट हैं । तुम जो चाहो वही वर माँगो । भगवान् ने कहा यदि तुम मुझे वरदान ही देना चाहते हो तो यही वरदान दो कि तुम दोनों मेरे द्वारा मारे जाओ । मधु कैटभ ने कहा 'तथास्तु' और निवेदन किया कि जहाँ पृथ्वी जल से आच्छादित हो वहाँ हमको मत मारना । अन्त में भगवान् ने उनके शिरों को जङ्घाओं पर रखकर चक्र से काट डाला । इस प्रकार भगवती ने देवताओं का कार्य सिद्ध करने के लिये महाकाली का रूप धारण किया ।

महालक्ष्मी का प्रादुर्भाव

एक समय देव दानवों के मध्य सौ वर्षों तक भयङ्कर युद्ध हुआ । देवताओं का राजा इन्द्र था तथा दानवों का महिषासुर । पराक्रमी दानवों द्वारा देवताओं को पराजित कर महिषासुर स्वयं इन्द्र बन बैठा । उस समय सम्पूर्ण देवता ब्रह्मा जी को अग्रेसर कर भगवान् विष्णु एवं शङ्कर के पास गये और उन्हें अपनी विपत्ति का वृत्तान्त सुनाया । देवताओं का आर्तनाद सुनकर भगवान् विष्णु तथा शङ्कर कुपित हो गये । तब उनकी भृकुटी से एक महान् तेजःपुञ्ज प्रकट हुआ । वह तेजःपुञ्ज एकत्रित होकर सम्पूर्ण दिशाओं को देदीप्यमान करता हुआ नारी शरीर के रूप में परिवर्तित हो गया । उसे देखकर सारे देवता प्रसन्न हुये और उसे अपने अपने शस्त्र समर्पित किये । प्रसन्न होकर देवी ने अट्टहास किया उस शब्द से सम्पूर्ण दिशायें गूंज उठी, समुद्र उद्वेलित होने

लगा, पृथिवी काँप उठी, पर्वत हिलने लगे, देवताओं ने जय ध्वनि की, मुनिगण स्तुति करने लगे । उस भयङ्कर गर्जना को सुनकर महिषासुर क्रुद्ध होकर अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित दानव सेना को लेकर वहाँ आया और तेजःपुञ्ज से देदीप्यमान महालक्ष्मी को उसने देखा । तदनन्तर असुरों का उस देवी के साथ भयङ्कर युद्ध हुआ । युद्ध में सम्पूर्ण दानव मृत्यु को प्राप्त हो गये । महिषासुर भी अनेक प्रकार की माया करके थक गया और अन्त में महालक्ष्मी द्वारा मारा गया । देवताओं ने भगवती महालक्ष्मी की विविध प्रकार से स्तुति की । इस प्रकार भगवती महालक्ष्मी के रूप में आविर्भूत हुई ।

महासरस्वती का प्रादुर्भाव

प्राचीन काल में शुम्भ और निशुम्भ ने इन्द्रादि देवताओं के सम्पूर्ण अधिकार अपने हाथ में ले लिये । स्वयं ही यज्ञभोक्ता बन गये । उस समय दुःखी देवताओं ने अपने अधिकार पुनः प्राप्ति करने के लिये हिमालय पर जाकर देवी भगवती की अनेक प्रकार से प्रार्थना की । उस समय वहाँ भगवती पार्वती उनके सामने आई और उसके शरीर से शिवा प्रकट हुई । सरस्वती का प्रादुर्भाव पार्वती के शरीरकोष से हुआ था अतः वे कौषिकी नाम से प्रसिद्ध हुई । कौषिकी के निकल जाने के बाद पार्वती का शरीर काला पड़ गया, इसलिये इसे कालिका कहते हैं । तदनन्तर भगवती कौषिकी परम सुन्दर रूप धारण कर बैठी हुई थी तब उन्हें चण्ड मुण्ड नामक शुम्भ निशुम्भ के दूतों ने देखा । उन्होंने जाकर शुम्भ निशुम्भ को कहा कि हे दानवेन्द्र! हिमालय पर एक अलौकिक परमरमणीय रूपवती सुन्दरी बैठी है । वैसा सुन्दर रूप आज तक किसी ने नहीं देखा । आपके पास ऐरावत हाथी, पारिजात वृक्ष, उच्चैःश्रवा अश्व, ब्रह्मा का विमान, कुबेर का खजाना, वरुण का सुवर्ण छत्र तथा अन्य विविध रत्न विद्यमान हैं, परन्तु ऐसा स्त्रीरत्न

नहीं है । अतः आप उसे ग्रहण कीजिये । दूतों की वाणी सुनकर शुम्भ-निशुम्भ ने सुग्रीव नामक दूत को कहा तुम वहाँ जावों और उस स्त्री को प्रसन्न करके यहाँ ले आवो । उस दूत ने वहाँ जाकर उससे कहा हे देवि! तुम शुम्भ निशुम्भ का आदेश सुनो । सम्पूर्ण ऐश्वर्य सम्पन्न शुम्भ निशुम्भ ने कहा है कि त्रिलोकी के सभी रत्न हमारे पास विद्यमान हैं । तुम्हें हम संसार की सभी स्त्रियों में स्त्रीरत्न मानते हैं । अतः तुम मेरे को अथवा मेरे भाई को वरण कर लो । हम रत्नभोक्ता हैं । प्रसन्न होकर तुम्हें अपने यहाँ बुला रहे हैं । दूत के वाक्य सुनकर देवी भगवती ने कहा, हे दूतों तुमने जो कुछ कहा है वह सब सत्य है, परन्तु क्या करूँ मैंने पहिले से ही एक प्रतिज्ञा कर रखी है कि जो मुझे संग्राम में जीत कर मेरे दर्प को चूर्ण करेगा वही मेरा पति होगा । उसके कथन को उसी प्रकार से दूतों ने जाकर शुम्भ निशुम्भ को कह दिया । उसे सुनकर क्रुद्ध होकर दानवेन्द्र ने अपने सेनापति धूम्रलोचन को उससे युद्ध करने हेतु भेजा परन्तु एक हुंकार मात्र से भगवती ने उसका विनाश कर दिया । तदनन्तर शुम्भ द्वारा प्रेषित चण्डमुण्ड को भी सेना सहित भगवती ने मार डाला । तब भगवती ने घण्टाध्वनि की जिससे सम्पूर्ण दिशायें गूँज उठी उसी समय ब्रह्मा विष्णु महेश व कार्तिकेय तथा इन्द्रादि की शक्तियाँ निकलकर चण्डिका के पास आई । उन शक्तियों के मध्य में स्वयं महादेव जी आये । उस समय देवी के शरीर से भीषण चण्डिका शक्ति प्रकट हुई । उसने शिवजी से कहा कि आप दूत बनकर दानवों के पास जाओ । और उनसे कहो कि यदि जीवित रहना चाहते हो तो त्रैलौक्य का राज्य इन्द्र को समर्पित कर पाताल लोक चले जावो । अत एव उसे शिवदूती भी कहा जाता है । असुरों ने क्रुद्ध होकर आक्रमण कर दिया और भयङ्कर युद्ध हुआ । शक्तियों द्वारा आहत होकर दानव मृत्यु को प्राप्त होने लगे तब क्रुद्ध होकर रक्तबीज युद्ध में आया

उसके शरीर की रक्त बिन्दुओं से सहस्त्रों राक्षस उत्पन्न हो गये तब चण्डिका ने काली से कहा तुम अपना मुख फैलाकर इसका रक्तपान करो तब क्षीणरक्त होकर यह मारा जायगा । उसके रक्त को काली पीती गई और अन्त में वह मारा गया । तब सम्पूर्ण सेना के साथ शुम्भ निशुम्भ ने भगवती से भयङ्कर युद्ध किया और भगवती के द्वारा वे दोनों मारे गये । देवगणों ने हर्षित होकर जयध्वनि की तथा महासरस्वती की स्तुती की ।

दुर्गादेवी का आविर्भाव

प्राचीन काल में दुर्ग नामक एक महाबलशाली असुर उत्पन्न हुआ था उसने ब्रह्मा से अद्भुत वरदान प्राप्त किया । उसने चारों वेदों को विश्व से लुप्त कर दिया । महाबलशाली होने से सब का अपमान करने लगा । उसके अत्याचारों से सभी त्रस्त हो गये । वेदों के लुप्त हो जाने से धार्मिक क्रियायें तथा यज्ञ हवनादि कर्म नष्ट हो गये । संसार में अकाल पड़ गया । भोजन और पानी के अभाव से लोग अचेतन होने लगे । सर्वत्र त्राहि त्राहि मच गई । तब देवता भगवती की शरण में गये और प्रार्थना करने लगे कि इस दुर्गम असुर से हमारी रक्षा कीजिये ।

देवताओं की करुण पुकार सुन कर देवी प्रकट हुई तथा उनकी आखों से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी । उस अश्रुधारा से सर्वत्र नदी नदों में पर्याप्त जल प्रवाहित होने लगा जिससे सभी प्राणियों की रक्षा हुई । उस समय देवताओं ने भगवती से कहा हे माँ! जिस प्रकार अन्न जल प्रदान कर प्राणियों की रक्षा की उसी प्रकार इस दुर्गम असुर से हमारी रक्षा कीजिये । उसने वेदों का अपहरण कर लिया है, जिससे समस्त धार्मिक क्रियायें लुप्त हो गई हैं ।

दुर्गमासुर यह जानकर अत्यन्त विस्मित हुआ कि सभी प्राणियों के लिए अन्न जल आदि को उत्पन्न कर किसने रक्षा की है ?

मैंने तीनों लोकों को त्रस्त कर दिया था । वस्तुस्थिति से अवगत होते ही दुर्गमासुर ने अपनी आसुरी सेना के साथ देवलोक को घेर लिया । उस समय देवताओं की तथा विश्व की रक्षा करने के लिये देवलोक के चारों और अपने तेजोमण्डल की चारदिवारी खड़ी कर दी और स्वयं बाहर आकर खड़ी हो गई । देवी को देखते ही दैत्यों ने उस पर आक्रमण कर दिया । उस समय देवी के दिव्य शरीर से काली, तारा, छिन्नमस्ता, श्रीविद्या, भुवनेश्वरी, भैरवी, बगलामुखी धूम्राक्षी, त्रिपुरसुन्दरी और मातङ्गी ये दश महाविद्यायें अस्त्रशस्त्र लेकर प्रकट हुई । साथ ही असंख्य मातृकायें भी प्रकट हुई । इन शक्तियों ने देखते देखते ही दुर्गमासुर की सेना का वध कर वेदों का उद्धार किया । दुर्गमासुर का वध करने से उसका नाम दुर्गा प्रसिद्ध हुआ । शताक्षी एवं शाकम्भरी भी इसी के नाम हैं ।

सिद्धि की कामना से पुरुष इनकी सेवा करते हैं । उनके अङ्गों की शोभा काले मेघ के समान श्याम है । वे अपने कटाक्षों से शत्रुओं को भयभीत करती हैं । उनके मस्तकर चन्द्रकला सुशोभित है । वे अपने हाथों में शङ्ख चक्र कृपाण और त्रिशूल धारण करती हैं । उनके तीन नेत्र हैं । वह सिंह के कन्धे पर आरूढ है और अपने तेज से तीनों लोकों को परिपूर्ण कर रही है ।

यज्ञ यागादिक में एवं सम्पूर्ण मांगलिक कार्यो में षोडशमातृका सप्तमातृका एवं चौसठयोगिनी के रूप में आपकी विधिपूर्वक पूजा की जाती है ।

म०नं० २३८१ पाण्डेय भवन
खजाने वालों का रास्ता,
चाँदपोल बाजार, जयपुर,
(राजस्थान)
दूरभाष : ०१४१-२३२११५१

म०म० राष्ट्रपतिसम्मानित:
वाचस्पतिपुरस्कारसभाजित:
श्रीवाणी-अलङ्करण-विभूषित:
पं. मोहनलालशर्मा पाण्डेयः
जयपुरम्, (राजस्थानम्)

भगवती महालक्ष्मी की महिमा

- पं० प्यारेमोहन

भगवती महालक्ष्मी भगवान् विष्णु की अभिन्न शक्ति है जिस प्रकार सूर्य की प्रभा, अग्नि की दाहिका एवं चन्द्रमा चन्द्रिका नित्य सहचरी है उसी प्रकार भगवती महालक्ष्मी विष्णु की अभिन्न सहचरी शक्ति है। इन्हें पद्मवासिनी, एवं भार्गवी नाम से भी जाना जाता है। पद्मा, पद्मालया, श्री, कमला, हरिप्रिया, इन्दिरा, रमा, समुद्रतनया, जलधिजा इनके अनेक नाम हैं। इनके शतनाम, सहस्रनाम के उपलब्ध होते हैं। यह वैष्णवी शक्ति है। जब जब भगवान् अवतरित होते हैं तब तब वे लक्ष्मी सीता राधा आदि रूपों उनके साथ अवतरित होती हैं। भगवान् विष्णु की सहचरी की उपासन्रा वस्तुतः जगदाधारशक्ति की ही उपासना है। कृपा से ही ऐश्वर्य एवं समृद्धि प्राप्त होती है। इस आदिशक्ति उपासना आगम निगम सभी में प्रचलित है। इनकी गणना ग्रन्थों में दशमहाविद्याओं के अन्तर्गत की गई है।

पुराणों के अनुसार जब इन्द्र ने महर्षि दुर्वासा द्वारा शुभाशीर्वादस्वरूप माला का अपमान किया तब दुर्वासा के शाप इन्द्र की राज्यलक्ष्मी समुद्र में प्रविष्ट हो गई। देवताओं की प्रा से प्रसन्न होकर वे पुनः प्रकट हुई तब सभी देवताओं एवं ने उनका मन्त्रोच्चारणपूर्वक अभिषेक किया। उस समय के प्रसन्न होकर अवलोकन मात्र से सम्पूर्ण विश्व समृद्धिमान् गया। तथा सर्वत्र सुख शान्ति व्याप्त हो गई। यह देखकर ने भी उनकी दिव्य स्तुति की -

त्वया विलोकिताः सद्यः शीलाद्यैरखिलैर्गुणैः ।
कुलैश्वर्यैश्च युज्यन्ते पुरुषा निर्गुणा अपि ।।

(विष्णु पु० २/९/१३०)

प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद के पञ्चम आत्रेय मण्डल का खिलसूक्त (श्रीसूक्त) भगवती लक्ष्मी से ही सम्बद्ध है । विष्णुपत्नी के रूप में सभी पुराणों ने वर्णित किया है । इनका सुवर्ण जैसा वर्ण है । ये अनिन्द्य सौन्दर्य से सम्पन्न हैं । अनेक दिव्य स्वर्णाभूषणों से विभूषित कमल के आसन पर स्थित हो ये भक्तों की समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करती हैं । इनकी उपासना अत्यन्त श्रेयस्करी है । ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार सृष्टि के प्रथम रासमण्डल में स्थित भगवान् श्रीकृष्ण के मन से एक गौरवर्णा देवी प्रकट हुई, जो रत्नमय अनेक अलंकारों से अलंकृत थी । सम्पूर्ण सम्पत्तियों को प्रदान करने वाली वे ही स्वर्गलक्ष्मी तथा मृत्युलोक में राजाओं के यहाँ राजलक्ष्मी कहलाती हैं ।

इसी पुराण में समुद्रमन्थनोपरान्त सिन्धुसुता के रूप में भगवती लक्ष्मी का आविर्भाव वर्णित है । समुद्र से निकल कर इसने भगवान् विष्णु का वरण किया । समुद्र से उत्पन्न होकर भगवान् विष्णु के वरण करने की यह कथा प्रायः सर्वसम्मत मानी गई है । विष्णु के वक्षःस्थल में ये निवास करती हैं । अत एव भगवान् विष्णु एवं लक्ष्मी का अभिन्न सम्बन्ध है । जगत्-पिता भगवान् विष्णु जिस प्रकार सर्वव्यापक हैं उसी प्रकार उनकी दिव्यशक्ति लक्ष्मी भी सर्वत्र व्याप्त हैं ।

ये महालक्ष्मी आद्या शक्ति त्रिगुणमयी और परमेश्वरी हैं । ये अपने व्यक्त अव्यक्त दोनों रूपों से सम्पूर्ण विश्व को व्याप्त कर स्थित हैं । स्त्रीरूप में हम संसार में जो कुछ देखते हैं वह सब लक्ष्मी का ही स्वरूप है । जिस स्थान पर भगवान् श्रीहरि की चर्चा होती है और उनके गुणों का कीर्तन होता है वहीं पर सम्पूर्ण मङ्गलों को भी मङ्गल प्रदान करने वाली भगवती लक्ष्मी सदैव

निवास करती है । जहाँ भगवान् श्रीकृष्ण एवम् उनके भक्तों का यश गाया जाता है वहाँ उनकी प्राणप्रिया लक्ष्मी सदा विद्यमान रहती है । शङ्ख तुलसी शालिग्राम की जहाँ अर्चना होती है वहाँ भी लक्ष्मी सदा स्थिर रहती है । इसी प्रकार जहाँ शिवलिङ्ग की दुर्गा की एवं ब्राह्मणों की अर्चना की जाती है तथा देवताओं की अर्चना की जाती है वहाँ भी लक्ष्मी सदा निवास करती है।

आमलकफल, गोमय, शङ्ख, शुक्ल वस्त्र, श्वेत एवं रक्तकमल, चन्द्र, महेश्वर, नारायण और उत्सवमन्दिर आदि स्थानों पर लक्ष्मी नित्य ही स्थित रहती है ।

लक्ष्मी की उपासना अत्यन्त प्राचीन है । भाद्रपद मास की शुक्लाष्टमी से लेकर आश्विनकृष्ण अष्टमी पर्यन्त लक्ष्मी व्रत का विधान है । इस व्रत के करने से ऐश्वर्य सौभाग्य धन पुत्रादि की प्राप्ति होती है । लोक परम्परानुसार आश्विन पूर्णिमा (शरदपूर्णिमा) और कार्तिक की अमावस्या (दीपावली) को लक्ष्मी का पूजन किया जाता है । दीपमालिकोत्सव से भी इनका सम्बन्ध माना जाता है । भगवती लक्ष्मी की उपासना के अनेक प्रकार 'शाक्त प्रमोद' में श्री कमलात्मिका प्रकरण में विस्तार से वर्णित हैं । सौभाग्यलक्ष्मी उपनिषद् में भी लक्ष्मी की उपासना की सम्पूर्ण विधि प्रतिपादित है ।

भगवती लक्ष्मी की आराधना से धर्म अर्थ काम मोक्ष रूप पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति एवम् अनेक प्रकार के अभीष्टों की सिद्धि सहजरूप में प्राप्त होती है ।

म०नं० २०१८, व्यासभवन,
दीनानाथजी का रास्ता,
चाँदपोल बाजार,
जयपुर (राजस्थान)
दूरभाष : ०१४१-२३२२६९४

पं० प्यारेमोहन शर्मा
पूर्व प्राचार्य एवं निदेशक
राजस्थान संस्कृत अकादमी
सम्पादक - संस्कृत मासिक
पत्रिका-भारती

ब्रह्मस्वरूपिणी भगवती सरस्वती

- प्रो० (डॉ०) ताराशङ्कर शर्मा पाण्डेय

भगवती वाग्देवता सरस्वती समस्त ज्ञान, विज्ञान, विद्या, कला, बुद्धि, मेधा, धारणा, तर्कशक्ति एवं प्रत्यभिज्ञा की प्रतिनिधि स्वरूपा वाणी की अधिष्ठात्री शक्ति है । यद्यपि सभी देवता विशेष ज्ञान एवं योगैश्वर्यसिद्धियों से सम्पन्न होते हैं तथापि 'शब्दब्रह्म' शब्द से व्यपदिष्ट ज्ञानात्मिका शक्ति भगवती शारदा साक्षात् ब्रह्मस्वरूपिणी ही है और ये महालक्ष्मी तथा महाशक्त्यात्मिका महामाया, महाकाली आदि से भिन्न नहीं है । इसीलिये शास्त्रों में इनका मुख्य नाम 'श्री' और अपर नाम है श्रीपञ्चमी । वसन्तपञ्चमी को इनका प्रादुर्भाव-दिवस माना जाता है । इस दिन इनकी विशेष पूजा, अर्चा, उपासना, हवन आदि के द्वारा इनके सांनिध्य-प्राप्ति की साधना की जाती है । आचार्य व्याडि ने अपने प्रसिद्ध कोष में 'श्री' शब्द लक्ष्मी, सरस्वती, बुद्धि, ऐश्वर्य, धर्मादि पुरुषार्थों, अणिमादि सिद्धियों, सौन्दर्य तथा माङ्गलिक उपकरणों एवं वेशरचना अर्थों में प्रयुक्त किया है । अन्य कोषों में इन्हें भारती, ब्राह्मी, गीर्देवी, वाग्देवी, वाणी, भाषा सरस्वती त्रयीमूर्ति आदि नामों से अभिहित किया गया है ।

सम्पूर्ण संसार का दैनन्दिन कार्य-व्यापार वाणी के व्यवहार पर ही आधृत है । विश्व की विभिन्न भाषाओं, पशु पक्षियों की वाणी, साङ्केतिक लिपि-पद्धति तथा सङ्केत-चिह्नों में भी मूलतः भगवती सरस्वती की ही चमत्कृत-शक्ति संनिहित है । अतः समस्त विश्व में अनादिकाल से ही अनेक नाम-रूपों से भगवती सरस्वती की उपासना पद्धतियाँ प्रचलित रही हैं ।

इसके अतिरिक्त आन्वीक्षिकी-विद्या, विश्वव्यापार-सञ्चालिका वार्ता - विद्या और समस्त लोकों की प्रशासिका दण्डनीति-विद्या तथा अन्य भी ज्योतिष, कर्मकाण्डादि दिव्यज्ञानमयी विद्यायें भगवती सरस्वती के ही स्वरूप कहे गये हैं । शब्दजात द्वारा निर्मित स्वर-पाठसहित त्रयीविद्या के रूप में भगवती सरस्वती ब्रह्मा के मुख से विवर्तित हुई है । भगवती शारदा का मूलस्थान शशाङ्कसदन अर्थात् अमृतमय प्रकाशपुञ्ज है, जहाँ से वे निरन्तर अपने उपासकों के लिये पचास अक्षरों के रूप में ज्ञानामृत की धारा प्रवाहित करती है । उनका विग्रह शुद्ध ज्ञानमय, आनन्दमय है और इसीलिये उनके उपासकों के हृदय में ज्ञानयुक्त शान्ति अक्षुण्ण बनी रहती है ।

जिन भगवती का मुख पूर्णिमा के चन्द्र-सदृश गौर है, और जिनकी अङ्गकान्ति कर्पूर और कुन्द-पुष्प के समान है, जिनका शिर अर्धचन्द्र से अलङ्कृत है, जो अपने हाथों में वीणा, अक्षमाला, अमृतपूर्ण कलश और पुस्तक धारण करती है तथा तुङ्गस्तनों वाली है, जिनका शरीर दिव्य आभूषणों से विभूषित है और जो हंस पर आरूढ़ है, उन सरस्वती देवी का मैं आदरपूर्वक ध्यान करता हूँ ।

ध्यानम्

वाणीं पूर्णनिशाकरोज्ज्वलमुखीं कर्पूरकुन्दप्रभां
चन्द्रार्धाङ्कितमस्तकां निजकरैः सम्बिभ्रतीमादरात् ।
वीणामक्षगुणं सुधाढ्यकलशं विद्याञ्च तुङ्गस्तनीं
दिव्यैराभरणैर्विभूषिततनुं हंसाधिरूढां भजे ।।

ज्ञप्तिरूपा भगवती सरस्वती अपने उपासकों को प्राग्जन्मान्तरीय तथा भविष्य का ज्ञान कराती रहती है, उनका अपने भक्तों पर अपार अनुग्रह रहता है । उनके विशेष अनुग्रह का एक उदाहरण निम्नलिखित है ।

पुराणों में सत्यव्रत नाम के ऋषि के मुख से जो सर्वथा

गूँगे थे, केवल 'ऐं-ऐं' सहसा उच्चारित हो जाने के कारण उन्हें समस्त शास्त्रों का सहसा ज्ञान हो गया और आध्यात्मिक दिव्य ज्ञान के द्वारा आत्मदर्शन भी प्राप्त हो गया। स्वाभाविक जिज्ञासा सूचक 'ऐं' पद ही भगवती सरस्वती का बीजमन्त्र वाग्बीज के नाम से विख्यात है।

वाग्देवी भगवती सरस्वती की उपासना विधि शास्त्रों में वर्णित है। वेदों तथा आगम-ग्रन्थों में सरस्वती की उपासना से सम्बन्धित अनेक मन्त्र, यन्त्र, स्तोत्र, पटल एवं पद्धतियाँ प्राप्त होती हैं। उनके सरस्वती-रहस्योपनिषद्, प्रपञ्चसार, शारदातिलक आदि ग्रन्थ विशेष महत्त्व के हैं। चरित्र-ग्रन्थों में योगवाशिष्ठ,. देवीभागवत, ब्रह्मवैवर्तपुराण, बृहद्-धर्मपुराण आदि उल्लेख्य हैं। महर्षि वाल्मीकि, व्यास, वशिष्ठ, विश्वामित्र, शौनक आदि ऋषियों ने इनकी उपासना कर कृतार्थता प्राप्त की है। भगवती सरस्वती ने महर्षि विश्वामित्र पर कृपाकर उन्हें शास्त्रों के ज्ञान के साथ साथ गायत्री-मन्त्र का ऋषित्व प्राप्त कराया। महर्षि वाल्मीकि पर अनुग्रह कर उन्हें रामायण रचना करने की शक्ति प्रदान की। महर्षि व्यास को अष्टादश-पुराण तथा महाभारत आदि के निर्माण करने की शक्ति प्रदान करने की कथा बृहद्-धर्म पुराण में स्पष्टरूप से प्राप्त होती है। महर्षि व्यास की स्वल्प आराधना से प्रकट होकर उनसे कहती है कि हे व्यास! तुम मेरी प्रेरणा से रचित वाल्मीकि के रामायण को पढ़ो, वह मेरी शक्ति के कारण समस्त काव्यों का सनातन बीज बन गया है।

आगमों में इनके कई मन्त्र निर्दिष्ट हैं। जिनमें दस अक्षरों का यह मन्त्र है- **'ऐं' वाग्वादिनि! वद वद स्वाहा**। इस मन्त्र में लगाया गया 'ऐं' भगवती सरस्वती का बीज-मन्त्र है। यह दशाक्षर मन्त्र सर्वसिद्धिप्रद तथा विशेषकर सर्वविद्या प्रदायक कहा गया है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में सरस्वती का एक मन्त्र इस प्रकार निर्दिष्ट किया गया है -

'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सरस्वत्यै बुधजनन्यै स्वाहा'

सरस्वती के उपासकों के लिये आगमों में कुछ विशेष नियम भी निर्दिष्ट हैं जैसे -

वेद, पुराण, रामायण, गीता आदि सद्ग्रन्थों का आदर करना चाहिये और उन्हें देवी का स्वरूप मानते हुए पवित्र स्थान पर रखना चाहिये, अपवित्र स्थान पर नहीं रखना चाहिये । अपवित्र अवस्था में स्पर्श नहीं करना चाहिये तथा पृथ्वी पर अनादर से नहीं फेंकना चाहिये, ऊँचे काष्ठफलक आदि पर ही रखना चाहिये । यथासम्भव शुद्धबुद्धि से ब्रह्मचर्यपूर्वक रहना चाहिये एवं सात्त्विक आहार का प्रयोग करना चाहिये । ब्राह्मी एवं वच ओषधियों का यथासम्भव प्रयोग करना चाहिये तथा नियमतः प्रातः काल उठकर सरस्वती का ध्यान करना चाहिये । निषिद्ध तिथियों तथा ग्रहण आदि के समय वेदादि सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय नहीं करना चाहिये । यथासम्भव भगवती शारदा की श्वेत पुष्प, श्वेतचन्दन, श्वेतवस्त्रालङ्कारों से पूजा करना चाहिये क्योंकि कहा गया है कि 'सर्वशुक्ला सरस्वती' । एवं व्रत-अनुष्ठान आदि में स्वयं भी श्वेतचन्दन-वस्त्रमाल्य आदि धारण करना चाहिये ।

कहा भी गया है - **'देवो भूत्वा देवं यजेत्'**

भगवती सरस्वती उपासक की एक बार की स्वल्प उपासना से भी उसकी अत्यन्त सुपरिचिता हो जाती है और अपनी माता की तरह सदा उसकी रक्षा करती है तथा ज्ञान प्रदान कर उसे अपना कर मोक्ष प्रदान करती है । अतः कल्याणकामी को शारदाम्बा की उपासना अवश्य करनी चाहिये ।

डॉ० ताराशङ्कर शर्मा पाण्डेयः
प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष –साहित्यविभाग
ज०रा० राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय
जयपुर, (राजस्थान)

म०नं० २३८१ पाण्डेय भवन
खजाने वालों का रास्ता,
चाँदपोलबाजार, जयपुर,
चलदूरभाष : ९८२९२७१३५१
दूरभाष : ०१४१-२३२११५१

पराशक्ति भगवती श्रीदुर्गा

- पं० राधामोहन शर्मा

अनन्तकोटि ब्रह्माण्डात्मक प्रपञ्च की अधिष्ठानभूता सच्चिदानन्दरूपा महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपा भगवती श्रीदुर्गा ही समस्त संसार को विद्यमानता स्फुरणता तथा सरसता प्रदान करती है। सम्पूर्णसृष्टि उन्हीं से जन्म ग्रहण करती है तथा प्रलयकाल में उन्हीं में समा जाती है।

अखण्ड, नित्य, निर्विकार, महाचिति के अस्तित्व में ही प्रमाता, प्रमाण, प्रमेयादि समस्तलोक प्राप्त होते हैं। जब जब धर्म का ह्रास होता है तब तब अचिन्त्य, अव्यक्त, स्वप्रकाश, सच्चिदानन्दस्वरूपा भगवती श्रीदुर्गा मायाशक्ति का आश्रय लेकर अनेक रूपों में प्रादुर्भूत होती है।

कितने ही भक्त परमात्मरूपा पराशक्ति भगवती श्रीदुर्गादेवी को निर्गुण, निराकार, अचिन्त्य कहते हैं तथा कितने ही सगुण, साकार, संस्तुत्य कहते हैं। ये दोनों ही प्रकार उचित प्रतीत होते हैं, क्योंकि जब वह महाशक्तियों में लीन रहती है तब निर्गुण, निराकार स्वरूपा कही जाती है और जब यह मायाशक्ति क्रियाशीला, प्राणिमात्र के अवयवों में विद्यमान होकर सक्रिय होती है तब उसे सगुणा साकारा कहा जाता है। आप में निर्गुण और सगुण दोनों ही लक्षण समय समय में अवस्थित रहते हैं। जो भक्त जिस भाव से उन्हें भावविभोर होकर देखता है उस भक्त को उसी रूप में उनका प्रत्यक्षीकरण होता है।

महामाया श्रीदुर्गा की निरुपम शक्ति से ब्रह्मा सृष्टि का सर्जन करता है, विष्णु विश्व का पालन पोषण करता है और महेश्वर प्रलय काल में सृष्टि का संहार करता है । दया, क्षमा, निद्रा, स्मृति, क्षुधा, तृष्णा, तुष्टि, पुष्टि, श्रद्धा, धृति, भक्ति, मति, शान्ति, कान्ति, लज्जा, वृत्ति, तृष्णा आदि शक्तियाँ आपकी ही शक्ति से प्रेरित होकर संसार का कल्याण करती हैं । समस्त विद्यायें तथा स्त्रियाँ आप ही का स्वरूप हैं । परा और अपरा दोनों ही प्रकृतियाँ आप से ही प्रकाशित होती हैं । उनमें ही द्वैत-अद्वैत, द्वैताद्वैत का समावेश माना गया है । आप ही वैष्णवों की श्रीनारायणी महालक्ष्मी श्रीराम की सीता, तथा राधाकृष्ण के रूप में पूजी जाती हैं । शैव भक्तों की आराध्या शिवाशक्ति, गाणपत्यों की श्रीगणेश ऋद्धि-सिद्धि सौर सम्प्रदाय के भक्तों की श्री सूर्य और ऊषा, ब्रह्मवादियों की शुद्धब्रह्म और ब्रह्मविद्या के रूप में आराध्या हैं । ये ही दश महाविद्या, अन्नपूर्णा, जगद्धात्री, कात्यायनी, ललिताम्बा के स्वरूप में पूजी जाती हैं ।

यद्यपि श्रीभगवती नित्य ही है, सम्पूर्ण चराचरजगत् उन्हीं से व्याप्त है तथापि देवताओं के कार्य के लिये वे समय समय पर अनेक रूपों में अवतरित होती हैं । तब वे नित्य होने पर भी भगवती उत्पन्न हो गई, इस प्रकार कहा जाता है -

नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम् ।
तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम ।।
देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा ।
उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते ।।

(दुर्गासप्तशती १-६४-६६)

श्री भगवती दुर्गा ही भूमिस्वरूपा होने से सम्पूर्ण जगत् की आधारभूता है । आप ही जलस्वरूप होने से सम्पूर्ण संसार को

अन्न वृक्ष फल औषधियाँ शाक धान्य आदि से जीवन प्रदान करती हैं । आप ही वैष्णवी शक्ति हैं, अनन्तपराक्रम से युक्त आप ही समय समय पर अनेक रूपों में अवतीर्ण होकर मधुकैटभ, चण्डमुण्ड, महिषासुर, रक्तबीज, शुम्भ-निशुम्भ आदि दैत्यों का उनकी सेना सहित संहार कर देवताओं तथा भक्तों की रक्षा करती हैं तथा विश्व का कल्याण करती हैं ।

मार्कण्डेय आदि अनेक ऋषियों ने आपका प्रत्यक्ष दर्शन कर अपने जीवन को सफल बनाया है ।

म०नं० २०१८, व्यासभवन,
दीनानाथजी का रास्ता,
चाँदपोल बाजार,
जयपुर (राजस्थान)
दूरभाष : ०१४१-२३२१७२४

पं० राधामोहन शर्मा
पूर्व व्याख्याता साहित्य
संस्कृत शिक्षा विभाग
जयपुर, (राजस्थान)

नवरात्र व्रतविधान

- डॉ० राजेन्द्र कुमार तिवाडी

शरद्-ऋतु तथा वसन्त ऋतु के नवरात्र में भगवती दुर्गा का नौ दिन पर्यन्त व्रत करें। ये दोनों ही ऋतुएँ संसार में प्राणियों के लिये दुर्गम तथा बड़ी कष्टदायक हैं और मनुष्यों के लिये रोग उत्पन्न करने वाली हैं। अतः रोगों का विनाश करने के लिये बुद्धिमान् लोगों को चैत्र तथा आश्विनमास में भक्तिपूर्वक चण्डिकादेवी का पूजन करना चाहिये। अमावास्या आने पर व्रत की सभी सामग्री एकत्रित कर लें और उस दिन एकभुक्त व्रत करें और हविष्य ग्रहण करें। प्रतिपदा के दिन प्रातः काल नित्यनैमित्तिक कार्यों से निवृत्त होकर वेदी अथवा पाटे पर भगवती दुर्गा देवी को प्रतिष्ठित करें। प्रतिमा के अभाव में नवार्ण मन्त्र युक्त यन्त्र की स्थापना कर षोडशोपचार अथवा राजोपचार से प्रातः मध्याह्न तथा सायं विधिवत् वैदिकमन्त्रों से अथवा पौराणिक श्लोकों से पूजन कर रात्रि में गायन वादन तथा नृत्य कर जागरण करना चाहिये। प्रतिदिन दुर्गासप्तशती का कामना भेद से सम्पुटित मन्त्रों द्वारा पाठ करना चाहिये।

प्रतिदिन एक एक संख्या की वृद्धिकर अथवा नौ कन्याओं का प्रतिदिन पूजन कर उन्हें भोजन कराना चाहिये। कुमारियों में एक वर्ष की कन्या वर्जित है। दो वर्ष की आयु से दश वर्ष तक की आयु की कन्यायें श्रेष्ठ मानी गई हैं। कन्याओं के नाम निम्न प्रकार से देवी भागवत में वर्णित हैं -

१. **कुमारी** - (दो वर्ष की अवस्था)

कुमारस्य च तत्त्वानि या सृजत्यपि लीलया ।
कादीनपि च देवांस्तां कुमारीं पूजयाम्यहम् ।।

२. **त्रिमूर्ति** - (तीन वर्ष की अवस्था)

सत्त्वादिभिस्त्रिमूर्तिर्या तैर्हि नाना स्वरूपिणी ।
त्रिकालव्यापिनी शक्तिस्त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ।।

३. **कल्याणी** - (चार वर्ष की अवस्था)

कल्याणकारिणी नित्यं भक्तानां पूजितानिशम् ।
पूजयामि च तां भक्त्या कल्याणीं सर्वकामदाम् ।।

४. **रोहिणी** - (पांच वर्ष की अवस्था)

रोहयन्ती च बीजानि प्राग्जन्मसंचितानि वै ।
या देवी सर्वभूतानां रोहिणीं पूजयाम्यहम् ।।

५. **कालिका** - (छः वर्ष की अवस्था)

काली कालयते सर्वं ब्रह्माण्डं सचराचरम् ।
कल्पान्तसमये या तां कालिकां पूजयाम्यहम् ।।

६. **चण्डिका** - (सात वर्ष की अवस्था)

चण्डिकां चण्डरूपां च चण्डमुण्डविनाशिनीम् ।
तां चण्डपापहारिणीं चण्डिकां पूजयाम्यहम् ।।

७. **शाम्भवी** - (आठ वर्ष की अवस्था)

अकारणात् समुत्पत्तिर्यन्मयैः परिकीर्तिता ।
यस्यास्तां सुखदां देवीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम् ।।

८. **दुर्गा** - (नव वर्ष की अवस्था)

दुर्गात्त्रायति भक्तं या सदा दुर्गार्त्तिनाशिनी ।
दुर्ज्ञेया सर्वदेवानां तां दुर्गां पूंजयाम्यहम् ।।

९. **सुभद्रा** - (दश वर्ष की अवस्था)

सुभद्राणि च भक्तानां कुरुते पूजिता सदा ।
अभद्रनाशिनीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ।।

समस्तकार्यों की सिद्धि के लिये ब्राह्मण कन्यायें, विजय प्राप्ति के लिये क्षत्रियकन्यायें, धनलाभ के लिये वैश्यवंश में उत्पन्न अथवा शूद्रवंश में उत्पन्न कन्यायें पूजने योग्य मानी गई हैं । यदि कोई व्यक्ति नवरात्र पर्यन्त प्रतिदिन पूजा करने में असमर्थ है तो उसे अष्टमी और नवमी तिथि को विशेष रूप से वस्त्र, भूषण, माला, गन्धादि श्रेष्ठ उपचारों से उपरि लिखित मन्त्रों द्वारा कन्याओं का पूजन करना चाहिये ।

प्राचीन काल में दक्ष के यज्ञ का विध्वंस करने वाली महा भयानक भगवती भद्रकाली योगिनियों सहित अष्टमी तिथि को प्रकट हुई थी । नवमी तिथि भी सिद्धिदात्री कही गई है । अत: उस दिन भी विविध प्रकार के उपहारों, गन्ध, माला, चन्दन का अनुलेप, पायस आदि के द्वारा हवन, ब्राह्मण भोजन, कन्याभोजन द्वारा भगवती को प्रसन्न करना चाहिये ।

पूरे नवरात्र भर उपवास करने में असमर्थ लोगों के लिये तीन दिन का (सप्तमी, अष्टमी नवमी) उपवास समस्त फल प्रदान करने वाला है । इस पृथ्वीलोक में जितने भी प्रकार के जप एवं दान हैं वे इस नवरात्र व्रत के तुल्य नहीं हैं, क्योंकि यह व्रत सदा धनधान्य प्रदाता, सुख तथा सन्तान की वृद्धि करने वाला, आयु एवम् आरोग्य प्रदाता और स्वर्ग तथा मोक्ष देने वाला कहा गया है ।

ए-३, हीदा की मोरी,
सूरजपोल बाजार, जयपुर
चलभाष-९४१४०६४८५९

डॉ. राजेन्द्रकुमार तिवाडी
कार्यालय-सचिव
राजस्थान संस्कृत अकादमी,
जयपुर (राजस्थान)

दुर्गा सप्तशती - सारगर्भित मीमांसा

- पं० राकेश शर्मा ज्योतिषी

चैत्र और आश्विन के नवरात्रों में प्रत्येक सद्गृहस्थ आत्मकल्याण के लिए संक्षिप्त किंवा बृहद् रूप में भगवती दुर्गा की पूजा-अर्चना में निरत देखे जाते हैं। इस अवसर पर भगवती की प्रसन्नता के लिए विशेष रूप से दुर्गासप्तशती का पाठ किया जाता है या स्वयं असमर्थ होने पर किसी योग्य ब्राह्मण द्वारा पाठ कराये जाने का भी वही लाभ है। इस तरह यह अनेक संकटों और विघ्न-बाधाओं से मुक्ति दिलाने का अमोघ अस्त्र है। यहाँ एक उल्लेखनीय तथ्य यह भी है कि अन्य पौराणिक स्तोत्रों की अपेक्षा इसका अपना स्वतन्त्र अस्तित्व और महत्त्व है। मार्कण्डेय पुराण के अन्तर्गत होते हुए भी वेदों के समान इसे अनादि और अपौरुषेय माना गया है। ईश्वरीय प्रेरणा से जिस प्रकार समाधि की दशा में ऋषियों के हृदय में वैदिक मन्त्रों का अवतरण हुआ है उसी प्रकार महर्षि व्यास को इस मन्त्रात्मक स्तोत्र की उपलब्धि हुई है उनके द्वारा इस का आविर्भाव होने से ही इसे व्यासरचित कहा गया है।

दुर्गा की उपासना का विधान -

तन्त्रशास्त्र में ब्रह्म तथा माया की एकरूपता मानी जाती है। इसलिए प्रणव या ॐकार ब्रह्मबोधक होने पर भी माया का भी वाचक होता है। इसी प्रकार मायाबीज जो 'ह्रीं' कार से संकेतित है ब्रह्म तथा माया दोनों का बोधक है। जैसा कि ब्रह्माण्डपुराण के 'ह्रींकार

उभयात्मक:।' इस लेख से स्पष्ट है आचार्य शंकर ने भी 'प्रपंचसार' में- **'तदा तां तारमित्याहुरोमात्मेति बहुश्रुताः । तामेव शक्तिं ब्रुवते ह्रीमात्मेति चापरे ।'** यह प्रमाण वाक्य उद्धृत किया है । निष्कर्ष यह है कि प्रणव या मायाबीज की अपनी विशिष्ट स्थिति होने से इन दोनों का व्यापक अर्थ मायायुक्त ब्रह्म होता है । **वेदान्त दर्शन** में इसको ही माया शबल ब्रह्म कहा जाता है । तन्त्र की परिभाषा में 'बिन्दु' पद से मायायुक्त ब्रह्म का ग्रहण किया गया है । अतएव 'शारदा तिलक' में - **'आसीच्छक्तिस्ततो नादो नादाद् बिन्दुसमुद्भवः ।'** यह निर्देश मिलता है । तात्पर्य यह है कि प्रणवोत्पत्ति के प्रकरण में शिव को इसका अधिष्ठातृ देवता बताया गया है । **'गोपथ ब्राह्मण'** में शिव का ही रुद्र के नाम से उल्लेख किया गया है । आचार्य शंकर ने भुवनेश्वरी की स्तुति में **'नमस्ते समस्तेशि बिन्दुस्वरूपे'** कहकर मायाबीज की देवता भुवनेश्वरी को बतलाया है । मायाबीज का ही नामान्तर भुवनेश्वरी बीज है । फलत: जिस प्रकार बीज से अंकुर, शाखा, पुष्प फल के रूप में वृक्ष की सृष्टि हुई है, उसी प्रकार मायाबीज से संकेतित बिन्दु के द्वारा इच्छा, ज्ञान एवं क्रिया के रूप में क्रमश: रौद्री, ज्येष्ठा तथा वामा शक्तियों का प्रादुर्भाव हुआ है । इन शक्तियों का ही नामकरण महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती देवता के रूप में प्रसिद्ध हुआ है । इन त्रिशक्तियों के मंत्रों में नवार्ण और सप्तशती इन दोनों की प्रधानता मानी गई है । अतएव उपासना के क्षेत्र में दोनों का ही प्रधान और गौण रूप स्वीकार किया गया है । जहाँ नवार्ण की प्रधानता होती है, वहाँ सप्तशती का उसके अङ्गरूप में पाठ करने का विधान है । मेरुतन्त्र आदि कई तन्त्रों में इस व्यवस्था का उल्लेख पाया जाता है । इसके अनुसार जो साधक नवार्ण मन्त्र की दीक्षा लेता है वह नवार्ण यन्त्र में नवार्ण देवताओं के पूजन के साथ नवार्ण मन्त्र का जप करने के अनन्तर उसके अङ्गरूप में सप्तशती का

पाठ करता है। किन्तु यदि कोई साधक सप्तशती मालामन्त्र से दीक्षा ग्रहण करता है, तो उसे रहस्योक्त प्रक्रिया के अनुसार पूर्वोक्त यंत्र में सप्तशती की देवताओं का अर्चन कर पाठ के आद्यन्त में नवार्ण मन्त्र का जप करके सप्तशती का पाठन करना चाहिए।

कीलकाध्याय में इन दोनों प्रकारों का स्पष्ट उल्लेख किया गया है।

सप्तशती एवं सप्तसती का निर्वचन -

सप्तशती स्तोत्र के दो नाम प्रचलित हैं, प्रथम तालव्य शकार घटित 'सप्तशती' दूसरा दन्त्य सकार घटित 'सप्तसती'। मेरुतन्त्र में तालव्य शकार घटित सप्तशती के सन्दर्भ में निम्नलिखित विवरण उपलब्ध है -

'सप्तशत्याः चरित्रे तु प्रथमे पद्मजो मुनिः।
छन्दो गायत्रमुदितं महाकाली तु देवता॥
वाग्बीजं पावकस्तत्त्वं धर्मार्थे विनियोजनम्।
प्रयोगाणां तु नवतिर्मारणे मोहनेऽत्र तु॥
उच्चाटे स्तम्भने चापि प्रयोगाणां शतद्वयम्।
मध्यमेऽथ चरित्रे स्यात् तृतीयेऽथ चरित्रके॥
विद्वेषवश्ययोश्चात्र प्रयोगोऽरिकृते मतः।
एवं सप्तशतं चात्र प्रयोगाः संप्रकीर्तिताः।
तस्मात्सप्तशतीत्येव प्रोक्तं व्यासेन धीमता॥

आशय यह है कि षट्कर्मों की सिद्धि के लिए इसमें सात सौ मंत्रो के प्रयोग बतलाए गए हैं। इसलिए यह सप्तशती कहलाती है। इसके साथ ही इसके अन्तर्गत सातसतियोंका चरित्र भी वर्णित है इसलिए इसका नामकरण 'सप्तसती' के रूप में प्रचलित है। निम्नलिखित श्लोकों में व्यास जी ने यह स्पष्टीकरण किया है -

'महाविद्येत्यादि सत्यः सप्तकल्पे तथादिमे ।
ब्रह्मेन्द्रगुरुशुक्राणां विष्णुरुद्रसुरद्विषाम् ।।
उपास्या देवता जातास्ताश्चात्र ब्रह्मणा स्तुताः ।
तस्मात् सप्तसतीत्येव व्यासेन परिकीर्तिता' ।।

इस लेख के अनुसार प्रथम चरित्र में काली, तारा, छिन्नमस्ता, सुमुखी, भुवनेश्वरी, बाला एवं कुब्जा तथा मध्यम चरित्र में लक्ष्मी, ललिता, काली, दुर्गा, गायत्री, अरुन्धती और सरस्वती एवं उत्तर चरित्र में ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, नारसिंही और इन्द्राणी इन सात सतियों के चरित्रों का वर्णन है ।

तीनों चरित्रों की इन इक्कीस सतियों की समष्टि के रूप में नन्दा, शताक्षी, शाकम्भरी, भीमा, रक्तदन्तिका, दुर्गा एवं भ्रामरी नाम सात सतियाँ बतायी गयी हैं । ये ही मूल देवी की षडङ्ग देवियाँ हैं जिनका स्वरूप मूर्ति रहस्य में वर्णित है ।

इस प्रकार 'सप्तशती' तथा 'सप्तसती' इन दोनों नामों की पृथक्-पृथक् सार्थकता है ।

त्रिशक्तियों की नित्यपूजा का विधान

स्वर्ण, रजत, ताम्र अथवा भूर्जपत्रादि में या वेदी पर नवकोष्ठात्मक यन्त्र बनाकर प्रथम पङ्क्ति में ईशानकोण से आरम्भ कर अग्निकोण तक क्रमशः रुद्र-गौरी, विरिञ्चि-सरस्वती एवं विष्णु-लक्ष्मी का पूजन करना चाहिये ।

मध्यम पङ्क्ति में क्रमशः उत्तरकोण से आरम्भ कर दक्षिणकोण तक महाकाली, महालक्ष्मी एवं महासरस्वती की पूजा करनी चाहिये ।

तृतीय पङ्क्ति में वायुकोण से लेकर नैर्ऋत्यकोण तक दशानना, अष्टादशभुजा एवं अष्टभुजा का पूजन करना चाहिये ।

उक्त यन्त्र में 'ऐं महाकाल्यै नमः' इस मन्त्र से दोनों महाकालियों का पूजन किया जाता है तथा 'ह्रीं महालक्ष्म्यै नमः' इस मन्त्र से दोनों लक्ष्मियों का पूजन होता है । मायाबीज से ही मध्यपङ्क्ति के मध्य में अवस्थित महालक्ष्मी का पूजन तथा 'क्लीं महासरस्वत्यै नमः' से दोनों सरस्वतियों का पूजन होता है ।

उक्त पूजा में तीसरी पङ्क्ति के मध्यकोष्ठ में अवस्थित देवता के दाहिनी ओर सिंह एवं बाईं ओर महिष का पूजन करना चाहिये । इस प्रकार पूजा सम्पन्न करके प्रधान तुरीया महालक्ष्मी का तीनों चरित्रों में पठित 'विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं' आदि तीनों स्तुतियों से स्तवन करना चाहिये । इसके बाद पूर्वोक्त क्रमानुसार कवचादि के पाठ सहित सप्तशती स्तोत्र का पाठ करना चाहिये । यह क्रम दैनिक पाठ एवं पुरश्चरण के रूप में किये जाने वाले पाठ के साथ समान रूप से सम्बद्ध है ।

यदि कामना विशेष से पाठ करना हो तो तीनों चरित्रों के अन्तर्गत एक-एक मन्त्र की उपासना करने का भी विधान है । जैसे 'ज्ञानिनामपि चेतांसि', 'दुर्गे स्मृता', 'सर्वाबाधाप्रशमनम्' आदि । सभी काम्य प्रयोगों के आरम्भ में पूर्वोक्त पूजा का समापन कर जिस मन्त्र का कामनापरक प्रयोग करना हो वह मन्त्र जिस चरित्र से सम्बद्ध हो उस चरित्र की देवता का विधिवत् पूजन करके उसके निकट काल तथा मृत्यु का भी पूजन करके उन उन चरित्रों के स्तोत्र द्वारा स्तुति करनी चाहिये ।

उदाहरण के लिए 'विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं', 'नमो देव्यै महादेव्यै .....', 'शक्रादयः सुरगणा' आदि स्तोत्रों के द्वारा उस देवता की स्तुति कर अनन्तर अभीष्ट मन्त्र का जप कामनासिद्धि के लिए करना चाहिये । जैसा कि सप्तशती-रहस्य में उल्लेख किया गया है -

'नमो देव्या इति स्तोत्रैर्महालक्ष्मीं समर्चयेत् ।
अवतारत्रयार्चायां स्तोत्रमन्त्रास्तदाश्रयाः ।।इति ।
अष्टादशभुजा चैषा यदा पूज्या नराधिप ।
दशानना चाष्टभुजा दक्षिणोत्तरयोः सदा ।
कालमृत्यू च सम्पूज्यौ सर्वारिष्टप्रशान्तये ।।

इस प्रसंग में यह ध्यान रखना अत्यावश्यक है कि यदि पृथक्-पृथक् मन्त्रों के ऋषि आदि उपलब्ध न हों तो जिस चरित्र के मन्त्र का जप करना हो उस चरित्र के ऋष्यादिक ले लेने चाहिये ।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय बिन्दु है कि पूजा के बाद कवच, अर्गला, कीलक का पाठ प्रत्येक परिस्थिति में आवश्यक एवं अनिवार्य है । इसलिए कवच अर्गला एवं कीलक तथा तीनों रहस्यों का अङ्गरूप में पाठ किया जाना सर्वथा वाञ्छनीय है । इस लक्ष्य को दृष्टिगत रखकर कात्यायनी तन्त्र में उल्लिखित है -

अङ्गहीनो यथा देही सर्वकर्मसु न क्षमः ।
अङ्गषट्कविहीना तु तथा सप्तशतीस्तुतिः ।।
तस्मादेतत्पठित्वैव जपेत्सप्तशतीं पराम् ।
अन्यथा शापमाप्नोति हानिश्चैव पदे पदे ।।
रावणाद्याः स्तोत्रमेतदङ्गहीनं निषेविरे ।
हता रामेण ते यस्मान्नाङ्गहीनं पठेत्ततः ।।

म०नं० ३८९, जोशी भवन,
मनिहारों का रास्ता,
छोटीचौपड़,जयपुर (राजस्थान)
चलदूरभाष : ९९५०९९६३२३
दूरभाष : ०१४१-२३१७९५९

पं० राकेश शर्मा 'ज्योतिषी'
सम्पादक - पञ्चाङ्ग दर्पण
जयविनोदी जयपुर पञ्चाङ्ग

राजस्थान की सिद्धिप्रदा महाशक्तियाँ

- पं० राधेश्याम व्यास

संसार की सर्जन, पालन और संहारक शक्ति आद्याशक्ति ही त्रिगुणात्मिका शक्ति होकर संसार में व्याप्त रहती है । सत्त्वगुण-स्वरूपा महासरस्वती, रजोरूपा महालक्ष्मी और तमोरूपा महाकाली कही जाती है । शक्ति शब्द का प्रयोग चिच्छक्ति, पराशक्ति और मायाशक्ति आदि नामों से किया जाता है, वह सगुण और निर्गुण स्वरूपा है । अदिति देवी को ही सर्वव्यापिनी पृथ्वीरूपा स्वीकारा गया है । रुद्र और अदिति शिव शक्ति का समन्वित रूप है । सृष्टिकाल में वह पंचधा रूप में प्रकट हुई है । राधा, पद्मा, सावित्री, दुर्गा देवी और सरस्वती । आदिकाव्य रामायण में इसे सीता रूप में स्वीकारा गया है । ब्रह्म और माया का समन्वित रूप एक ही है ।

इस शक्ति की ज्ञान, इच्छा और क्रिया इन तीन प्रक्रियाओं के माध्यम से उपासना की जाती है । यदि इन तीन प्रक्रियाओं का विपर्यय कर दिया जाए तो महालक्ष्मी की उपासना विकृत हो जाती है । महालक्ष्मी एक ओर गरुडवाहिनी और दूसरी ओर उलूक वाहिनी के रूप में रहती है ।

अस्तु इसी स्वरूप को ध्यान में रखकर राजस्थान के राजघरानों में कुल देवी की आराधना की गई है । प्रत्येक राजा ने अपनी कुल देवी की प्रतिमाएँ स्थापित की है । राजस्थान का पुरातन नाम राजपूताना था, जहाँ २२ रजवाडे प्रसिद्ध थें । इसके

कारण २२ कुलदेवियाँ तो यहाँ स्थापित हैं, इसके अतिरिक्त विभिन्न नामों से अनेक मन्दिरों में देवियों की स्थापना हुई । इसमें से कुछेक देवी-मन्दिरों का परिचय यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है -

जयपुर

जयपुर राजघराने की कुलदेवी, शिलामाता है इनके अतिरिक्त जयपुर में राजराजेश्वरी, मनसामाता, मंगलामाता, जमवायमाता, और शीतलामाता सिद्ध पीठों के रूप में विख्यात हैं ।

१. शिलामाता -

यह मन्दिर प्राचीन राजधानी आमेर के पर्वत शिखर पर अवस्थित है । इतिहास में प्रसिद्ध राजा मानसिंह प्रथम १६ वीं शताब्दी में बंगाल-विजय के उपलक्ष्य में शिलामाता को लेकर आये थे और इसकी स्थापना आमेर में की गई थी । इसका नवीनीकरण राजा मानसिंह द्वितीय ने १९०६ ई० में संगमरमर करवाकर किया ।

यह स्थान जयपुर से करीब ९ कि०मी० की दूरी पर स्थित है, वर्तमान में यह दर्शनीयस्थल बन गया है । यहाँ प्रतिदिन हजारों की संख्या में दर्शनार्थी आते हैं । लेकिन चैत्र एवं शारदीय नवरात्रों में विशेष संख्या में दर्शनार्थी आते हैं, अश्विन शुक्ला षष्ठी को यहाँ विशेष मेला भरता है ।

२. मनसामाता -

मनसामाता और महामाया मन्दिर ये दोनों मन्दिर आमेर घाटी (जयपुर) पर स्थित हैं । महामाया मन्दिर में माताऐं बालकों की आयु वृद्धि हेतु जात देने को बड़े महिनों में यहाँ आती हैं । मनसामाता के चारों ओर पहाडियाँ हैं वर्षाकाल में जल स्रोत बहते हैं और सुरम्य हरियाली के दर्शन होते हैं । यह स्थान जयपुरसे उत्तर दिशा में ७ कि०मी० दूरी पर स्थित है ।

३. राजराजेश्वरी -

यह मन्दिर जयपुर दिल्ली बाईपास मार्ग पर जयसिंहपुरा खोर के सामने वाली पहाडियों की तलहटी में स्थित है । यह प्रतिमा श्वेत संगमरमर के पत्थर से बनी हुई है । इसे जयपुर घराने की तान्त्रिक-प्रतिमा के रूप में जाना जाता है । यहाँ श्वेत संगमरमर की भैरव मूर्ति दर्शनीय हैं, यहाँ जल स्रोत के रूप में एक टाँका व बावडी विद्यमान हैं । यहाँ दर्शनार्थियों की संख्या प्रायः नगण्य रहती है जिसका मुख्य कारण यातायात साधनों का अभाव तथा पहाडी क्षेत्र माना जाता है ।

४. मंगलामाता -

यह जयपुर की उत्तर दिशा में ब्रह्मपुरी में स्थित है । यह मन्दिर मनोवांछित फल प्रदान करने वाला कहा जाता है ।

५. शीतलामाता -

शीतलामाता का मन्दिर जयपुर में दक्षिण पूर्व में टोंक राजमार्ग चाकसू पर ३५ कि०मी० दूर पर शीतला डूंगरी पर स्थित है । यहाँ चैत्र कृष्णा सप्तमी को लक्खी मेरा भरता है । इसका वाहन गर्दभ कहा जाता है, इसकी सेवा पूजा कुम्हार जाति के लोग करते हैं । इस मन्दिर में मीणा व गुर्जर जाति के लोग एकत्र होते हैं उस दिन ठण्डा भोजन सभी घरों में बनाया व खाया जाता है ।

६. जमवायमाता -

जयपुर का पेयजल स्रोत जमवारामगढ बांध है उससे करीब २ की०मी० दूरी पर यह माता मन्दिर स्थित है । इस माता की मान्यता आसपास के गाँवों में अधिक है यहाँ चोटी, जडूला (मुण्डन संस्कार) बालकों का किया जाता है । यहाँ चारों ओर

पहाड की सुरम्य स्थिति को देखा जाता है । वर्षा काल में यहाँ गोठों का आयोजन भी होता है ।

सीकर

१. जीणमाता -

जीणमाता का पहाडों से घिरा सुन्दर व रमणीय मन्दिर है जो सीकर से पूर्व की ओर १५ कि०मी० की दूरी पर गोरिया पहाडी के दक्षिण भाग में स्थित है । यहाँ नवरात्रों में मेला भरता है इस स्थान पर प्रतिवर्ष सम्पूर्ण भारत वर्ष से दर्शनार्थी माता के दर्शन करने आते हैं । इन दर्शनार्थियों के लिए यहाँ आवास व भोजन की पर्याप्त व्यवस्थायें हैं ।

२. शाकम्भरीमाता -

शाकम्भरीमाता का मन्दिर सीकर जिले में उत्तर दिशा की ओर उदयपुरवाटी के पास पहाडी स्थान के मध्य में सीकर से ६० कि०मी० की दूरी पर स्थित है । यहाँ पेयजल आपूर्ति के लिए एक जल का स्रोत बहता है जहाँ तीन कुण्ड बने हुए हैं । एक कुण्ड के पवित्र जल से माता की पूजा होती है । दूसरे कुण्ड में यात्री स्नान करते हैं और तीसरे में वस्त्रों का प्रक्षालन किया जाता है । भारत में यही एक ऐसा स्थान है जहाँ माता को मदिरा नहीं परोसी जाती है । इस मन्दिर का निर्माण ७४९ वि०सं० में चौहान राजाओं ने करवाया । दुर्लभराज के भतीजे शिवहरि के पुत्र श्रीसिद्धराज ने इसका मण्डप निर्माण कार्य सम्पन्न किया, यह महाकाली के स्वरूप में विद्यमान है ।

शाकम्भरी का मन्दिर सांभर में भी स्थित है । ऐसी किंवदन्ती है कि एक जल स्रोत सूख जाने के बाद यहाँ शाक बोया गया था इसी के आधार पर इसका नामकरण हुआ ।

बाँसवाड़ा

त्रिपुरासुन्दरी -

बाँसवाडा जिले में त्रिपुरासुन्दरी नामक एक शक्ति पीठ स्थापित है जो तलवाडा में प्राकृतिक दृश्यों के बीच बसा हुआ है । यह मूर्ति अष्टादश भुजाधारी है और सिंह पर सवार है । शिवपुर, शक्तिपुर और विष्णुपुर नामक तीन नगर हैं इसी आधार पर इसे त्रिपुरासुन्दरी कहा जाता है ।

जैसलमेर

आवडमाता -

भाटी वंश की कुल देवी रूप में यह जैसलमेर जिले में स्थित है । ९ वीं शताब्दी में परिवार सहित लेकडा जा रही थी । मार्ग में स्थित समुद्र को तीन चुल्लू में पी गई थी । वह समुद्री-क्षेत्र रेगिस्तान में बदल गया । तेमडा पर्वत से भी राक्षसों को मार कर नीचे फैंक दिया गया था । तपस्या के पुरस्कार स्वरूप लूणराज भाटी को सोने का कडा उपहार में दिया गया था । जिससे उसने सभी शत्रुओं को अकेले ही परास्त कर दिया था । यहीं पर स्वंगिया माता का मन्दिर भी स्थित है, जिसे भाटी परिवार ने ही निर्मित किया था ।

नागौर

दधिमथिमाता -

दधिमथिमाता का मन्दिर गौठ मंगलोत में है । यह दाधीच ब्राह्मणों की कुल देवी है । यह मंदिर भास शैली में निर्मित है ।

बीकानेर

करणीमाता -

करणीमाता राठौड राजाओं की कुल देवी के रूप में मानी जाती है । इसकी स्थापना बीकानेर के महाराजा कर्णीसिंह ने की

थी। यह बीकानेर के देशनोक में स्थित है। इस देवी की सवारी के रूप में यहाँ चूहों का जमघट बना रहता है। यहाँ मान्यता है कि सफेद रंग का चूहा यदि दिख जावे तो मनुष्य के सभी कार्य सिद्ध होते हैं। यहाँ के निवासी इन्हें अपना पूर्वज मानते हैं और इन्हें संतुष्ट रखते हैं।

राष्ट्रपतिसम्मानित, वाचस्पतिपुरस्कार सम्मानित पं० मोहनलाल शर्मा पाण्डेय ने कर्मकाण्ड में रत विद्वानों के लिए एक नया मार्ग प्रस्तुत किया है। दुर्गा-पूजा-पद्धति सभी विद्वानों व भक्तों को प्रशस्ति प्रदान करेगी। हम भगवान् से यह प्रार्थना करते हैं कि श्री पाण्डेय को शतायु बनावें जिससे हमारी धर्मिक आस्था को संबल प्राप्त हो।

राधेश्याम व्यास
महामन्त्री
श्रीवैदिक-संस्कृति-प्रचारक-संघ, जयपुर
संरक्षक
आस्था-सांस्कृतिक-संस्था, जयपुर
दूरभाष - ९६०२०१९०७८, ९९२८९४१०९३

स्त्रियः समस्तास्तव देवि! भेदाः

- डॉ० राजेश्वरी भट्ट

भगवती दुर्गा युग युग से शक्ति की अधिष्ठात्री देवी के रूप में लोकवन्दनीया हैं । दुर्गादेवी के दिव्य स्वरूप व अलौकिक चरित्र से प्रमाणित है कि दुर्गा माँ केवल शक्ति ही नहीं अपितु भक्ति भुक्ति कीर्ति धृति तथा मुक्ति की भी वरदात्री है । लौकिक अलौकिक सुखों की प्राप्ति के लिए निष्ठावान् उपासक देवी की परमभक्ति के माध्यम से अभीष्ट की सिद्धि करते हैं । देवी भागवत पुराण में दुर्गा देवी को ऐश्वर्य एवं पराक्रम की मूर्ति तथा दात्री के रूप में वर्णित किया है -

ऐश्वर्यवचनं शश्वच्छक्तिः पराक्रमस्तथा ।
तत्स्वरूपा तयोर्दात्री सा शक्तिः परिकीर्तिता ।।

-देवी भागवत पुराण ९.२.१०

दुर्गासप्तशती के 'देवीकवचम्' में जगत्स्रष्टा ब्रह्मा जी के द्वारा देवी के नौ नामों का वर्णन किया गया है । जो क्रमशः इस प्रकार है -

प्रथमं शैलपुत्रीति द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ।।
पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च ।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टकम् ।।
नवमं सिद्धिदात्री च नव दुर्गाः प्रकीर्तिताः।।

- दुर्गासप्तशती देवीकवचम्

भगवती दुर्गा के परम भक्त ब्रह्मा द्वारा वर्णित दुर्गा के नौ पावन स्वरूपों की आराधना के माध्यम से आयु आरोग्य ऐश्वर्यादि समस्त सुखों का वरदान प्राप्त करते हैं । विशेष रूप से वर्ष में दो बार चैत्र तथा आश्विन मास में आयोजित नवरात्र महोत्सव पर समस्त राष्ट्र तन-मन-धन से दुर्गा की आराधना में समर्पित हो जाता है । राष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न भिन्न पूजा पद्धति से भक्त देवी की उपासना करते हैं । गुजरात में नौ दिन तक समस्त प्रदेश में गरवानृत्य से देवीपूजा की जाती है वह विश्व में प्रसिद्ध है । दुर्गापूजन के नौ दिन में भक्तगण देवी को प्रसन्न करने के लिए नौ दिन तक निराहार रहकर, सायंकाल नृत्य गायन आदि समारोहों का आयोजन कर प्रसाद ग्रहण करते हैं । सन्तुष्ट देवी उनका मनोरथ पूर्ण करती है तथा भक्तजन भी पराम्बा की स्तुति कर अपने को कृतार्थ करते हैं । ब्रह्मा द्वारा वर्णित देवी के नौ स्वरूपों के अतिरिक्त दुर्गा देवी के अनन्त रूपों का वर्णन प्राप्त होता है । दुर्गा सप्तशती में देवों द्वारा की गई 'देवी स्तुति' में जगत् की समस्त स्त्रियों को देवी की प्रतिमूर्ति कहा गया है । उनके अनुसार स्त्री मात्र ही देवी का अंश है :-

विद्याः समस्तास्तव देवि! भेदाः
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु ।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्
का ते स्तुतिः स्तव्यपरापरोक्तिः ।।

इतिहास साक्षी है तथा शास्त्र प्रमाण है कि अपनी इस दिव्य शक्ति से ही नारियों ने समय समय पर जगत् एवं परिवार का कल्याण किया है । वैदिक काल में वाक् गायत्री, गार्गी, मैत्रेयी, अनसूया आदि सन्नारियाँ देवी की ही प्रतिमूर्ति बनकर पृथ्वी पर अवतरित हुई । नारी का यही यथार्थ स्वरूप है जो राष्ट्र के अर्द्धांग को विकसित एवं शक्तिशाली बनाने की सामर्थ्य रखता है । और इसी दृष्टि से नारी का आकलन श्रेयस्कर है । किन्तु जब जब

ऐश्वर्य और बल से गर्वित विवेकहीन व्यक्ति यथार्थ से मुँह मोड़कर अपनी मर्यादा का अतिक्रमण करता है, नारी का अपमान करता है तब तब वह विनाश के गर्त में गिर जाता है और उसका अन्तिम परिणाम मृत्यु ही है । देवी ने स्वयं कहा है -

इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति ।
तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ।।

-दुर्गासप्तशती ११ अध्याय

देवी के प्रति अत्याचार करने को उद्यत शुम्भ निशुम्भ, महिषासुर, मधु-कैटभ, तथा चण्ड-मुण्ड की दुर्गति से कौन अपरिचित है? त्रेता युग में जगज्जननी के प्रति कुदृष्टि रखने वाले रावण का विनाश, द्वापार युग में द्रौपदी का अपमान करने वाले दुर्योधन दु:शासन का दुष्परिणाम, दमयन्ती के प्रति कामुक व्याध का मरण आज भी नारी के प्रति कुदृष्टि रखने वालों के लिए स्मरणीय है । वर्तमान समय में नारी अपने दिव्य गुणों एवं अनन्त सामर्थ्य से तीनों लोकों पर विजय प्राप्त कर दुर्गादेवी का स्मरण करवा रही है । जल थल नभ आदि सभी क्षेत्रों पर नारी ने विजय प्राप्त की है । इतना होने पर भी सदसद् विवेक शून्य मूढ़ जन नारी उत्पीड़न की दिशा में उन्मुख हैं । दहेज, कन्या विक्रय, भ्रूण हत्या जैसे अपराध कर राष्ट्र की गरिमा को कलंकित कर रहे हैं । विवेकशून्य इन समाजद्रोहियों के कुकर्म से एक दिन नवदुर्गा के पूजन के लिए नौ कन्याओं की प्राप्ति भी कठिन हो जाएगी । नारी घर परिवार तथा राष्ट्र का सम्मान है, नारी में स्थित दिव्यांश की प्रतिष्ठा ही देवी की सच्ची उपासना है । भगवती दुर्गा की उपासना के साथ गृहदेवी का सम्मान ही देवी पूजा की सार्थकता है ।

डी-१, पं० देवीशङ्कर तिवारी,
तिलक नगर, जयपुर (राजस्थान)
दूरभाष : ०१४१-२६२१८००

डॉ० राजेश्वरी भट्ट
पूर्व व्याख्याता,
श्रीलालबहादुर शास्त्री
महाविद्यालय, जयपुर

श्रीदुर्गापूजा-पद्धतिः

।।ॐ गं गणपतये नमः।।

पूजाङ्ग - विधिः

श्रीगणेशाय नमः। सपत्नीको यजमानः (देवलो वा) प्रातः मङ्गलस्नानं विधाय धौतवासांसि नववासांसि वा परिधाय पूजास्थले समागत्य शुद्धासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य स्वदक्षिणतः पत्नीमुपवेश्य रक्षादीपं प्रज्वाल्य दक्षिणतः पूजोपचारद्रव्याणि वामे पूजाकलशं संस्थाप्य तत्र गन्धाक्षतपुष्पैः वरुणं सम्पूज्य कलशोदकेन स्वात्मानमभिषिञ्चेत् ।

वामकरे जलमादाय दक्षिणकरस्यानामिकाङ्गुष्ठाभ्यां शरीरं प्रोक्षयेत्।

शरीरप्रोक्षणम्

मन्त्र :-

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्श्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ।।

(यजु.१९-३९)

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।
ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ३।। ॐ गङ्गाविष्णुः ३।।

शिखाबन्धनम्

मन्त्र :-

ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषिमानो गोषुमानो-ऽअश्श्वेषु रीरिषः। मानोव्वीरान् रुद्रभामिनोव्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ।। (यजु.१६-१६)

इति मन्त्रेण गायत्रीमन्त्रेण वा अङ्गुष्ठमात्रं शिखां नैर्ऋत्यां बध्नीयात् ।

पवित्रधारणम्

मन्त्र :-

ॐ पवित्रे स्थो व्वैष्णव्व्यौ सवितुर्व्वः प्प्रसवउत्त्पुनाम्म्य -च्छिद्द्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम् ।। (यजु.१-१२)

इति मन्त्रेण वामकरे कुशत्रयं दक्षिणकरे च कुशद्वयं पवित्रं धारयेत्।

आचमनम्

परित्यक्ताङ्गुष्ठकनिष्ठेन दक्षिणहस्तेन स्मार्तविधिना केशवनामान्युच्चारयन् तोयमादाय ब्राह्मयतीर्थेन निश्शब्दं त्रिराचमनं कुर्यात्-

ॐ केशवाय नमः स्वाहा।

ॐ नारायणाय नमः स्वाहा।

ॐ माधवाय नमः स्वाहा।

हस्तं प्रक्षाल्य ॐ गोविन्दाय नमः स्वाहा।

प्राणायामः

जितेन्द्रियः सन् प्राणान् स्थिरीकृत्य सव्याहृतिप्रणवां गायत्रीं शिरसा सहोच्चारयन् कनिष्ठिकानामिकाङ्गुष्ठगृहीत-नासापुटकं पूरक- कुम्भक-रेचक-क्रमेण वारत्रयं प्राणायामं कुर्यात् - मन्त्रः -

पूरकः

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् । ॐ आपोज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् । ॐ विष्णवे नमः (दक्षिणनासापुटे)।

कुम्भकः

पूर्ववत् - मन्त्रं पठित्वा ॐ ब्रह्मणे नमः (वामनासापुटे)

रेचकः

पूर्ववत् मन्त्रं पठित्वा ॐ महेश्वराय नमः (उभयनासापुटे)

यजमानभाले तिलकम्

मन्त्रः -

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्योऽ अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो
बृहस्पतिर्दधातु ।। (यजु. २५-१९)

यजमानपत्नीभाले तिलकम्

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम्
पुस्तकालय
क्रमांक 23414

मन्त्रः -

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च्च पत्क्न्यावहोरात्रे पार्श्वे
नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्म्मऽ
इषाण सर्व्वलोकम्म्मऽइषाण । (यजु.३१-२२)

लोकाचाराद् ग्रन्थिबन्धनम्

मन्त्रः -

ॐ तम्पत्त्कीभिरानुगच्छेम देवाः पुत्त्रैर्ब्भ्रातृभि-
रुतवा हिरण्ण्यैः। नाकङ्गृब्भ्णानाः सुकृतस्य
लोके तृतीये पृष्ठेऽधिरोचने दिवः।। (यजु.१५-५०)

कर्मभूमिपूजनम्

मन्त्रः -

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी।
यच्छा नः शर्म्म सप्प्रथाः।। (यजु.३६-१३)
कर्मभूम्यै नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

आसनपूजनम्

ॐ पृथ्वि ! त्वया धृता लोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता।
त्वञ्च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु चासनम् ।।

ॐकूर्मासनाय नमः। ॐअनन्तासनाय नमः। ॐ विमलासनाय नमः। ॐ परमसुखासनाय नमः।
गन्धाक्षतपुष्पैरासनं सम्पूजयेत् ।

दिग्रक्षणम्

वामहस्ते गौरसर्षपान् गृहीत्वा दक्षिणहस्तेन दशदिक्षु प्रक्षिपेत् ।

मन्त्रः -

ॐ रक्षोहणंव्वलगहनं व्वैष्णवीमिदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि
यम्मे निष्ट्यो यममात्त्यो निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि
यम्मे समानो यमसमानो निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि
यम्मे सबन्धुर्य्यमसबन्धुर्न्निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि
यम्मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्याङ्किरामि।। (यजु.५-२३)

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।
सर्वेषामवरोधेन पूजाकर्म समारभे ।।

इति तालत्रयेण सर्वान् विघ्नानुत्सार्येत् ।

भैरवनमस्कारः

तीक्ष्णदंष्ट्र ! महाकाय ! कल्पान्तदहनोपम! ।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ।।

मन्त्रः -

ॐ यो भूतानामधिपतिर्य्यस्मिँल्लोका अधिश्रिताः ।
यऽईशे महतो महाँस्तेन गृह्णामि त्वामहम्मयि
गृह्णामि त्वामहम्।। (यजु.२०-३२)

ॐ भैरवाय नमः। वामपादतलपार्श्वेन भूमिं त्रिवारं सन्ताड्योदक-स्पर्श कुर्यात् ।

पूजाकलशार्चनम्

स्ववामभागे अक्षतरचिताष्टदलस्योपरि जलपूरितं कुङ्कुम-स्वस्तिरचितं पूजाकलशं संस्थाप्य वरुणं ध्यायेत् -

मुखे विष्णुः कण्ठे प्रमथगणनाथः फणिधरः,
विधिर्मूले मध्ये हिमगिरिसुताद्याः सुवरदाः।
स्थिताः कुक्षौ द्वीपाः सलिलपतयो यस्य वसुधा,
जले साङ्ग वेदा वरुणमहमीडेऽत्र कलशे।।

मन्त्रः -

ॐ तत्त्वा यामि ब्ब्रह्मणा
व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्ब्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोद्ध्युरुशꣳस
मा नऽ आयुः प्प्रमोषीः।। (यजु.२१-२)

वं वरुणाय नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। गायत्र्या दशवारमभिमन्त्र्य तीर्थान्यावाहयेत् -

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।
सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।।

कलशे तीर्थजलं प्रक्षिपेत् । अक्षतान् गृहीत्वा - पूर्वे ऋग्वेदाय नमः। दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः। पश्चिमे सामवेदाय नमः। उत्तरे अथर्ववेदाय नमः। कलशमध्ये अपां पतये नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयेत्।

कलशस्योदकेन दूर्वाङ्कुरैः स्वात्मानं पूजाद्रव्याणि च सम्प्रोक्षयेत् -

मन्त्रः -

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन ।
महे रणाय चक्षसे ।। (यजु.३६-१४)
ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः ।
उशतीरिव मातरः।। (यजु.३६-१५)
ॐ तस्मा ऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ।
आपो जनयथा च नः।। (यजु.३६-१६)

दीपपूजनम्

देवस्य दक्षिणभागे घृतदीपं प्रज्वाल्य पात्रादिना वातरक्षां विधाय दीपे अग्निर्ज्योतिः सम्पूजयेत् ।

मन्त्रः -

ॐ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरग्निः स्वाहा
सूर्य्यो ज्ज्योति - र्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।
अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्य्योव्वर्च्चो
ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।
ज्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्योज्ज्योतिःस्वाहा ।। (यजु.३-९)

दीपस्थदेवतायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि पुष्पाणि समर्पयामि।

प्रार्थना

भो दीप ! देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् ।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात्तावदत्रस्थिरो भव ।।

शङ्खपूजनम्

शङ्खं बहिरन्तश्च प्रक्षाल्य कलशोदकेन प्रपूर्य त्रिपादिकायां निधाय हस्तेऽक्षतपुष्पादिकं गृहीत्वा शङ्खस्थदेवान् ध्यायेत् -

अपां राशेः पुत्रं कुमुदसमगौरं शशिनिभं
सुराणां शत्रूणां मनसि सततं स्थापितभयम् ।
स्थितं हस्ते विष्णोर्विपुलतमनादं सुखकरं
सदा वन्दे शङ्खं जगति विजयार्थं शुभनिधिम् ।।

मन्त्रः -

ॐ अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः ।
तमीमहे महागयम् ।। (यजु.२६-९)

ॐ आदौ चन्द्रदेवतायै नमः।
कुक्षौ वरुणदेवतायै नमः।
पृष्ठे प्रजापतये नमः।
अग्रे गङ्गासरस्वतीभ्यां नमः।

शङ्खे सर्वतीर्थेभ्यो नमः गन्धादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

प्रार्थना -

पुरा त्वं सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे ।
निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य! नमोऽस्तु ते ।।

इति संप्रार्थ्य

ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि।

तन्नः शङ्खः प्रचोदयात् ।

इत्यष्टवारमभिमन्त्र्य देववामपार्श्वे निदध्यात् ।

शङ्खोदकेन पूजाद्रव्याणि स्वात्मानं कर्मभूमिञ्च प्रोक्षयेत् ।

घण्टास्थितगरुडपूजनम्

घण्टानादं विधाय घण्टाञ्च प्रपूज्य गरुडं ध्यायेत् -

अहीनां सर्वेषां रविसुतमिव प्राणहरणे
बलिष्ठं श्रीविष्णोश्चरणकमलैः शुद्धतनुकम् ।
स्थितं घण्टायां मे स्वभिलषितसिद्ध्यै च सततं
मखेऽस्मिन्तम्वन्दे खगनिकरनाथं सुगरुडम् ।।

मन्त्रः -

ॐ सुपर्णोऽसि गरुत्त्माँस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रञ्चक्षुर्ब्बृहद्द्रथन्तरे पक्षौ। स्तोमऽ आत्त्माच्छन्दाᳬंस्यङ्गानि यजूᳬंषिनाम। साम ते तनूर्व्वामदेव्व्यं य्यंज्ञायज्ञियम्पुच्छन्धिष्ण्याः शफाः। सुपर्णोऽसि गरुत्त्मान्दिवङ्गच्छ स्वः पत।। (यजु.१२-४)

ॐ घण्टास्थाय गरुडाय नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

शान्ति-पाठः

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु
व्विश्श्वतोदब्धासोऽअपरीतासऽ उद्भिदः।
देवानो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ।१।

देवानाम्भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवाना ᳪ

रातिरभिनो निवर्त्तताम् ।

देवाना ᳪ सख्यमुपसेदिमा व्वयं देवा नऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ।२।

तान्पूर्व्वया निविदा हूमहे व्वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम् ।

अर्य्यमणं व्वरुण ᳫ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा

मयस्करत् ।।३।।

तन्नो व्वातो मयोभुव्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः ।

तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतन्धिष्ण्या

युवम् ।।४।।

तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसेहूमहेव्वयम् ।।

पूषानोयथाव्वेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये ।।५।।

स्वस्तिनऽइन्द्रोव्वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाव्विश्ववेदाः ।।

स्वस्तिनस्ताक्ष्योऽरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ।।६।।

पृषदश्वामरुतः पृश्निमातरः शुभंय्यावानोव्विदथेषुजग्मयः ।।

अग्निजिह्वामनवः सूरचक्षसोव्विश्वेनोदेवाऽअवसागमन्निह ।।७।।

भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयामदेवाभद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः ।।

स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ᳪ सस्तनूभिर्व्यशेमहि

देवहितंय्यदायुः ।।८।।

शतमिन्नुशरदोऽअन्तिदेवायत्रानश्चक्राजरसन्तनूनाम् ।।

पुत्रासोयत्रपितरोभवन्तिमानोमद्ध्यारीरिषतायुर्गन्तोः ।।९।।

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्माता सपिता सपुत्रः ।।

व्विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम् ।।१०।।

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ठशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्तिः ।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्वठ.शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।११।।
यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु ।
शं नः कुरुप्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ।।१२।।

।। ॐ शान्तिः । ॐ शान्तिः। ॐ शान्तिर्भवतु ।।

गणपति-स्मरणम्

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ।।१।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।।२।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।।३।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ।।४।।
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ।।५।।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये! शिवे! सर्वार्थसाधिके! ।
शरण्ये! त्र्यम्बके! गौरि ! नारायणि ! नमोऽस्तु ते ।।६।।

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः ।।७।।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते! तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि।।८।।

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ।।९।।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ।।१०।।

सर्वेष्वारब्धकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ।।११।।

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिञ्च भैरवम् ।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ।।१२।।

मुक्ताशैलस्थितं देवं सर्वपूज्यं गजाननम् ।
कुल्यास्थितं गणेशञ्च रक्तशैले विनायकम् ।।१३।।

दुर्गाधिपं गणाध्यक्षं श्रीगोविन्दं शिलेश्वरीम् ।
तारकेशं महादेवं हनूमन्तं महाबलम् ।।१४।।

भैरवं हर्षनाथञ्च पवित्रं गालवालयम् ।
पूषणं सततं वन्दे सर्वकार्यार्थसिद्धये ।।१५।।

वक्रतुण्ड ! महाकाय ! कोटिसूर्यसमप्रभ ! ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा ।।१६।।

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।

ॐ श्रीवाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः।

ॐ श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः।

ॐ श्री-उमामहेश्वराभ्यां नमः।

ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः।

ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः।

ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः।

ॐ कुलदेवताभ्यो नमः।

ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः।

ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः।

ॐ गुरवे नमः।

ॐ परमगुरवे नमः।

ॐ परात्परगुरवे नमः।

ॐ परमेष्ठिगुरवे नमः।

ॐ एतत्कर्मप्रधानदेवतायै नमः।

ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।

ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। निर्विघ्नमस्तु।

सङ्कल्पः -

दक्षिणहस्ते गन्धाक्षतपुष्पदूर्वापूगफलदक्षिणाजलान्यादाय— ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्धे रथान्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानां मध्ये अष्टमे श्रीश्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादिचतुर्दश-मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे सप्तद्वीपमध्य-वर्तिनि जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तैकदेशे श्रीमहानद्योर्गङ्गायमुनयोः पश्चिमे भागे नर्मदाया उत्तरे भागे अर्बुदारण्यक्षेत्रे (अमुकक्षेत्रे वा) राजस्थानप्रदेशे (अन्यप्रदेशे वा) जयपुरनगरे (अन्यनगरे, ग्रामे वा) अमुकदेवालये (गृहे वा) देवब्राह्मणानां सन्निधौ बार्हस्पत्यमानेन प्रभवादि-षष्टिसंवत्सराणां मध्ये अमुकनाम्नि संवत्सरे विक्रमादित्य-राज्याद् अमुक-संख्याकवैक्रमाब्दे अमुकसंख्याके शालिवाहनशके अमुकर्तौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुक-अमुकराशिस्थितेषु सूर्यचन्द्र-भौमबुधबृहस्पतिशुक्रशनि-राहुकेतुषु अमुकगोत्रोत्पन्नः, अमुक-नामाहं (शर्मा, वर्मा, गुप्तः, दासोऽहम्) सपत्नीकस्य सपरिवारस्य ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थम्, दीर्घायुरारोग्यैश्वर्याभि -वृद्ध्यर्थं लोके सभायां राजद्वारे सर्वत्र यशोविजय-लाभार्थं समस्तदुरितोपशान्त्यर्थं कायिकवाचिक-मानसिकसांसर्गिकादिपापक्षयार्थं विश्वस्मिन् जगति सर्वविधशान्त्यर्थं धर्मसंस्थापनार्थं धर्मार्थकाम-मोक्षप्राप्त्यर्थं गोगजाश्वादिसम्पत्प्रवृद्ध्यर्थं विश्वकल्याणार्थं साङ्गायाः सपरिवारायाः सायुधायाः सशक्तिकायाः सवाहनायाः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायाः श्रीदुर्गादेव्याः

षोडशो-पचारैः राजोपचारैः (यथालब्ध्योपचारैर्वा) नित्यपूजनं (पर्वपूजनं वा) करिष्ये।

सर्वप्राक् तदङ्गतया मण्डलस्थगणेशाम्बिकयोः, गणेशसहित-षोडशमातृणाम्, सप्तवसोर्धाराणाम्, आभ्युदयिक-नान्दीश्राद्धम्, ब्राह्मणवरणम्, कलशे वरुणपूजनपूर्वकं पुण्याह-वाचनम्, शिख्यादि-वास्तुदेवपूजनम्, कुण्डस्थाग्निपूजनम्, सूर्यादिग्रहमण्डलस्थदेव-पूजनम्, मण्डलस्थयोगिनीपूजनम्, क्षेत्रपालमण्डलस्थाजरादिदेव-पूजनम्, सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेव-पूजनम्, प्रधानपूजनं हवनञ्च करिष्ये ।

श्रीदेवीपूजापद्धतिः

प्रधानपूजाप्रयोगः

श्रीमान् साधकः ब्राह्मे मुहूर्त्ते समुत्थाय शौचादिकं विधाय गङ्गाजलमिश्रितपयसा स्नानं विधाय धौते वाससी परिधाय प्राप्तनवार्णदीक्षः सप्तशतीदीक्षितो वा गुरुस्मरणं विधाय स्वशाखोक्तां वैदिकीं सन्ध्यामुपास्य तर्पणं च विधाय न्यासान् कुर्यात् । यथा - ॐ ह्रीं चण्डिकायै हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं चण्डिकायै शिरसे स्वाहा । ॐ ह्रीं चण्डिकायै शिखायै वषट्। ॐ ह्रीं चण्डिकायै कवचा य हुं । ॐ ह्रीं चण्डिकायै नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ह्रीं चण्डिकायै अस्त्राय फट् । इति षडङ्गन्यासं विधाय देवीं ध्यायेत् तर्पयेच्च । ततो द्वारपूजां कुर्यात् । यथा - द्वारस्योर्ध्वशाखायां दक्षे ॐ धात्रे नमः । वामे ॐ विधात्रे नमः । अधः शाखायां दक्षे ॐ गङ्गायै नमः । वामे ॐ यमुनायै नमः । ऊर्ध्वोदुम्बरे ॐ द्वारश्रियै नमः । अधः ॐ देहल्यै नमः । इति संपूज्य वामाङ्गसङ्कोचेनान्तः प्रविश्य नैर्ऋत्यकोणे ॐ वास्तुपुरुषाय नमः इति गन्धाक्षतैः सम्पूज्य आसनभूमौ रक्तचन्दनेन चतुरस्रं विलिख्य तत्र 'पृं पृथिव्यै नमः' । पृथ्वीतिमन्त्रेण प्रार्थ्योपविश्य शिखां बद्ध्वा प्राणायामं संकल्पं च कुर्यात् ।

सङ्कल्पः

दक्षिणहस्ते गन्धाक्षतपुष्पदूर्वापूगफलदक्षिणा-जलान्यादाय— ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया

प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्धे रथान्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानां मध्ये अष्टमे श्रीश्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादिचतुर्दशमन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वत-मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे सप्तद्वीपमध्य-वर्तिनि जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तैकदेशे श्रीमहानद्योर्गङ्गायमुनयोः पश्चिमे भागे नर्मदाया उत्तरे भागे अर्बुदारण्यक्षेत्रे (अमुकक्षेत्रे वा) राजस्थानप्रदेशे (अन्यप्रदेशे वा) जयपुरनगरे (अन्यनगरे, ग्रामे वा) अमुकदेवालये (गृहे वा) देवब्राह्मणानां सन्निधौ बार्हस्पत्यमानेन प्रभवादि-षष्टिसंवत्सराणां मध्ये अमुकनाम्नि संवत्सरे विक्रमादित्य – राज्याद्अमुक - संख्याकवैक्रमाब्दे अमुकसंख्याके शालिवाहनशके अमुकर्तौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुक-अमुकराशिस्थितेषु सूर्यचन्द्र-भौमबुधबृहस्पतिशुक्रशनिराहुकेतुषु अमुकगोत्रोत्पन्नः, अमुकनामाहं (शर्मा, वर्मा, गुप्तः, दासोऽहम्) सपत्नीकस्य सपरिवारस्य ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थम्, दीर्घायुरारोग्यै-श्वर्याभिवृद्ध्यर्थं लोके सभायां राजद्वारे सर्वत्र यशोविजय-लाभार्थं समस्तदुरितोपशान्त्यर्थं कायिकवाचिक-मानसिक-सांसर्गिकादिपापक्षयार्थं विश्वस्मिन् जगति सर्वविध-शान्त्यर्थं धर्मसंस्थापनार्थं धर्मार्थकाममोक्षप्राप्त्यर्थं गोगजाश्वादि-सम्पत्ति-वृद्ध्यर्थं विश्वकल्याणार्थं साङ्गायाः सपरिवारायाः सायुधायाः सशक्तिकायाः सवाहनायाः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती-स्वरूपायाः श्रीदुर्गादेव्याः नित्यपूजनं (पर्वपूजनं वा) करिष्ये ।

तत्त्वत्रयेणाचामेत् । यथा- ॐ आत्मतत्त्वाय स्वाहा । ॐ विद्यातत्त्वाय स्वाहा । ॐ शिवतत्त्वाय स्वाहा ।

(१)

भूतशुद्धिप्रकारः (स्वशरीरे)

कुम्भकप्राणायामेन मूलाधारात् कुण्डलिनीं परदेवतां विसतन्तुनिभां समुत्थाप्य ब्रह्मरन्ध्रगतां स्मृत्वा हृदयस्थं जीवं प्रदीपकलिकाकारं गृहीत्वा, सुषुम्नामार्गेण ब्रह्मरंध्रं गत्वा, ॐ हंसः सोऽहमिति मन्त्रेण जीवं ब्रह्मणि संयोजयेत् । ततः पादादिजानुपर्यन्तं चतुष्कोणं वज्रलाञ्छितं स्वर्णवर्णं पृथ्वीमण्डलम् (लँ) इति भूबीजाढ्यं स्मरेत् । जान्वादिनाभिपर्यन्तम् अर्द्धचन्द्राकारं पद्मद्वयाङ्कितं श्वेतवर्णम् अपां स्थानं सोममण्डलम् (वं) इति वरुणबीजाढ्यं स्मरेत् । नाभ्यादिहृदयपर्यन्तं त्रिकोणं स्वस्तिकाङ्कितं रक्तवर्णम् अग्निमण्डलम् (रं) इति वह्निवीजाढ्यं स्मरेत् । हृदयादिभ्रूमध्यपर्यन्तं वृत्तं षड्बिन्दुलाञ्छितं धूम्राभं वायुमण्डलम् (यं) वायुबीजाढ्यं स्मरेत् । भ्रूमध्यादारम्भ्य ब्रह्मरन्ध्रान्तं वृत्तं स्वच्छं मनोहरम् आकाशमण्डलं (हं) व्योमबीजाढ्यं स्मरेत् । एवं भूतगणं स्मृत्वा ततः पूर्वोक्तभूमण्डले पादेन्द्रिय-(१) गगन-(२) घ्राण-(३) गन्ध-(४) ब्रह्म-(५) निवृत्ति-(६) समान-(७) गन्तव्यदेशाश्च (८) । एवमष्टौ पदार्थाश्चिन्त्याः ।

जलमण्डले हस्तेन्द्रिय (१) ग्रहण-(२) ग्राह्य-(३) रसना-(४) रस-(५) विष्णु-(६) प्रतिष्ठा-(७) उदानाः (८) ध्येयाः । तेजोमण्डले वायु- (१) विसर्ग- (२) विसर्जनीय- (३) चक्षू- (४) रूप- (५) शिव- (६) विद्या- (७) व्याना (८) ध्येयाः ॥३॥ वायुमण्डले उपस्था- (१) ऽऽनन्द- (२) स्त्री- (३) स्पर्शन- (४) स्पर्श- (५) ईशान- (६) शान्ति-(७) अपानाः (८) ध्येयाः ॥४॥

आकाशमण्डले वाग्- (१) वक्तव्य- (२) वदन- (३) श्रोत्र- (४) शब्द- (५) सदाशिव- (६) शांत्यतीता (७) प्राणा (८) इत्यष्टौ चिन्त्याः ॥५॥ एवं भूतानि संचिन्त्य पूर्वपूर्व-कार्यस्योत्तरोत्तरकोणे विलापनं ब्रह्मपर्यन्तं कार्यम् । तद्यथां – "ॐ लं फट्" इत्यनेन पञ्चगुणां पृथ्वीमप्सु उपसंहरामीति जले भुवं विलापयेत् ॥१॥ "ॐ वं हुं फट्" इति चतुर्गुणा अपोऽग्नौ उपसंहरामीति वह्नौ जलं विलापयेत् ॥२॥ "ॐ रं हुं फट्" इति त्रिगुणं तेजो वायौ उपसंहरामीति वह्निं वायौ विलापयेत् ॥३॥ "ॐ यं हुं फट् " इति द्विगुणं वायुमाकाशे उपसंहरामीति वायुमाकाशे विलापयेत् ॥४॥ "ॐ हं हुं फट्" इत्येकगुणमाकाशमहंकारे उपसंहरामीति आकाशमहंकारे विलापयेत् ॥५॥ ॐ अहंकारं महत्तत्वे उपसंहरामीति अहंकारं महत्तत्वे विलापयेत् ॥६॥ ॐ महत्तत्त्वं प्रकृतौ उपसंहरामीति महत्तत्त्वं प्रकृतौ विलापयेत् ॐ प्रकृतिमात्मनि उपसंहरामीत्यनेन मायामात्मनि विलापयेत् । एवं शुद्धः सच्चिन्मयो भूत्वा वासनामयं पापपूरुषं चिन्तयेत् । तद्यथा - "वामकुक्षिस्थितं कृष्णमङ्गुष्ठपरिमाणकम् । ब्रह्महत्याशिरोयुक्तं कनकस्तेयबाहुकम् ॥१॥ मदिरापानहृदयं गुरुतल्पकटीयुतम् । तत्संसर्गिपदद्वन्द्वमुपपातक-मस्तकम् ॥२॥ खड्गचर्मधरं दुष्टमधोवक्त्रं सुदुःसहम्" एवं पापपूरुषं चिन्तयित्वा पूरकप्राणायामे यं यं यं यं यं यं इति वायुबीजेन द्वात्रिंशद्वारं (३२) षोडशवारं (१६) वा आवर्तितेन पापपूरुषं शोषयेत् । ततः स्वशरीरयुतं पापं कुम्भके रं रं रं रं रं रं इति वह्निबीजेन चतुःषष्टि- (६४) वारमावर्तितेन तदुत्थाग्निना दहेत् । ततो रेचकप्राणायामे यं यं यं यं इति वायुबीजं षोडश- (१६) वारं द्वात्रिंशद्वारं (३२) वा जपित्वा दक्षिण-नाड्या तद्भस्म स्वशरीराद् बहिः रेचयेत् । ततो देहोत्थं भस्म ॐ (वं) इत्युच्चारेण सुधाबीजेन तदुत्थाऽमृतेन संप्लाव्य पश्चात्

(ॐ (लं) इति भूबीजेन तद् भस्म घनीभूतं पिण्डं कृत्वा कनकाण्डवद् भावयेत् । ततः (ॐ हं) इति आकाशबीजं जपन् तत्पिण्डं मुकुराकारं भावयित्वा तस्य मूर्द्धादिनखान्ता अवयवा मनसा रचनीयाः । ततः पुनरपि सृष्टिमार्गेण ब्रह्मणः सकाशादाकाशादीनि भूतानि उत्पादयेत् । तद्यथा – ब्रह्मणः प्रकृतिः, प्रकृतेर्महत्, महतोऽहंकारः, अहंकारादाकाशः, आकाशाद् वायुः, वायोरग्निः, अग्नेरापः, अद्भ्यः पृथिवी, पृथिव्या ओषधयः, ओषधिभ्योऽन्नम्, अन्नात् रेतः, रेतसः पुरुष इत्युत्पाद्य "ॐ हंसः सोऽहम्" इति मन्त्रेण ब्रह्मण्येकभूतं जीवं स्वहृदयाम्बुजे संस्थाप्य कुण्डलिनीं मूलाधारगतां संस्मरेत् । इति भूतशुद्धिः ।

भूतशुद्धिं विधाय, एकादशन्यासान् कुर्यात् ।

प्रथमो मातृकान्यासः

ॐ नमः मूर्ध्नि । ॐ आं नमः ललाटे । ॐ इं नमः दक्षनेत्रे । ॐ ईं नमः वामनेत्रे । ॐ उं नमः दक्षकपोले । ॐ ऊं नमः वामकपोले । ॐ ऋं नमः दक्षश्रुतौ । ॐ ॠं नमः वामश्रुतौ । ॐ ऌं नमः दक्षनासायाम् । ॐ ॡं नमः वामनासायाम् । ॐ एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे । ॐ ऐं नमः अधरोष्ठे । ॐ ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ । ॐ औं नमः अधोदन्तपङ्क्तौ । ॐ अं नमः जिह्वायाम् । ॐ अः नमः तालुनि । ॐ कं नमः दक्षवाहौ । ॐ खं नमः दक्षकूर्परे । ॐ गं नमः दक्षमणिबन्धे । ॐ घं नमः दक्षाङ्गुलिमूले । ॐ ङं नमः दक्षाङ्गुल्यग्रे । ॐ चं नमः वामबाहुमूले । ॐ छं नमः वामकूर्परे । ॐ जं नमः वाममणिबन्धे । ॐ झं नमः वामाङ्गुलिमूले । ॐ ञं नमः वामाङ्गुल्यग्रे । ॐ टं नमः दक्षोरुमूले । ॐ ठं नमः दक्षजानुनि । ॐ डं नमः दक्षगुल्फे । ॐ ढं नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले । ॐ णं नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे ।

ॐ तं नमः वामपादोरुमूले । ॐ थं नमः वामजानुनि । ॐ दं नमः वामगुल्फे । ॐ धं नमः वामपादाङ्गुलिमूले । ॐ नं नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे । ॐ पं नमः दक्षपार्श्वे । ॐ फं नमः वामपार्श्वे । ॐ बं नमः पृष्ठे । ॐ भं नमः नाभौ । ॐ मं नमः जठरे । ॐ यं त्वगात्मने नमः हृदये । ॐ रं असृगात्मने नमः दक्षांसे । ॐ लं मांसात्मने नमः ककुदि । ॐ वं स्नाय्वात्मने नमः वामांसे । ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तान्तम् । ॐ षं मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तान्तम् । ॐ सं मेदआत्मने नमः हृदयाद्दक्षपादान्तम् । ॐ हं पूयात्मने नमः हृदयाद्वामपादान्तम् । ॐ ल्ङं[1] प्राणात्मने नमः पादादिहृदयान्तम् । ॐ क्षं जीवात्मने नमः हृदयादिशिरोऽन्तम् । इतिमातृकान्यासः ।

(२)

अथ द्वितीयः सारस्वतन्यासः

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः कनिष्ठयोः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः अनामयोः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मध्यमयोः । ऐं ह्रीं क्लीं नमः तर्जन्योः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः अङ्गुष्ठयोः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः करतलयोः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः करपृष्ठयोः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः मणिबन्धयोः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः हृदये । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिरसि । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिखायाम् । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः कवचे । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः नेत्रयोः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः करतलकरपृष्ठयोः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः पूर्वे । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः आग्नेये । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः दक्षिणे । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः नैर्ऋत्ये । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः पश्चिमे । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः वायव्ये । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः उत्तरे । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः

---

१ बह्वृचसम्प्रदायप्रसिद्धोऽयं वर्णः ।

ईशाने । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः ऊर्ध्वे । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः अधः । इति द्वितीयः सारस्वतो न्यासः ।

अथ तृतीयो मातृगणन्यासः

ॐ ह्रीं ब्रह्माणी पूर्वतः पातु । ॐ ह्रीं माहेश्वरी आग्नेय्यां पातु । ॐ ह्रीं कौमारी दक्षिणे पातु । ॐ ह्रीं वैष्णवी नैर्ऋत्ये पातु । ॐ ह्रीं यज्ञवाराही पश्चिमे पातु । ॐ ह्रीं ऐन्द्री उत्तरे पातु । ॐ ह्रीं चामुण्डा ईशाने पातु । ॐ ह्रीं व्योमेश्वरी ऊर्ध्वं पातु । ॐ ह्रीं नागेश्वरी पाताले पातु । इति तृतीयो मातृगणन्यासः

अथ चतुर्थः षड्देवीन्यासः

ॐ कमलाङ्कुशमण्डिता नन्दजा पूर्वाङ्गं पातु । ॐ खड्गपात्रधरा रक्तदन्तिका दक्षिणाङ्गं पातु । ॐ पुष्पपल्लवमूलादिहस्ता शाकम्भरी पश्चिमाङ्गं पातु । ॐ धनुर्बाणधरा दुर्गार्तिहारिणी दुर्गा वामाङ्गं पातु । ॐ शिरः पात्रकरा भीमा मस्तकाच्चरणपर्यन्तं पातु । ॐ चित्रकान्तिभृद्भ्रामरी चरणाभ्यां शिरःपर्यन्तं पातु । इति चतुर्थः षड्देवीन्यासः ।

अथ पञ्चमो ब्रह्मादिन्यासः

ॐ ब्रह्मा सनातनः पादादिनाभिपर्यन्तं पातु । ॐ जनार्दनः नाभेर्विशुद्धिपर्यन्तं नित्यं पातु । ॐ रुद्रस्त्रिलोचनः विशुद्धेः शिखापर्यन्तं पातु । ॐ हंसः पादद्वयं पातु । ॐ वैनतेयः करद्वयं पातु । ॐ वृषभश्चक्षुषी पातु । ॐ जनार्दनः परात्परतरः सर्वानन्दमयो हरिः सर्वाङ्गानि पातु । इति पञ्चमो ब्रह्मादिन्यासः ।

अथ षष्ठो लक्ष्म्यादिन्यासः

ॐ अष्टादशभुजा सती महालक्ष्मीर्मध्यं पातु । ॐ अष्टभुजा सरस्वती ऊर्ध्वं पातु । ॐ त्रिंशल्लोचनमण्डिता महाकाली अधः पातु । ॐ सिंहो हस्तद्वयं पातु । ॐ परहंसः अक्षिमण्डलं

पातु । ॐ महिषेण समायुक्तः प्रेतः पादद्वयं पातु । ॐ महेशानश्चण्डिका च सर्वाङ्गाणि पातु । इति षष्ठो लक्ष्म्यादिन्यासः ।

अथ सप्तमो मन्त्रबीजन्यासः

ॐ ऐं नमः ब्रह्मरन्ध्रे । ॐ ह्रीं नमः दक्षनेत्रे । ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे । ॐ चां नमः दक्षकर्णे । ॐ मुं नमः वामकर्णे । ॐ डां नमः दक्षनासापुटे । ॐ यैं नमः वामनासापुटे । ॐ विं नमः मुखे । ॐ च्चें नमः गुदे । इति सप्तमो मन्त्रबीजन्यासः ।

अथाष्टमो बीजन्यासः

ॐ ऐं नमः गुदे । ॐ ह्रीं नमः मुखे । ॐ क्लीं नमः वामनासापुटे । ॐ चां नमः दक्षनासापुटे । ॐ मुं नभः वामकर्णे । ॐ डां नमः दक्षकर्णे । ॐ यैं नमः वामनेत्रे । ॐ विं नमः दक्षनेत्रे । ॐ च्चें नमः ब्रह्मरन्ध्रे । इत्यष्टमो बीजन्यासः ।

अथ नवमो मन्त्रन्यासः

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः मस्तकाच्चरणपर्यन्तं पूर्वाङ्गे । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः मस्तकाच्चरणावधि दक्षिणाङ्गे । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः मस्तकाच्चरणावधि पृष्ठे । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः मस्तकाच्चरणावधि वामाङ्गे । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः मस्तकाच्चरणान्तम् । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः पादादिशिरोऽन्तम् ।

इति नवमो मन्त्रन्यासः

अथ दशमः षडङ्गन्यासः

ॐ मू. ९ नमः हृदयाय नमः ।[१] ॐ मू. ९ नमः शिरसे

---

१ ॐ मू. ९ = नवार्णमन्त्रः

स्वाहा । ॐ मू. ९ नमः शिखायै वषट् । ॐ मू. ९ नमः कवचाय हुम् । ॐ मू. ९ नमः नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः अस्त्राय फट् । इति दशमः षडङ्गन्यासः ।

अथैकादशन्यासः

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ।।

इति मन्त्रं पठित्वा कृष्णवर्णं ध्यायन् नाभ्यादिचरणान्तं व्यापकमुद्रया न्यसेत् । पुनर्बालार्कसदृशं ध्यायन् ॐ शूलेन पाहि नो देवीति श्लोकचतुष्टयं पठित्वा कण्ठादिनाभ्यन्तं व्यापकमुद्रया न्यसेत् । पुनः शुद्धस्फटिकसङ्काशं ध्यायन् सर्वस्वरूपे सर्वेशे इत्यादिश्लोकपञ्चकं पठित्वा मूर्धादिकण्ठान्तं व्यापकमुद्रया न्यसेत् । **इत्यैकादशन्यासः** ।

एवमेकादशन्यासान् विधाय योनिमुद्रां बद्ध्वा स्वात्मानं देवीरूपं ध्यात्वा स्वहृदये पूजापीठं विभाव्य तन्मध्ये मूलमन्त्रस्य बीजत्रयं (ऐं ह्रीं क्लीं) ध्यात्वा तत्र मध्यबीजे (ह्रीं) सर्वदेवशरीरतेजसोद्भूतां श्रीमहालक्ष्मीं वैकृतिकरहस्योक्तश्लोकैः ध्यायेत् -

श्लोकाः -

श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला ।
रक्तमध्या रक्तपादा नीलजङ्घोरुरुन्मदा ।।८।।
सुचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा ।
चित्रानुलेपना कान्तिरूपसौभाग्यशालिनी ।।९।।
अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती ।
आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधः करक्रमात् ।।१०।।
अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा ।
चक्रं त्रिशूलं परशुः शङ्खो घण्टा च पाशकः ।।११।।

शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः ।
अलङ्कृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम् ।।१२।।

इति ध्यात्वा स्वात्मैक्येन विभाव्य तस्या दक्षिणे प्रथमबीजे (ऐं) श्रीमहाकालीं वैकृतिकरहस्योक्तश्लोकैर्ध्यायेत् -

श्लोका: -

दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभा ।
विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया ।।३।।
स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीमरूपाऽपि भूमिप! ।
रूपसौभाग्यकान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियः ।।४।।
खड्गबाणगदाशूलचक्रशङ्खभुशुण्डिभृत् ।
परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्च्योतद्रुधिरं दधौ ।।५।।

एवं ध्यात्वा श्रीमहालक्ष्म्या वामे तृतीयबीज़े (क्लीं) श्रीमहासरस्वतीं वैकृतिकरहस्योक्तश्लोकेन ध्यायेत् ।

श्लोक: -

गौरीदेहात्समुद्भूता या सत्त्वैकगुणाश्रया ।
साक्षात्सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिबर्हिणी ।।
दधौ चाष्टभुजा बाणमुसले शूलचक्रभृत् ।
शङ्खं घण्टां लाङ्गलञ्च कार्मुकं वसुधाधिप! ।।

इति महासरस्वतीं स्वहृत्पद्मे ध्यात्वा महाकालीं महालक्ष्मीं महासरस्वतीं साङ्गां सावरणां मानसोपचारैः सम्पूज्य मूलाधारे आत्मान्तरात्मपरमात्मज्ञानात्मस्वरूपं कुण्डं कुण्डल्यग्निप्रज्वलितं ध्यात्वा मूलमन्त्रं (ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे) उच्चार्यान्तेऽहन्तां जुहोमि स्वाहा । एवं अहन्तासत्यपैशुन्यकामक्रोधलोभमोहमद-मात्सर्याणि सुषुम्ना स्रुग्युक्तमनःस्रुवेण पृथक् पृथक् हुत्वा

निर्दग्धनिखिलवैरिगण: स्थिरचित्त: मूलमन्त्रं (नवार्णमन्त्रं) यथाशक्ति जपित्वा जपं श्रीदेव्यै समर्प्य बाह्यपूजां कुर्यात् ।

बाह्यपूजाप्रकारः

स्वदक्षिणभागे भूमौ रक्तचन्दनमिश्रितजलेन त्रिकोणं, वृत्तं, चतुरस्रं निर्माय चन्दनाक्षतपुष्पैः 'ऐं ह्रीं व्यापकमण्डलाय नमः' मन्त्रेणानेन मण्डलं सम्पूज्य तदुपरि अस्त्रमन्त्रप्रक्षालिताधारस्वरुपां त्रिपादीं संस्थाप्य 'मं वन्हिमण्डलाय दशकलात्मने नमः' इति मन्त्रेण त्रिपादीं सम्पूज्य अर्घ्यपात्रं अस्त्रमन्त्रेण प्रक्षाल्य त्रिपादीं तदुपरि स्थापयेत् । अनन्तरं 'अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' इति मन्त्रेण चन्दनादिद्वारा अर्घ्यपात्रं सम्पूज्य मूलमन्त्रात् तथा अकारात् प्रारभ्य क्षकारपर्यन्तं मातृकावर्णानाम् उच्चारणं कुर्वन् अर्घ्यपात्रं शुद्धजलेन सम्पूर्य गन्धाक्षतादिकं तस्मिन् प्रक्षिप्य (ॐ सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः) इति मन्त्रेण जले सोममण्डलं विभाव्य तस्य पूजां कृत्वा सूर्यमण्डलेन अङ्कुशमुद्रया -

ॐ ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे! तेन सत्येन मे देव! तीर्थं देहि दिवाकर! इति मन्त्रेण तीर्थान्यावाह्य धेनुमुद्रया -

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।

इति मन्त्रेण तस्य जलस्य अमृतीकरणं कुर्यात् । तथा (हुम्) इत्युच्चार्य तस्य अवगुण्ठनं विधाय चक्रमुद्रां प्रदर्शितां कृत्वा अस्त्रमुद्रया संरक्षणं विधाय मूलमन्त्रस्य अष्टवारं उच्चारणं कृत्वा मत्स्यमुद्रया तम् अभिमन्त्रितं कुर्यात् । पुनः अस्त्रेण संरक्षणं तथा कवचेन अवगुण्ठनं विधाय मूलमन्त्रस्य उच्चारणं कुर्वन् तेन जलेन स्वात्मानं पूजावस्तूनि च प्रोक्षयेत् । तथा गन्धादिना स्वात्मानम्

अलङ्कृत्य देवताभिः सह स्वात्मनः अभिन्नरुपस्य ध्यानं कुर्वन् पूजापात्रपूजनं कुर्यात् ।

पूजापात्रपूजनम्

स्ववामभागे बिन्दुत्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुरस्रात्मकं यन्त्रं गन्धेन विलिख्य यन्त्रोपरि मध्ये बिन्दौ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः । त्रिकोणस्य प्रथमे कोणे - ऐं ह्रीं क्लीं नमः । द्वितीये कोणे - चामुण्डायै नमः । तृतीये कोणे - विच्चे नमः । षट्कोणस्य प्रथमे कोणे - ऐं ह्रीं क्लीं नमः । द्वितीये कोणे - चामुण्डायै नमः । तृतीये कोणे विच्चे नमः । चतुर्थे कोणे - ऐं ह्रीं क्लीं नमः । पञ्चमे कोणे- चामुण्डायै नमः षष्ठे कोणे - विच्चेनमः ।

वृत्ते - अं आं इत्यारभ्य क्षं पर्यन्तं मातृकाभ्यो नमः ।

चतुरस्रे - आग्नेये - ऐं हृदयाय नमः । नैर्ऋत्ये - ह्रीं शिरसे स्वाहा । वायव्ये - क्लीं शिखायै वषट् । ईशाने - चामुण्डायै कवचाय हुम् । मध्ये - विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् । चतुर्दिक्षु ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट् । गन्धादिभिः सम्पूजयेत् । हुमिति आधारं प्रक्षाल्य 'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' इति मूलमन्त्रेण यन्त्रोपरि कलशं संस्थाप्य 'ॐ वं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने श्रीदुर्गादेवताकलशपात्राधाराय नमः' इत्याधारं सम्पूज्य दशकलाः सम्पूजयेत् - यथा -

१. ॐ यं धूम्रार्चिषे नमः । २. ॐ रं ऊष्मायै नमः । ३. ॐ लं ज्वलिन्यै नमः ४. वं ज्वालिन्यै नमः ५. ॐ शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः । ६. ॐ षं सुश्रियै नमः । ७. ॐ सं सुरूपायै नमः । ८.ॐ हं कपिलायै नमः । ९. ॐ लं हव्यवाहायैनमः । १०. ॐ क्षं कव्यवाहायै नमः । "हुँ" इति पात्रं प्रक्षाल्य 'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' इति मूलमन्त्रेण संस्थाप्य

ॐ सं सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने श्रीदुर्गादेवताकलशपात्राय नमः, तत्र द्वादशकलाः सम्पूजयेत् -

द्वादशकलाः - १. ॐ कं भं तपिन्यै नमः । २. ॐ खं वं तापिन्यै नमः । ३. ॐ गं फं धूम्रायै नमः । ४. ॐ घं मं मरिच्यै नमः । ५. ङं नं ज्वालिन्यै नमः । ६. ॐ चं धं रुच्यै नमः । ७. ॐ छं दं सुषुम्णायै नमः । ८. ॐ जं थं भोगदायै नमः । ९. ॐ झं तं विश्वायै नमः । १०. ॐ ञं णं बोधिन्यै नमः । ११. ॐ टं ढं धारिण्यै नमः । १२. ॐ ढं डं क्षमायै नमः ।

विलोममातृकया कलशे तीर्थजलमापूरयेत् -

विलोममातृकाः - क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं ॡं ऌं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं । ततो गालिनीमुद्रया निरीक्ष्य ॐ सों चन्द्रमण्डलाय षोडशकलात्मने श्रीदुर्गादेवताकलशामृताय नमः 'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' इति मूलमन्त्रेण षोडशकलाः सम्पूजयेत् -

षोडशकलाः - १. ॐ अं अमृतायै नमः । २. ॐ आं मानदायै नमः । ३. ॐ इं पूषायै नमः । ४. ॐ ईं पुष्ट्यै नमः। ५.ॐ उं तुष्ट्यै नमः । ६. ॐ ऊं रत्यै नमः । ७. ॐ ऋं धृत्यै नमः । ८. ॐ ॠं शशिन्यै नमः । ९. ॐ ऌं चन्द्रिकायै नमः। १०. ॐ ॡं कान्त्यै नमः । ११. ॐ एं ज्योत्स्नायै नमः । १२. ॐ ऐं श्रियै नमः । १३. ॐ ओं प्रीत्यै नमः । १४. ॐ औं अङ्गदायै नमः । १५. ॐ अं पूर्णायै नमः । १६ ॐ अः पूर्णामृतायै नमः । 'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' इति मूलमन्त्रेण गन्धादिभिः षोडशकलाः सम्पूज्य 'ॐ सं षोडशकलात्मने सोममण्डलाय श्रीदुर्गादेवताकलशामृताय नमः' गन्धादिभिः पूजयेत् ।

आवाहनादिदशमुद्राः प्रदर्श्य नवार्णमन्त्रेण सम्पूज्य मत्स्यमुद्रयाच्छाद्य नवार्णमन्त्रेणाष्टवारमभिमन्त्र्य धेनुमुद्रया योनिमुद्रां प्रदर्शयेत् । कलशस्थापनवद् दक्षिणतः सामान्यार्घ्यं सामान्यार्घ्याद् दक्षिणतः शङ्ख-विशेषार्घ्य-पाद्यपात्र-अर्घ्यपात्र-आचमनीयपात्र-मधुपर्कपात्र- प्रोक्षणीपात्राणि स्थापयेत् ।

निम्नलिखितानुसारं पात्रेषु द्रव्याणि प्रक्षिपेत् -

१. शङ्खे-कलशोदकम्

२. सामान्यार्घ्ये - कलशोदकम्, चन्दनम् ।

३. विशेषार्घ्ये - कलिङ्ग-कोशातक-फल-पुष्प-चन्दन-अक्षतादीनि ।

४. पाद्यपात्रे -श्यामाक-दूर्वा-विष्णुक्रान्ता-पुष्प-चन्दनादीनि ।

५. अर्घ्यपात्रे - सर्षप-तिल-यव-दूर्वा-कुशा-दधि-पुष्प-अक्षत-कुङ्कुम-पूग-तीर्थजलानि ।

६. आचमनीयपात्रे - जातिफल-लवङ्ग-चन्दन-कङ्कोलादि ।

७. मधुपर्कपात्रे - दधिमधुघृताान ।

८. शुद्धकलशोदके कुशा-गन्ध-पुष्प-फलानि ।

पीठपूजनप्रकारः

देवीयन्त्रं मनोहरपीठे संस्थाप्य अर्घ्योदकेनाभ्युक्ष्य षट्काणे - ॐ ओङ्कारपीठाय नमः । अष्टदले - ॐ पूं पूर्णागिरिपीठाय नमः । चतुरस्रे - ॐ कां कामरूपपीठाय नमः, इति गन्धादिभिः सम्पूज्य पूजापीठस्य बहिश्चतुर्दिक्षु स्वाग्रमारभ्य प्रादक्षिण्येन पूर्वे - ॐ गं गणेशाय नमः । दक्षिणे - ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः । पश्चिमे - ॐ पां पादुकाभ्यो नमः । उत्तरे - ॐ बं बटुकाय नमः । पीठस्य बहिराग्नेयादिकोणेषु । आग्नेये - ॐ जं जयायै नमः । नैर्ऋत्ये -

ॐ विं विजयायै नमः । वायव्ये - ॐ जं जयन्त्यै नमः । ईशाने- ॐ अं अपराजितायै नमः । इति गन्धादिभिः सम्पूज्य पीठस्य चतुर्दिक्षु क्रमेण पूर्वादिप्रादक्षिण्येनैताः सम्पूजयेत् तत्र पूर्वे - १. ॐ विं विष्णुमायायै नमः । २. ॐ चें चेतनायै नमः । ३. ॐ बुं बुद्ध्यै नमः । ४. ॐ निं निद्रायै नमः । ५. ॐ क्षुं क्षुधायै नमः, इति पञ्च शक्तीः सम्पूज्य दक्षिणे - १. ॐ छां छायायै नमः । २. ॐ शं शक्त्यै नमः । ३. ॐ तृं तृष्णायै नमः । ४. ॐ क्षां क्षान्त्यै नमः । ५. ॐ जां जात्यै नमः । ६. ॐ लं लज्जायै नमः । इति षट् शक्तीः सम्पूज्य, पश्चिमे - १. ॐ शां शान्त्यै नमः । २. ॐ श्रं श्रद्धायै नमः । ३. ॐ कां कान्त्यै नमः । ४. ॐ लं लक्ष्म्यै नमः । ५. ॐ धृं धृत्यै नमः । ६. ॐ वृं वृत्त्यै नमः । इति षट् शक्तीः सम्पूज्य, उत्तरे - १. ॐ स्मृं स्मृत्यै नमः । २. ॐ दं दयायै नमः । ३. ॐ तुं तुष्ट्यै नमः । ४. ॐ पुं पुष्ट्यै नमः । ५. ॐ मां मात्रे नमः । ६. ॐ भ्रां भ्रान्त्यै नमः । इति षट् शक्तीः सम्पूज्य, नालमूले आधारादिचतुष्टयं पूजयेत् ।

ऊर्ध्वोर्ध्वक्रमेण - १. ॐ आं आधाराय नमः । २. ॐ कूं कूर्माय नमः । ३. ॐ शें शेषाय नमः । ४. ॐ पृं पृथिव्यै नमः । ५. ॐ नां नालाय नमः । ६. ॐ पं पद्माय नमः । इति सम्पूज्य ज्ञानामृतसुतृप्तात्मा मण्डलार्चनमारभेत् । तत्राष्टपत्रे पूर्वादीशानान्ता पूजा - पूर्वदले १. ॐ ब्रं ब्रह्माण्यै हंसवाहनायै नमः । आग्नेयदले- २. ॐ मां माहेश्वर्यै वृषभारूढायै नमः । दक्षिणदले - ३. ॐ कौं कौमार्यै मयूरवाहनायै नमः । नैर्ऋत्ये - ४. ॐ वैं वैष्णव्यै गरुडोपरि संस्थितायै नमः । पश्चिमे - ५. ॐ यं यज्ञवाराह्यै दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरायै नमः । वायव्ये ६. ॐ नां नारसिंह्यै महास्वनायै नमः । उत्तरे - ७. ॐ ऐं ऐन्द्र्यै गजराजसमारूढायै

नमः । ईशाने - ८. ॐ चां चामुण्डायै गणनाथपरिवारायै सदा रुद्रेण संयुतायै मुण्डमण्डितायै नमः ।

एताः सम्पूज्य षट्कोणदेवीर्ब्रह्माणीकर्णिकास्पर्शि-कोणमारभ्य दक्षावर्तेन पूजयेत् । यथा - अग्रकोणे १. ॐ नं नन्दजायै हेमगर्भायै नमः । आग्नेयकोणे - २. ॐ रं रक्तदन्तिकायै सुरक्तायै नमः । नैर्ऋत्ये - ३. ॐ शां शाकम्भर्यै नीलायै नम; । पश्चिमे - ४. ॐ दुं दुर्गायै सर्वदुःखहारिण्यै नमः । वायव्ये - ५ ॐ भीं भीमायै दंष्ट्राञ्चितमुखायै नीलायै पात्रशिरोधरायै नमः । ६. ईशाने - ॐ भ्रां भ्रामर्यै तेजोमण्डलदुर्धर्षायै वरदायै नमः । इति गन्धादिभिः सम्पूजयेत् -

पीठदेवतार्चनम्

ॐ मं मण्डूकाय नमः । ॐ आं आधारशक्त्यै नमः । ॐ मूं मूलप्रकृत्यै नमः । ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः । तदुपरि ॐ आं आदिकूर्माय नमः । ॐ अं अनन्ताय नमः । ॐ आं आदिवराहाय नमः । ॐ पृं पृथिव्यै नमः । तदुपरि - ॐ अमृतार्णवाय नमः । ॐ रं रत्नद्वीपाय नमः । ॐ हें हेमगिरये नमः । ॐ नं नन्दनोद्यानाय नमः । ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः ।

ॐ मणिभूतलाय नमः । ॐ दिं दिव्यमण्डपाय नम; । ॐ सं स्वर्णवेदिकायै नमः । ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः । ॐ धं धर्माय नमः । ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः । ॐ वैं वैराग्याय नमः । ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः । पुनः पूर्वे - ॐ अं अनैश्वर्याय नमः । पुनर्मध्ये- ॐ सं सत्त्वाय नमः । ॐ प्रं प्रबोधात्मने नमः । ॐ रं रजसे नमः । ॐ प्रं प्रकृत्यात्मने नमः । ॐ तं तमसे नमः । ॐ मों मोहात्मने नमः । ॐ सों सोममण्डलाय नमः । ॐ सूं सूर्यमण्डलाय नमः । ॐ वं वह्निमण्डलाय नमः । ॐ मां

मायातत्त्वाय नमः । ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः । ॐ शिं शिवतत्त्वाय नमः । ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः । ॐ मं महेश्वराय नमः । ॐ आं आत्मने नमः । ॐ अं अन्तरात्मनेनमः । ॐ पं परमात्मने नमः । ॐ जीं जीवात्मने नमः । ॐ ज्ञं ज्ञानात्मने नमः । ॐ कं कन्दाय नमः । ॐ नीं नीलाय नमः । ॐ पं पद्माय नमः । ॐ मं महापद्माय नमः ॐ रं रत्नेभ्यो नमः ॐ कें केसरेभ्यो नमः । ॐ कं कर्णिकायै नमः । इति गन्धादिभिः सम्पूजयेत् ।

अथ नवशक्तिपूजनम्

पूर्वे १. ॐ नन्दायै नमः । आग्नेये - २. ॐ भगवत्यै नमः । दक्षिणे - ३. ॐ रक्तदन्तिकायै नमः । नैर्ऋत्ये ४. ॐ शाकम्भर्यै नमः । पश्चिमे - ५. ॐ दुर्गायैनमः । वायव्ये - ६. ॐ भीमायै नम; । उत्तरे - ७. ॐ कालिकायै नमः । ईशाने - ८. भ्रामर्यै नमः । मध्ये ९. ॐ शिवदूत्यै नमः । इति गन्धादिभिः सम्पूजयेत् ।

यन्त्रविराजमानदेवतार्चनम्

स्वस्तिवाचनकलशस्थापनविधिना कलशे वरुणपूजनं विधाय पूर्णपात्रोपरि यन्त्रं स्थापयेत् (यन्त्राभावे रक्तवस्त्रोपरि यन्त्रं लिखेत्)

यन्त्रस्थमध्यबिन्दौ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै त्रिगुणात्मिकायै भगवत्यै दुर्गादेव्यै नमः । आवाहयामि स्थापयामि ।

बिन्दुं परितः -१. ॐ गुरवे नमः । २. ॐ परमगुरवे नमः । ३. ॐ परात्परगुरवे नमः । ४. ॐ परमेष्ठिगुरवे नमः । ५. ॐ ऐं हृदयाय नमः । ६. ॐ ह्रीं शिरसे नमः । ७. ॐ क्लीं शिखायै नमः । ८. ॐ चामुण्डायै कवचाय नमः। ९.

ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय नमः । १०. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय नमः ।

त्रिकोणे प्रादक्षिण्यक्रमेण - १. ॐ स्वरया सह विधात्रे नमः । २. ॐ श्रिया सह विष्णवे नमः । ३. ॐ उमया सह शिवाय नमः । दक्षिणे - ४. ॐ क्षुं सिंहाय नमः । ५. वामे - ॐ हुं महिषाय नमः । षट्कोणेषु - आग्नेयकोणे - १. ॐ ऐं नन्दजायै नमः । नैर्ऋत्ये - २. ॐ ह्रीं रक्तदन्तिकायै नमः। वायव्यकोणे ३. ॐ क्लीं शाकम्भर्यै नमः । ईशानकोणे ४. ॐ दुं दुर्गायै नमः । मध्यभागे - ५. ॐ हुं भीमायै नमः । दिक्षु - ६. ॐ ह्रीं भ्रामर्यै नम; ।

अष्टदले - प्रादक्षिण्यक्रमेण - १. ॐ ऐं ब्राह्म्यै नमः । २. ॐ ह्रीं माहेश्वर्यै नमः । ३. ॐ क्लीं कौमार्यै नमः । ४. ॐ ह्रीं वैष्णव्यै नमः । ५. ॐ हुं वाराह्यै नमः । ६. ॐ क्ष्यौं नारसिंह्यै नमः । ७. ॐ लं ऐन्द्र्यै नमः । ८. ॐ स्फ्रें चामुण्डायै नमः ।

चतुर्विंशतिदलेषु प्रादक्षिण्यक्रमेण - १. ॐ विं विष्णुमायायै नमः २. ॐ चें चेतनायै नमः । ३. ॐ बुं बुद्ध्यै नमः ४. ॐ निं निद्रायै नमः । ५. ॐ क्षुं क्षुधायै नमः । ६. ॐ छां छायायै नमः । ७. ॐ शं शक्त्यै नमः । ८. ॐ तृं तृष्णायै नमः । ९. ॐ क्षां क्षान्त्यै नमः । १०. जां जात्यै नमः । ११. ॐ लं लज्जायै नमः । १२. ॐ शां शान्त्यै नमः । १३. ॐ श्रं श्रद्धायै नमः । १४. ॐ कां कान्त्यै नमः । १५. ॐ लं लक्ष्म्यै नमः । १६. ॐ धृं धृत्यै नमः । १७. ॐ वृं वृत्त्यै नमः । १८. ॐ श्रुं श्रुत्यै नमः । १९. ॐ स्मृं स्मृत्यै नमः । २०. ॐ दं दयायै नमः । २१. ॐ तुं तुष्ट्यै नमः । २२. ॐ पुं पुष्ट्यै नमः । २३. ॐ मां मातृभ्यो नमः । २४. ॐ भ्रां भ्रान्त्यै नमः ।

भूपुरे कोणचतुष्टये आग्नेयादिक्रमेण - आग्नेये - १. ॐ गं गणपतये नमः । २. ॐ क्षें क्षेत्रपालाय नमः । ३. बं बटुकाय नमः । ४. ॐ यों योगिन्यै नमः ।

भूपुरे पूर्वादिक्रमेण - पूर्वे १. ॐ इन्द्राय नमः । आग्नेये २. ॐ अग्नये नमः । दक्षिणे - ३. ॐ यमाय नमः । नैर्ऋत्ये- ४. ॐ निर्ऋतये नमः । ५. पश्चिमे - ॐ वरुणाय नमः । वायव्ये - ६. ॐ वायवे नमः । उत्तरे - ७. ॐ सोमाय नमः (कुबेराय नमः) ईशाने - ८. ॐ ईशानाय नमः । उर्ध्वम् - ९. ॐ ब्रह्मणे नमः । अधः १०. ॐ अनन्ताय नमः ।

तद् बाह्ये - पूर्वे - १. ॐ वज्राय नमः । आग्नेये - २. शक्तये नमः । दक्षिणे ३. ॐ दण्डाय नमः । नैर्ऋत्ये ४. ॐ खड्गाय नमः । पश्चिमे - ५. ॐ पाशाय नमः । वायव्ये -६. ॐ अङ्कुशाय नमः । उत्तरे ७. ॐ गदायै नमः । ईशाने - ८. ॐ त्रिशूलाय नमः । ऊर्ध्वम् - ९. ॐ पद्माय नमः । अधः १०. ॐ चक्राय नमः । कलशाद् बहिः - नवार्णमन्त्रेण- १. ॐ कादम्बर्यै नमः । २.ॐ उल्कायै नमः । ३. ॐ कराल्यै नमः । ४. ॐ रक्ताक्ष्यै नमः । ५. ॐ श्वेताक्ष्यै नमः । ६. ॐ हरिताक्ष्यै नमः । ७. ॐ यक्षिण्यै नमः । ८. ॐ काल्यै नमः । ९. ॐ सुरज्येष्ठायै नमः । १०. ॐ सर्पराज्यै नमः । ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे 'इति मन्त्रेण यन्त्रस्थदेवान् गन्धादिभिः पूजयेत् ।

प्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः

सङ्कल्पः -

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अस्याः स्वर्णमयीश्रीदुर्गादेवता-प्रतिमाया अग्नितपन. - ताडनावघातादिपरिहारार्थं अग्न्युत्तारणपूर्वकं प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये ।

देव्या नूतनस्वर्णप्रतिमां घृतेनाभ्यज्य वस्त्रेणावेष्ट्य पात्रे निधाय तदुपरि दुग्धमिश्रितजलधारां पातयेत् ।

मन्त्राः -

ॐ समुद्रस्य त्त्वावकयाग्ग्ने परिव्ययामसि ।

पावकोऽअस्स्मभ्यंश्छं शिवोभव ।। (यजु.१७-४)

ॐ हिमस्यत्त्वा जरायुणाग्ग्ने परिव्ययामसि ।

पावकोऽअस्स्मभ्यंश्छं शिवोभव ।। (यजु.१७-५)

ॐ उपज्ज्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्ष्वा ।

अग्ग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि

सेमन्नो यज्ञं पावकवर्ण्णं छं शिवङ्कृधि ।। (यजु.१७-६)

ॐ अपामिदन्न्ययन छं समुद्रस्य निवेशनम् ।

अन्न्याँस्ते अस्स्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्स्मभ्यं छं शिवो भव ।। (यजु.१७-७)

ॐ अग्ग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया ।

आ देवान्वक्षि यक्षि च ।। (यजु.१७-८)

ॐ स नः पावक दीदिवोऽग्ग्ने देवाँ २ ऽइहावह ।

उप यज्ञ छं हविश्च्च नः ।। (यजु.१७-९)

ॐ पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन्नुरुचऽउषसो न भानुना ।

तूर्व्वन्न यामन्नेतशस्य नू रणऽआ यो घृणेन ततृषाणोऽअजरः (यजु.१७-१०)

ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे ।

अन्न्याँस्त्ते अस्म्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्यं छं शिवो भव ।। (यजु.१७-११)

ॐ नृषदे व्वेडप्सुषदे व्वेड्बर्हिषदे ।

व्वेड्वनसदे व्वेड्ड् स्वर्व्विदे व्वेट् ।। (यजु.१७-१२)

ॐ ये देवा देवानां य्यज्ञिया यज्ञियाना छं संव्वत्सरीणमुप भागमासते ।

अहुतादो हविषो यज्ञेऽ अस्म्मिन्त्स्वयम्पिबन्तु मधुनो घृतस्य ।। (यजु.१७-१३)

ॐ ये देवा देवेष्ष्वधि देवत्वमायन्न्ये ब्रह्मणः पुरऽएतारोऽ अस्य ।

येब्भ्यो नऽऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्व्याऽअधिस्न्नुषु ।। (यजु. १७-१४)

ॐ प्राणदाऽअपानदा व्व्यानदा व्वर्चोदा व्वरिवोदाः ।

अन्न्याँस्त्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽ अस्मभ्यं छं शिवो भव ।। (यजु.१७-१५)

अथ प्राणप्रतिष्ठा

विनियोगः

ॐ अस्य प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि, क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवताः, आं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम् , ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः एताशक्तयः, अस्यां नूतनस्वर्णमयीदुर्गादिवताया मूर्तौ प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः, दुर्गादेवताया मूर्तौ प्राणा इह प्राणाः । ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः, दुर्गादेवताया मूर्तौ जीव इह स्थितो भवतु । ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः, दुर्गादेवताया मूर्तौ वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः-श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि सर्वेन्द्रियाणि, इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु, अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ।।

देव्या दक्षिणकर्णे मूलमन्त्रं दशवारं जपेत् ।

यन्त्रगर्भे कृतप्राणप्रतिष्ठां स्वर्णमयीं देवीमूर्तिं संस्थाप्य पूजयेत्

श्रीदुर्गापूजा-पद्धतिः

प्रधानपूजा-प्रयोगः

पाण्डेयरचितानि देवीध्यानानि ।

महाकाली

काम्या कामारिकान्ता कलितकृशकटी कर्षणी कौणपानां
क्रव्यादानां कृतान्ता कलकलकटका किङ्किणीक्वाणकान्ता ।
क्रूराणां कृत्तकाया कविकुलककिता केश्वरी कालरात्रिः
काली कल्याणकर्त्री कलयतु कुशलं कोविदैः कीर्त्यमाना ॥१॥

महालक्ष्मीः

लक्ष्मीर्लावण्यलीला लघुलभसलता लालसा लक्षपानां
लोकालङ्कारलौल्या लगडकलगिता लोपयन्ती लुलायम् ।
लक्षण्या लाभलक्ष्या ललितलयलया लावनी लोलुभानां
लाक्षालेपैर्ललामा लघयतु लघुतां लोहिनी लेखलभ्या ॥२॥

महासरस्वती

श्रौतीशिक्षास्वरूपा सरसिजजसुता सामसङ्गीतसक्ता
शान्तस्वान्ता सुरम्या सितसरसिरुहे संस्थिता सर्वशुक्ला ।
स्तुत्या स्तोमैः सुराणां सदसि सहचरैः सेवकैः साध्यसङ्घैः
शुद्धा शीतांशुसौम्या सुखयतु सततं सारदा शारदा सा ॥३॥

दुर्गा

दन्तिद्वेष्योर्ध्वदेहा दनुजदवदवा दाडिमीदन्तदीप्ति-
र्देवेभ्यो दानदात्री दितदितिजदला दुःखदारिद्र्यदात्री ।
दैवज्ञा दिव्यदर्शा दिशि दिशि दरदा दुर्गदैत्येन्द्रदात्री
दुर्गा दुर्दम्यदेशा दलयतु दुरितं दातदैतेयदर्पा ॥४॥

शैलपुत्री

शम्भोः पत्नी सती या जनककृतमखे मानहानेः स्वपत्यु-
र्योगेन त्यक्तदेहा पुनरपि जनने प्राप तस्यार्धदेहम् ।
तां देवीं देववन्द्यां कमलसुमधरां शूलहस्तां सिताङ्गीं
वन्देऽहं शैलपुत्रीं सिततरवृषभे संस्थितां चन्द्रचूडाम् ॥५॥

ब्रह्मचारिणी

या वर्षाणां सहस्रं व्रतनियमवती बिल्वपत्राण्यखादीत्
तानि त्यक्त्वा च पश्चाद् दृढतमतपसे ख्यातिमापार्पणेति ।
वामे हस्ते च कुण्डीं तदितरसुकरे याक्षमालां दधाति,
वन्दे तामीशपत्नीं बहुविधवरदां ब्रह्मचारिस्वरूपाम् ॥६॥

चन्द्रघण्टा

दन्तिद्वेष्योपविष्टां प्रबलदशभुजैश्चण्डशस्त्रास्त्रधर्त्रीम्
तप्तस्वर्णाभदेहां रणकरणपरां दुष्टदैत्येन्द्रदात्रीम् ।
घण्टाकारार्धचन्द्रं स्वशिरसि दधतीं रक्तवस्त्राभिरामाम्
वन्देऽहं चन्द्रघण्टां दितिकुलभयदां स्वीयघण्टानिनादैः ॥७॥

कूष्माण्डा

ब्रह्माण्डं निर्ममौ या मिहिरनिभविभा मन्दहासेन पूर्वम्
कुण्डीं चापञ्च बाणं कमलमथ सुधापूर्णकुम्भञ्च चक्रम् ।

कौमोदीमक्षमालां रुचिरवसुभुजैरुद्वहन्तीं शरण्याम्,
कूष्माण्डां तां प्रवन्दे सकलसुरनुतां सिंहपृष्ठाधिरूढाम् ॥८॥

स्कन्दमाता

यस्या अङ्के कुमारो विलसति नितरां देवसेनाग्रयायी,
हस्ताब्जैः पद्मयुग्मं वरमथ तनयं या हि धत्ते सिताङ्गी ।
भक्तेभ्यो या प्रदत्ते निजपरमपदं कोटिसूर्यप्रकाशा,
पायान्नः स्कन्दमाता स्मरहररमणी सा मृगेन्द्राधिरूढा ॥९॥

कात्यायनी

पुत्रीरूपे प्रजाता यमनियमवतो या हि कात्यायनस्य,
यां भेजुर्गोपबालाः पतिमभिलषितं लब्धुकामाश्च कृष्णम् ।
उत्तप्तस्वर्णगात्री वरमभयमसिं नीरजं या दधाति,
पायात् कात्यायनी सा सुरमुनिमनुजान् रम्यसिंहासनस्था ॥१०॥

कालरात्रिः

गाढध्वान्ताभकाया चरणकरगलाबद्धशम्याभमाला,
विद्युत्तेजस्त्रिनेत्रा हुतवहकणमुक् श्वासनिःश्वासवाता ।
हस्तैर्धत्ते चतुर्भिर्वरमभयमसिं कण्टकं लोहलं या,
तां वन्दे कालरात्रिं शिथिलशिरसिजां तैललिप्तां खरस्थाम् ॥११॥

महागौरी

चतुर्हस्तैर्धत्ते वरमभयमुद्राञ्च डमरुम्,
त्रिशूलं या देवी हिमशशिसिताङ्गी सुखकरी ।
तपःपूता दिव्या हिमगिरिसुता सा भगवती,
महागौरी पायात् सितवृषभरूढा शरणदा ॥१२॥

सिद्धिदात्री

गन्धर्वैः सिद्धसङ्घैरदितिदितिसुतैर्मानवैः सेव्यमाना,
अष्टौ सिद्धीः प्रदत्ते धृतकमलगदाशङ्खचक्राभिरामा ।
यस्या एव प्रसादान्मदनमदहरोऽप्यर्धनारीश्वरोऽभूत्
पायात् सा सिद्धिदात्री जननभयहरा विश्वकल्याणकर्त्री ॥१३॥

महाकालीध्यानम्

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः,
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकाम्
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥१॥

महालक्ष्मीध्यानम्

अक्षस्त्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां,
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां,
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥२॥

सरस्वतीध्यानम्

घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥३॥

दुर्गाध्यानम्

ध्यायामि दुर्गां दुरितौघनाशिनीं,
प्रचण्डदैत्यौघविनाशकारिणीम् ।
शिवां महेशार्द्धशरीरधारिणीं,
वंशाभिरक्षां सततं विधात्रीम् ॥४॥

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी - महासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेवतायै नमः ध्यायामि ॥

आवाहनम्

आवाहये शशिधरां नवरत्नकान्तिं
विद्युत्प्रभां सकलदैत्यविनाशदक्षाम् ।
सिंहस्थितां सकलशस्त्रधरां त्रिनेत्रां,
दुर्गां सुरैः कृतनतिं नवशक्तियुक्ताम् ॥

मन्त्रः -

ॐ हिर॑ण्यवर्णां॒ हरि॑णीं सु॒वर्ण॑रज॒तस्र॑जाम् ।
च॒न्द्रां हि॒रण्म॑यीं ल॒क्ष्मीं जा॒तवे॑दो म॒माव॑ह ॥

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । आवाहनार्थे गन्धाक्षतान् समर्पयामि ।

आसनम् –

जटितमणिमनोज्ञे निर्मिते स्वर्णदण्डै-
र्विविधकुसुमकीर्णे तूलिकामार्दवाढ्ये ।
भगवति शिवकान्ते हेमसिंहासने त्व-
मुपविश पदयुग्मं स्वर्णपीठे निधेहि ॥

मन्त्रः -

तां म॒ आव॑ह जातवेदो ल॒क्ष्मीमन॑पगा॒मिनी॑म् । यस्यां॒ हिर॑ण्यं वि॒न्देयं॒ गामश्वं॒ पुरु॑षान॒हम् ॥

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । आवाहनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि ।

पाद्यम् –

श्यामाकपङ्कजरुहागिरिकर्णिकाक्तं
दूर्वासुगन्धिसुमचन्दनतीर्थतोयम् ।
पाद्यं पवित्रमिदमम्बुजपादशुद्ध्यै
दुर्गे! गृहाण दयया शिववल्लभे! त्वम् ।।

मन्त्रः -

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् । श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ।।

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । चरणप्रक्षालनार्थं गङ्गाजलं समर्पयामि ॥

अर्घ्यः -

दूर्वाकुशाग्रदधिकुङ्कुमनीरपूग -
सिद्धार्थतण्डुलसुमैः सहितं पवित्रम् ।
अर्घ्यं प्रदत्तमिममम्बुजतुल्यहस्ते
दुर्गे! गृहाण कृपया सुरवृन्दवन्द्ये!।।

मन्त्रः -

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् । पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । दक्षिणहस्ते अर्घ्यं समर्पयामि ।

आचमनम् –

जातीफलैः सुरसुमैः सहितं पवित्रं
कक्कोलचन्दनयुतं शिवदे! शिवे! त्वम् ।
हे शैलपुत्रि! मुखशोधनकर्मसिद्ध्यै
दुर्गे! गृहाण दययाचमनीयमम्भः ।।

मन्त्रः -

च॒न्द्रां प्र॑भा॒सां य॒शसा॒ ज्वल॑न्ती॒ं श्रियं॑ लो॒के दे॒वजु॑ष्टामुदा॒राम् । तां प॒द्मनी॑मी॒ं शर॑णम॒हं प्रप॑द्येऽल॒क्ष्मीर्मे॑ नश्यता॒ं त्वां वृ॒णे ।।

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । आचमनीयं जलं समर्पयामि ।।

मधुपर्कः -

दध्ना घृतेन मधुना मधुनो मधव्य –
मन्नाद्यरूपमतुलं बलवृद्धिबीजम् ।
मिश्रीकृतं हि परमं शुभकांस्यपात्रे
दुर्गे! गृहाण मधुपर्कमिमं विशुद्धम् ।।

मन्त्रः -

ॐ मधु॒व्वाता॑ऋताय॒ते मधु॑क्षरन्ति॒ सिन्ध॑वः । माध्वी॑र्न्नः स॒न्त्वोष॑धीः ।। (यजु० १३-२७)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । मधुपर्कं समर्पयामि ॥

जातीफलैः सुरसुमैः सहितं पवित्रं
कक्कोलचन्दनयुतं शिवदे! शिवे! त्वम् ।
हे शैलपुत्रि! मुखशोधनकर्मसिद्ध्यै
दुर्गे! गृहाण दययाचमनीयमम्भः ॥

मन्त्रः -

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् । तां पद्मनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । मधुपर्कान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥

अभ्यङ्गः (सुगन्धिततैलमर्दनम्)

सोमस्वरूपमनघं तिलजं पुराणे
प्रख्यातमेतदममलं मुनिभिश्च तेन ।
तैलेन गन्धयुतसूनसुवासितेन
स्वभ्यङ्गमङ्गनिकरे विदधामि दुर्गे! ॥

मन्त्रः -

ॐ तेजोऽसि तेजो मयि धेहि वीर्यमसि वीर्यं मयि
धेहि बलमसि बलं मयि धेह्योजोऽस्योजो मयि
धेहि मन्युरसि मन्युं मयि धेहि सहोऽसि सहो मयि धेहि।

(यजु.१९-९)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सवाहनायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । अङ्गलेपनार्थं पुष्परससारभूतं सुगन्धितैलं समर्पयामि ॥

गङ्गादितीर्थजलस्नानम् –

कर्पूरसौरभयुतं स्नपनीयनीरं
गङ्गादितीर्थहृतमम्बुजगन्धयुक्तम् ।
सौवर्णकुम्भनिहितं नगराजजाते!
पीयूषतुल्यममलं विनिवेदयामि ॥

मन्त्रः –

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । स्नानीयं तीर्थजलं समर्पयामि ॥

दुग्धस्नानम् –

कैलाशकाशशिवहाससुधावदातम्
तेजोमयं प्रचुरशक्तिविवर्धनञ्च ।
गव्यं भवानि! जनजीवनसारभूतं,
स्नानाय दुग्धममलं विनिवेदयामि ॥

मन्त्रः -

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ।। (यजु.१८-३६)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । स्नानीयं दुग्धं समर्पयामि ।।

शुद्धोदकस्नानम् –

मन्त्रः -

ॐ शुद्धबालः सर्वशुद्धबालो मणिबालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः। (यजु.२४-३)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । दुग्धस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, आचमनीयं सलिलं समर्पयामि ।।

दधिस्नानम् –

द्रप्सं पयस्यममलं मधुरञ्च गव्यम्
चन्द्रप्रभं सकलरोगविनाशकञ्च ।
दैत्यौघनाशनपरे! तनुशुद्धिहेतोः
स्नानाय पावनमदो दयया गृहाण ।।

मन्त्रः -

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयूंषि तारिषत् ।।
(यजु.२३-३२)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादिव्यै नमः । स्नानीयं दधि समर्पयामि ॥

शुद्धोदकस्नानम् –

मन्त्रः -

ॐ शुद्धबालः᳟ सर्व्वशुद्धबालो मणिबालस्त्त आश्विनाः᳟
श्येतः श्येताक्षोरुणस्त्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णा यामाऽ
अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः᳟ पार्ज्जन्याः᳟। (यजु.२४-३)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादिव्यै नमः । दधिस्नानान्ते शुद्धं स्नानीयं जलं समर्पयामि । शुद्धस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ।

घृतस्नानम् –

आयुःप्रवर्धनकरं नवनीतजातं
सर्पिर्मतिप्रदमिदं सुरधेनुसारम् ।
दत्तं मया दितिजदानवनाशदक्षे!
स्नानार्हमेतदमलं कृपया गृहाण ॥

मन्त्रः -

ॐ घृतम्मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो
घृतम्म्वस्य धाम । अनुष्ष्वधमावह मादयस्व
स्वाहा कृतं व्वृषभ व्वक्षि हव्यम् ॥ (यजु.१७-८८)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादिव्यै नमः । स्नानीयं घृतं समर्पयामि ।

शुद्धोदकस्नानम् –

मन्त्रः -

ॐ शुद्धबालः सर्व्वशुद्धबालो मणिबालस्त आश्विनाः
श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णा यामाऽ
अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः। (यजु.२४-३)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

मधुस्नानम् –

क्षौद्रं सुसञ्चितमदो मधुमक्षिकाभिः
शुद्धीकृतं कनकपात्रधृतं प्रमिष्टम् ।
स्नानाय पुष्परससारमघौघहन्त्रि!
दत्तं गृहाण दयया शितिकण्ठकान्ते! ।।

मन्त्रः -

ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः । मधुनक्तमुतोषसो
मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधुद्यौरस्तुनः पिता ।
मधुमान्नो व्वनस्प्पतिर्म्मधुमाँ२अस्तु सूर्य्यः ।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः ।। (यजु.१३-२६)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै

श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । स्नानीयं मधु समर्पयामि ।

शुद्धोदकस्नानम् –

मन्त्रः -

ॐ शुद्धबालꣳ सर्व्वशुद्धबालो मणिबालस्त्त आश्विनाꣳ श्येतं श्येताक्षोरुणस्त्ते रुद्द्राय पशुपतयै कर्ण्णा यामाऽ अवलिप्ता रौद्द्रा नभौरूपाꣳ पार्ज्जन्याः । (यजु.२४-३)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

शर्करास्नानम् –

ईक्षूद्भवां सुमधुरां रससारभूता-
मङ्गप्रसक्तमलनाशनकर्मदक्षाम् ।
ज्योत्स्नाप्रभां सकलमिष्टपदार्थबीजां
दुर्गे! गृहाण शुभदे! सुसितां प्रदत्ताम् ।।

मन्त्रः -

अपाꣳरसमुद्द्वयसꣳ सूर्य्ये सन्तꣳ समाहितम् ।
अपाꣳ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्म्युत्तम -
मुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्त्वा जुष्टङ्गृह्णाम्म्येष ते योनिरिन्द्राय त्त्वा जुष्टतमम् । (यजु.९-३)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । स्नानीयां शर्करां समर्पयामि ।

शुद्धोदकस्नानम् –

मन्त्रः -

ॐ शुद्धबालः सर्व्वशुद्धबालो मणिबालस्त आश्विनाः
श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽ
अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः। (यजु.२४-३)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । आचमनीयं जलं च समर्पयामि ।

पञ्चामृतस्नानम् –

दध्ना घृतेन पयसा मधुना रसेन,
मिश्रीकृतं विमलया सितया तथैव ।
स्नानार्थमेतदमलं मृतिभीतिनाशं,
पञ्चामृतं गिरिसुते! विनिवेदयामि ।।

मन्त्रः -

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेभवत्सरित् ।(यजु.३४-११)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । स्नानीयं पञ्चामृतं समर्पयामि ।

शुद्धोदकस्नानम् –

मन्त्रः -

ॐ शुद्धबालꣳ सर्व्वशुद्धबालो मणिबालस्त्त आश्विनाꣳ श्येतः श्येताक्षोरुणस्त्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णा यामाऽ अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाꣳ पार्ज्जन्याꣳ। (यजु.२४-३)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । आचमनीयं जलञ्च समर्पयामि ।

उद्वर्तनम् –

गोधूमचूर्णसुमकेसरकाञ्चनीनां,
पिष्टं सुगन्धममलं तिलजेन युक्तम् ।
उद्वर्तनं नगसुते! रमणीयगात्रे
हस्तद्वयेन मृदुलं विदधामि दुर्गे ! ।।

मन्त्रः -

ॐ ताꣳ सवितुर्व्वरेण्यस्य चित्रामाहं व्वृणे सुमतिं व्विश्वजन्न्याम् । यामस्य कण्ण्वोऽ अदुहत्त्प्रपीनाꣳ सहस्रधाराम्पयसा महीङ्गम्। (यजु.१७-७४)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । उद्वर्तनार्थं पिष्टं सुगन्धिवस्तु समर्पयामि ।

तीर्थोदकस्नानम् –

शुद्धाक्षतान्वितमिदं स्नपनीयनीरं,
गङ्गादितीर्थहृतमम्बुजगन्धयुक्तम् ।
सौवर्णकुम्भनिहितं गिरिराजकन्ये!
पीयूषतुल्यममलं विनिवेदयामि ।।

मन्त्रः -

ॐ शुद्धबालः सर्व्वशुद्धबालो मणिबालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णा यामाऽ अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः। (यजु.२४-३)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । तीर्थोदकस्नानं समर्पयामि । आचमनीयञ्च जलं समर्पयामि ।

देव्यथर्वशीर्षेणाभिषेकः -

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः काऽसि त्वं महादेवीति ।।१।। साऽब्रवीत् – अहं ब्रह्मस्वरूपिणी । मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत् । शून्यं चाशून्यं च ।।२।। अहमानन्दानानन्दौ । अहं विज्ञानाविज्ञाने । अहं ब्रह्माब्रह्मणी वेदितव्ये । अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि । अहमखिलं जगत् ।।३।। वेदोऽहमवेदोऽहम् । विद्याहमविद्याहम् । अजाहमनजाहम् । अधश्चोर्ध्वं च तीर्यक्चाहम् ।।४।। अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि । अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः । अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि । अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ ।।५।। अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि । अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि ।।६।। अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये

यजमानाय सुन्वते । अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् । अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे । य एवं वेद । स दैवीं सम्पदमाप्नोति ॥७॥ ते देवा अब्रुवन् -

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥८॥
तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् ।
दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः ॥९॥
देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति ।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु ॥१०॥
कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम् ।
सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम् ॥११॥
महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥१२॥
अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव ।
तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः ॥१३॥
कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः ।
पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्यैषा विश्वमातादिविद्योम् ॥१४॥

एषाऽऽत्मशक्तिः । एषा विश्वमोहिनी । पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा । एषा श्रीमहाविद्या । य एवं वेद स शोकं तरति ॥१५॥ नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः ॥१६॥ सैषाष्टौ वसवः । सैषैकादश रुद्राः । सैषा द्वादशादित्याः । सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च । सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिद्धाः । सैषा सत्त्वरजस्तमांसि । सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी । सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः । सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतींषि । कलाकाष्ठादिकालरूपिणी । तामहं प्रणौमि नित्यम् ।

पापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम् ।
अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम् ।।१७।।
वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम् ।
अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम् ।।१८।।
एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः ।
ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः ।।१९।।
वाङ्माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम् ।
सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्तष्टात्तृतीयकः ।
नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः ।
विच्चे नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः ।।२०।।
हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातः सूर्यसमप्रभाम् ।
पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम् ।
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे ।।२१।।
नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम् ।
महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम् ।।२२।।

यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया । यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता । यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या । यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यते अजा । एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका । एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका । अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्याजैका नैकेति ॥२३॥

मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी ।
ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी
यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता ।।२४।।
तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम् ।
नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम् ।।२५।।

इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति । इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति - शतलक्षं प्रजप्त्वापि सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति । शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः ।

दशवारं पठेद् यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते ।
महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः ।।२६।।

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति । सायं प्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति । निशीथे तुरीयसन्ध्यायां जप्त्वा वाकसिद्धिर्भवति । नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासान्निध्यं भवति । प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति । भौमाश्विन्यां महादेवीसन्निधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति । स महामृत्युं तरति य एवं वेद । इत्युपनिषत् ।

शुद्धोदकस्नानम् –

मन्त्रः -

ॐ शुद्धबालः सर्व्वशुद्धबालो मणिबालस्त आश्विनाः
श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णा यामाऽ
अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः । (यजु.२४-३)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । अभिषेकान्ते शुद्धस्नानीयं तीर्थोदकं समर्पयामि, आचमनीयं जलञ्च समर्पयामि ।

शरीरप्रोञ्छनम् –

आर्द्रं शिवे! विमलकोमलदिव्यदेहं
क्लिन्नानि भव्यरुचिभाञ्जि मनोहराणि ।

अङ्गानि ते नगसुते! जलशोषकेन
सम्प्रोञ्छयामि मृदुना पटखण्डकेन ।।

मन्त्रः -

ॐ यज्ञा यज्ञावोऽअग्नये गिरा गिरा च दक्षसे ।
प्रप्रवयममृतंञ्जातवेदसम्प्रियम्मित्रन्नशंर्ठ सिषम् ।। (यजु.२७-४२)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । तवार्द्रं शरीरं सम्प्रोञ्छयामि ।

अधोवस्त्रम् –

कौशेयसूत्ररचितं तपनीयतन्तु-
प्रत्युप्तमेतदमलं मणिरश्मिरम्यम् ।
कौपीनयुक्तकमिदं गिरिराजकन्ये!
पादारविन्दयुगले परिधेहि धौतम् ।।

मन्त्रः -

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्कीर्तिमृध्दिं ददातु मे ।

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । अधोवस्त्रं समर्पयामि । अधोवस्त्रधारणान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

यज्ञोपवीतम् –

कार्पाससूत्ररचितं नवतन्तुदेवं
ग्रन्थित्रयं हरिहराजसमानरूपम् ।

मन्त्राभिषिक्तकमिदं नगराजकन्ये!
यज्ञोपवीतममलं परिधापयामि ।।

मन्त्रः -

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः
सुरुचोव्वेनऽआवः सबुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाःसतश्च
योनिमसतश्च व्विवः ।।

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । यज्ञोपवीतं समर्पयामि । यज्ञोपवीतधारणान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

उपवस्त्रम् –

रक्ताङ्गरक्षकमिदं तपनीयतन्तु –
प्रत्युप्तमङ्गनिकरे परिधेहि दिव्यम् ।
चण्डातकं बृहतिकां शुभकञ्चुकञ्च,
स्कन्धे दुकूलममलं जटितञ्च रत्नैः ।

मन्त्रः -

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ।।

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । उपवस्त्रं समर्पयामि । उपवस्त्रधारणान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

केशपाशसंस्करणम् –

बहुभिरगरुधूपैः सादरं धूपयित्वा,
भगवति तव केशान् कङ्कतैर्मार्जयित्वा ।
सुरभिभिररविन्दैश्चम्पकैश्चार्चयित्वा
झटिति कनकसूत्रैर्जूटयन्वेष्टयामि ।।

मन्त्र -

ॐ शिरो मे श्रीर्यशो मुखं त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि ।
राजा मे प्राणो अमृतꣳसम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम् ।।

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । केशपाशान् संस्करोमि ।

अलङ्काराः -

धम्मिले तव देवि! हैमकुसुमान्याधाय भालस्थले
मुक्ताराजिविराजिहेमतिलकं नासापुटे मौक्तिकम् ।
मातमौक्तिकजालिकाञ्च कुचयोः सर्वांगुलीषूर्मिकाः
कट्यां काञ्चनकिङ्किणीर्विनिदधे रत्नावतंसौश्रुतौ ।।

मन्त्रः -

ॐ स्वर्ण्णघर्म्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्णशुक्रः स्वाहा स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सूर्य्यः स्वाहा

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । सर्वाङ्गेषु अलङ्कारान् परिधापयामि । १८/५०

चन्दनम् –

काश्मीरभूमिरुहकुङ्कुमपीतवर्णं
गाङ्गेन घृष्टममलं घनसारशीतम् ।
शैलाधिराजतनये! तव भालमध्ये
सच्चन्दनं मलयजं विनियोजयामि ।।

मन्त्रः -

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । चन्दनं समर्पयामि

रक्तचन्दनम् –

रुद्राणि! रञ्जनमिदं कथितं प्रसिद्धैः
सिद्धिप्रदं सकलतान्त्रिकसेव्यमानम् ।
तस्मादिदं तव विशालललाटपट्टे
गाङ्गेन घृष्टममलं समलङ्करोमि ।।

मन्त्रः -

ॐ त्वाङ्गन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः ।
त्वामौषधे सोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्यत। (यजु.१२-९८)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । रक्तचन्दनं समर्पयामि ।

कज्जलम् –

सर्पिः प्रदीपघनसारविनिर्मितं यत्
ज्योतिः प्रवर्धनपरं नयनार्पितं तत् ।
शैलधिराजतनये! शिवल्लभे! ते
गन्धान्वितं रुचिरकज्जलमर्पयामि ।।

मन्त्रः -

ॐ वृत्रस्य कनीनिका चक्षुर्दाऽसि चक्षुर्मे देहि ।।

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादिव्यै नमः । कज्जलं समर्पयामि ।

सिन्दूरम् –

सीमन्ते ते भगवति! मया सादरं न्यस्तमेतत्
सिन्दूरं मे हृदयकमले हर्षवर्षं तनोतु ।
बालादित्यद्युतिरिव सदा लोहिता यस्य कान्ति-
रन्तर्ध्वान्तं हरतु सततं चेतसा चिन्तयामि ।।

मन्त्रः -

ॐ सिन्धोरिवप्प्राद्ध्वनेशूघनासो व्वातं प्प्रमियः पतयन्ति यह्वाः । घृतस्य धाराऽअरुषो न व्वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः ।। यजु० १७/९५।।

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । सिन्दूरं समर्पयामि ।

अक्षताः -

काश्मीरजान् विमलकीर्तिकरान् सुरम्यान्
गन्धान्वितान् सकललोकसमृद्धिबीजान् ।
सर्वाश्रयानदलितान् परितोऽवदातान्
शुद्धाक्षतान् गिरिसुते ! निटिलेऽर्पयामि ।।

मन्त्रः -

ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रिया ऽअधूषत । अस्तौषतस्वभानवो विप्रानविष्ठयामती योजान्विन्द्रते हरी । यजु० ३/५८

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । अक्षतान् समर्पयामि ।

पुष्पाणि –

अर्काम्बुजातकरवीरसहस्रपत्र -
मन्दाररक्तकजवाकनकाह्वयानि ।
चाम्पेयपाटलमयानि सुगन्धितानि,
पुष्पाणि पादयुगले निदधामि दुर्गे! ।।

मन्त्रः -

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ।।

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । पुष्पाणि समर्पयामि ।

पुष्पमालाः -

पुष्पोघैर्द्योतयन्त्री सततपरिचलत्कान्तिकल्लोलजालैः,
कुर्वाणा मज्जदन्तःकरणविमलतां शोभितेव त्रिवेणी ।
मुक्ताभिः पद्मरागैर्मरकतमणिभिर्निर्मिता दीप्यमानै-
र्नित्यं हारत्रयी हे! भगवति! गिरिजे! गृह्यतां कण्ठमध्ये ।।

मन्त्रः -

ॐ ओषधयः प्रतिगृभ्णीत पुष्पवतीः सुपिप्पलाः ।
अयं वो गर्भ ऽ ऋत्वियः प्रत्नꣳ सधस्थमासदत् ।।

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । पुष्पमालाः समर्पयामि ।

बिल्वपत्राणि –

लक्ष्मीप्रियं सकलवैभवदं मनोज्ञं
त्र्यक्षं गुणत्रययुतं त्रिदलाभिरामम् ।
हे चण्डमुण्डमहिषासुरनाशिनि! त्वं
दुर्गे! गृहाण नवबिल्वदलं हि मातः!।।

मन्त्रः -

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः । श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च नमो धृष्णवे ।।

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । बिल्वपत्राणि समर्पयामि ।

शमीपत्राणि –

सौभाग्यसन्ततिकराणि मनोहराणि
ज्योतिर्मयानि रुचिराणि जयप्रदानि ।
शम्या दलानि विमलानि मृडानि! देवि!
त्वत्पादपद्मयुगले विनिवेदयामि ।।

मन्त्रः -

ॐ शमिता नो वनस्पतिः सविता प्रसुवन्भर्गम् । ककुप् छन्द इहेन्द्रियं वशा वेहद्वयो दधु ं । यजु २१-२१

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । शमीपत्राणि समर्पयामि ।

दूर्वाङ्कुरान् –

काण्डप्रकाण्डजनितान् हरितान् मनोज्ञान्
त्वत्पादपङ्कजजुषां यशसोऽवतंसान् ।
वंशाभिवर्धनकरान् शिववल्लभे! ते
दूर्वाङ्कुरान् शुभकरान् विनिवेदयामि ।।

मन्त्रः -

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ।। (यजु.१३-२०)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि ।

परिमलद्रव्यम् –

पिष्टाभ्रकेन सहितं विविधप्रसून-
किञ्जल्कनिर्मितमिमं मृदुलं मनोज्ञम् ।
मोदप्रदं परिमलाढ्यपरागपुञ्जं
दुर्गे! भवानि! तव संहनने किरामि ।।

मन्त्रः -

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुञ्ज्याया हेति-
म्परिबाधमानः। हस्तघ्नोव्विश्वाव्वयुनानि व्विद्वा-
न्पुमान्पुमा ँ सम्परिपातुव्विश्वतः ÷ (यजु.२९-५१)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । परिमलद्रव्याणि समर्पयामि ।

सुगन्धिद्रव्यम् –

नासाग्रतृप्तिजनकं मदिरं महार्ह-
मामोदवासितदिशं मदवृद्धिहेतुम् ।
पुष्पासवं सुरभितं पटवासनाय
भक्त्यार्पितं परिगृहाण शिवानि! दुर्गे!।।

मन्त्रः -

ॐ त्र्यम्बकं य्यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्त्योर्म्मुक्षीय मामृतात् ।।(यजु.३-६०)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि ।

अङ्गपूजा –

दक्षिणहस्तेन ज्ञानमुद्रया गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयेत् ।

ॐ दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि । ॐ महाकाल्यै नमः गुल्फौ पूजयामि । ॐ मङ्गलायै नमः जानुनी पूजयामि । ॐ कात्यायन्यै नमः ऊरू पूजयामि । ॐ भद्रकाल्यै नमः कटी पूजयामि । ॐ कमलायै नमः नाभिं पूजयामि । ॐ शिवायै नमः उदरं पूजयामि । ॐ क्षमायै नमः हृदयं पूजयामि । ॐ स्कंदाय नमः कण्ठं पूजयामि । ॐ महिषासुरमर्दिन्यै नमः नेत्रे पूजयामि । ॐ उमायै नमः शिरः पूजयामि । ॐ विंध्य- वासिन्यै नमः सर्वाङ्गं पूजयामि । देव्याः दक्षिणे सिंहं पूजयामि ॥ वामे महिषं पूजयामि ।

इत्यङ्गपूजा समाप्ता

अथ नामपूजा –

वामहस्ते द्रोणे वा गन्धाक्षतपुष्पाण्यादाय दक्षिणहस्तेन समर्पयेत् १. ॐ माहेश्वर्यै नमः २. ॐ महादेव्यै नमः ३. ॐ जयन्त्यै नमः ४. ॐ सर्वमङ्गलायै नमः ५. ॐ लज्जायै नमः ६. ॐ भगवत्यै नमः ७. ॐ वन्द्यायै नमः ८. ॐ भवान्यै नमः ९. ॐ पापनाशिन्यै नमः १०. ॐ चण्डिकायै नमः ११. ॐ कालरात्र्यै नमः १२. ॐ भद्रकाल्यै नमः १३. ॐ अपराजितायै मनः १४. ॐ महाविद्यायै नमः १५. ॐ महामेधायै नमः १६. ॐ महामायायै नमः १७. ॐ महाबलायै नमः १८. ॐ कात्यायन्यै नमः १९. ॐ जयायै नमः २०. ॐ दुर्गायै नमः २१. ॐ मन्दारवनवासिन्यै नमः २२. ॐ गिरिसुतायै नमः २३. ॐ धान्यै नमः २४. ॐ महिषासुरघातिन्यै नमः २५. ॐ आर्यायै नमः २६. ॐ सिद्धिदायै नमः २७. ॐ बुद्धिदायै नमः २८. ॐ नित्यायै नमः २९. वरदायै नमः ३०. ॐ वरवर्णिन्यै

नमः ३१. ॐ अम्बिकायै नमः ३२. ॐ सुखदायै नमः ३३. ॐ सोम्यायै नमः ३४. ॐ जगन्मात्रे नमः । ३५. ॐ शिवप्रियायै नमः ३६. ॐ भक्तसंतापसंहर्त्र्यै नमः ३७. ॐ सर्वकामपूरण्यै नमः ३८. ॐ जगत्कर्त्र्यै नमः ३९. ॐ जगद्धात्र्यै नमः ४०. ॐ जगत्पालनतत्परायै नमः ४१. ॐ अव्यक्तायै नमः ४२. ॐ व्यक्तरूपायै नमः ४३. ॐ भीमायै नमः ४४. त्रिपुरसुन्दर्यै नमः ४५. ॐ अपर्णायै नमः ४६. ॐ ललितायै नमः ४७. ॐ वेद्यायै नमः ४८. ॐ पूर्णचन्द्रनिभाननायै नमः ४९. ॐ चामुण्डायै नमः ५०. ॐ चतुरायै नमः ५१. ॐ गुणत्रयविभाविन्यै नमः ५२. ॐ हेरम्ब-जनन्यै नमः ५३. ॐ काल्यै नमः ५४. ॐ त्रिगुणायै नमः ५५. ॐ यशोधारिण्यै नमः ५६. ॐ उमायै नमः ५७. ॐ कालहस्तायै नमः ५८. ॐ दैत्यदर्पनिषूदन्यै नमः ५९. ॐ बुद्ध्यै नमः ६०. ॐ कान्त्यै नमः ६१. ॐ क्षमायै नमः ६२. ॐ शान्त्यै नमः ६३. ॐ पुष्ट्यै नमः ६४. ॐ तुष्टायै नमः ६५. ॐ धृत्यै नमः ६६. ॐ मत्यै नमः ६७. ॐ वीरायुधधरायै नमः ६८. ॐ धीरायै नमः ६९. ॐ गौर्य्यै नमः ७०. ॐ शाकम्भर्य्यै नमः ७१. ॐ शिवायै नमः ७२. ॐ अष्टसिद्धिप्रदायै नमः ७३. ॐ वामायै नमः ७४. ॐ शिववामाङ्गवासिन्यै नमः ७५. ॐ धर्मदायै नमः ७६. ॐ धनदायै नमः ७७. ॐ श्रीदायै नमः ७८. ॐ कामदायै नमः ७९. ॐ मोक्षदायै नमः ८०. ॐ अपरायै नमः ८१ ॐ चित्स्वरूपायै नमः ८२. ॐ चिदानन्दायै नमः ८३. ॐ जयश्रियै नमः ८४. ॐ जयदायिन्यै नमः ८५. ॐ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यायै नमः ८६. ॐ जगत्त्रयहितैषिण्यै नमः ८७. ॐ शर्वाण्यै नमः ८८. ॐ पार्वत्यै नमः ८९. ॐ धन्यायै नमः ९०. ॐ स्कन्दमात्रे नमः ९१. ॐ अखिलेशायै नमः ९२. ॐ प्रपन्नार्तिहारिण्यै नमः ९३. ॐ देव्यै नमः ९४. ॐ सुभगायै नमः

९५. ॐ कामरूपिण्यै नमः ९६. ॐ निराकारायै नमः ९७. ॐ साकारायै नमः ९८. ॐ महाकाल्यै नमः ९९. ॐ सुरेश्वर्यै नमः १००. ॐ शर्वायै नमः १०१. ॐ श्रद्धायै नमः १०२. ॐ ध्रुवायै नमः १०३. ॐ कृत्यायै नमः १०४. ॐ मृडान्यै नमः १०५. ॐ भक्तवत्सलायै नमः १०६. ॐ सर्वशक्तिसमायुक्तायै नमः १०७. ॐ शरण्यै नमः १०८. ॐ सर्वकामदायै नमः । इति गन्धाक्षतपुष्पैः सम्पूजयेत्

आवरणपूजा

(प्रथमावरणम्)

सच्चिन्मये! परे! देवि! परामृतचरुप्रिये ।
अनुज्ञां देहि मे मातः ! परिवारार्चनाय ते ।।

वामहस्तेन तत्त्वमुद्रया तर्पणम् । दक्षिणहस्तेन ज्ञानमुद्रया पूजनम् । वामहस्ते द्रोणे वा गन्धाक्षतपुष्पाण्यादाय दक्षिणहस्तेन समर्पयेत् ।

१. ॐ ऐ ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे । साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकाली-महालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

२. नवार्णमन्त्रेण साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकाल्यै नमः । श्रीमहाकाली- श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

३. नवार्णमन्त्रेण साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहालक्ष्म्यै नमः । श्रीमहालक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

४. नवार्णमन्त्रेण साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहासरस्वत्यै नमः । महासरस्वती-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

बिन्दुं परितो गुरुचतुष्टयं पूजयेत् –

५. ॐ गुरवे नमः । श्रीगुरुशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

६. ॐ परमगुरवे नमः । परमगुरुशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

७. ॐ परात्परगुरवे नमः । परात्परगुरुशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

८. ॐ परमेष्ठिगुरवे नमः । परमेष्ठिगुरुशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

९. ॐ ऐं हृदयाय नमः । हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

१०. ॐ ह्रीं शिरसे नमः । शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

११. ॐ क्लीं शिखायै नमः । शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

१२. ॐ चामुण्डायै कवचाय नमः । कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

१३. ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय नमः । नेत्रत्रयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

१४. ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय नमः ।

अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि । ॐ प्रथमावरणदेवताभ्यो नमः । सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । ततः सामान्यार्घ्यजलेन एताः प्रथमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

पुष्पाञ्जलिमादाय –

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले! ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।।

पुष्पाञ्जलिं दत्वा हस्तौ प्रक्षाल्य योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

अथ द्वितीयावरणम्

त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन पूजयेत् ।

१५. ॐ सावित्र्या सह विधात्रे नमः । विधातृशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

१६. ॐ श्रिया सह विष्णवे नमः । विष्णुशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

१७. ॐ उमया सह शिवाय नमः । शिवशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

१८. ॐ क्षुं नमः सिंहाय नमः । सिंहशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

१९. ॐ हुं नमः महिषाय नमः । महिषशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ॐ द्वितीयावरणदेवताभ्यो नमः । सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि । सामान्यर्घ्यजलेन एता द्वितीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु । पुष्पाञ्जलिमादाय –

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले! ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ।।

पुष्पाञ्जलिं दत्वा हस्तौ प्रक्षाल्य योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

अथ तृतीयावरणम् –

अग्निनैर्ऋत्यवायव्येशानकोणेषु मध्ये दिक्षु च पूजयेत् –

२०. ॐ ऐं नन्दजायै नमः । नन्दजाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

२१. ॐ ह्रीं रक्तदन्तिकायै नमः रक्तदन्तिकाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

२२. ॐ क्लीं शाकम्भर्यै नमः । शाकम्भरीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

२३. ॐ दुं दुर्गायै नमः । दुर्गाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

२४. ॐ हुं भीमायै नमः । भीमाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

२५. ॐ ह्रीं भ्रामर्यै नमः । भ्रामरीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ॐ तृतीयावरणदेवताभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि सामान्यार्घ्यजलेन एतास्तृतीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

पुष्पाञ्जलिमादाय –

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले!।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ।।

पुष्पाञ्जलिं दत्वा हस्तौ प्रक्षाल्य योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

अथ चतुर्थावरणम्

अष्टपत्रेषु स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन पूजयेत् –

२६. ॐ ऐं ब्राह्म्यै नमः । ब्राह्मीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

२७. ॐ ह्रीं माहेश्वर्यै नमः । माहेश्वरीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

२८. ॐ क्लीं कौमार्यै नमः । कौमारीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

२९. ॐ ह्रीं वैष्णव्यै नमः । वैष्णवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

३०. ॐ ल्टं वाराह्यै नमः । वाराहीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

३१. ॐ क्षौं नारसिंह्यै नमः । नारसिंहीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

३२. ॐ लं ऐन्द्र्यै नमः । ऐन्द्रीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

३३. ॐ स्व्यें चामुण्डायै नमः चामुण्डाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

मध्ये –

३४. ॐ ह्रौं लक्ष्म्यै नमः । लक्ष्मीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ॐ चतुर्थावरणदेवताभ्यो नमः । गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ।

सामान्यार्घ्यजलेन एताः चतुर्थावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

पुष्पाञ्जलिमादाय –

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले! ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ।।

पुष्पाञ्जलिं दत्वा हस्तौ प्रक्षाल्य योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

अथ पञ्चमावरणम्

चतुर्विंशतिदलेषु प्रादक्षिण्येन पूजयेत् ।

३५. ॐ विं विष्णुमायायै नमः । विष्णुमायाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

३६. ॐ चें चेतनायै नमः । चेतनाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

३७. ॐ बुं बुद्ध्यै नमः । बुद्धिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

३८. ॐ निं निद्रायै नमः । निद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

३९. ॐ क्षुं क्षुधायै नमः । क्षुधाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

४०. ॐ छां छायायै नमः । छायाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

४१. ॐ शं शक्त्यै नमः । शक्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

४२. ॐ तृं तृष्णायै नमः। तृष्णाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

४३. ॐ क्षां क्षान्त्यै नमः। क्षान्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

४४. ॐ जां जात्यै नमः। जातिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

४५. ॐ लं लज्जायै नमः। लज्जाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

४६. ॐ शां शान्त्यै नमः। शान्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

४७. ॐ श्रं श्रद्धायै नमः। श्रद्धाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

४८. ॐ कां कान्त्यै नमः। कान्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

४९. ॐ लं लक्ष्म्यै नमः। लक्ष्मीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

५०. ॐ धृं धृत्यै नमः। धृतशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

५१. ॐ वृं वृत्त्यै नमः। वृत्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

५२. ॐ श्रुं श्रुत्यै नमः। श्रुतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

५३. ॐ स्मृं स्मृत्यै नमः। स्मृतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

५४. ॐ दं दयायै नमः । दयाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

५५. ॐ तुं तुष्ट्यै नमः । तुष्टिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

५६. ॐ पुं पुष्ट्यै नमः । पुष्टिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

५७. ॐ मां मातृभ्यो नमः । मातृशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

५८. ॐ भ्रां भ्रान्त्यै नमः । भ्रान्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ॐ पञ्चमावरणदेवताभ्यो नमः । गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । सामान्यार्घ्यजलेन पञ्चमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

पुष्पाञ्जलिमादाय –

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले! ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ।।

पुष्पाञ्जलिं दत्वा हस्तौ प्रक्षाल्य योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

अथ षष्ठावरणम्

भूपुरे कोणचतुष्टये –

५९. आग्नेयकोणे – ॐ गं गणपतये नमः । गणपतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

६०. नैर्ऋत्यकोणे – ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः । क्षेत्रपालशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

६१. वायव्यकोणे – ॐ बं बटुकाय नमः । बटुकशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

६२. ईशानकोणे – ॐ यों योगिनीभ्यो नमः योगिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ॐ षष्ठावरणदेवताभ्यो नमः । गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । सामान्यार्घ्यजलेन षष्ठावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

पुष्पाञ्जलिमादाय –

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले!।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठाख्यावरणार्चनम् ।।

पुष्पाञ्जलिं दत्वा हस्तौ प्रक्षाल्य योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

अथ सप्तमावरणम् –

पूर्वादिदशदिक्षु –

६३. पूर्वे – ॐ लं इन्द्राय नमः । इन्द्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

६४. आग्नेये – ॐ रं अग्नये नमः । अग्निशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

६५. दक्षिणे – ॐ यं यमाय नमः । यमशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

६६. नैर्ऋत्ये – ॐ क्षं निर्ऋतये नमः । निर्ऋतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

६७. पश्चिमे – ॐ वं वरुणाय नमः । वरुणशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

६८. वायव्ये – ॐ यं वायवे नमः । वायुशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

६९. उत्तरे – ॐ सों सोमाय नमः । सोमशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

७०. ईशाने – ॐ हं ईशानाय नमः । ईशानशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

७१. ऊर्ध्वम् – ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः । ब्रह्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

७२. अधः – ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः । अनन्तशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ॐ सप्तमावरणदेवताभ्यो नमः । गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । सामान्यार्घ्यजलेन सप्तमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

पुष्पाञ्जलिमादाय –

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले!।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ।।

पुष्पाञ्जलिं दत्वा हस्तौ प्रक्षाल्य योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

अथ अष्टमावरणम्

भूपुराद्बहिः पूर्वादिदशदिक्षु तत्तद्दिक्पालसमीपे –

७३. पूर्वे – ॐ वं वज्राय नमः । वज्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

७४. आग्नेये – ॐ शं शक्त्यै नमः । शक्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

७५. दक्षिणे – ॐ दं दण्डाय नमः । दण्डशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

७६. नैर्ऋत्ये – ॐ खं खड्गाय नमः । खड्गशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

७७. पश्चिमे – ॐ पां पाशाय नमः । पाशशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

७८. वायव्ये – ॐ अं अङ्कुशाय नमः । अङ्कुशशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

७९. उत्तरे – ॐ गं गदायै नमः । गदाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

८०. ईशाने – ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः । त्रिशूलशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

८१. ऊर्ध्वम् – ॐ पं पद्माय नमः । पद्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

८२. अधः – ॐ चं चक्राय नमः । चक्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ॐ अष्टमावरणदेवताभ्यो नमः । गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । सामान्यार्घ्यजलेन अष्टमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

पुष्पाञ्जलिमादाय –

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले!।
भक्त्या समर्पते तुभ्यं ह्यष्टमावरणार्चनम् ।।

पुष्पाञ्जलिं दत्वा हस्तौ प्रक्षाल्य योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

अथ नवमावरणम्

कलशाद्बहिः पूर्वादिदशदिक्षु

८३. पूर्वे ॐ वज्रहस्तायै गजारूढायै कादम्बरीदेव्यै नमः ।
कादम्बरीदेवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

८४. आग्नेये ॐ शक्तिहस्तायै अजवाहनायै उल्कादेव्यै नमः ।
उल्कादेवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

८५. दक्षिणे ॐ दण्डहस्तायै महिषारूढायै कराली देव्यै नमः ।
करालीदेवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

८६. नैर्ऋत्ये ॐ खड्गहस्तायै शववाहनायै रक्ताक्षीदेव्यै नमः ।
रक्ताक्षीदेवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

८७. पश्चिमे ॐ पाशहस्तायै मकरवाहनायैश्वेताक्षीदेव्यै नमः ।
श्वेताक्षीदेवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

८८. वायव्ये ॐ अङ्कुशहस्तायै मृगवाहनायै हरिताक्षीदेव्यै नमः ।
हरिताक्षीदेवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

८९. उत्तरे ॐ गदाहस्तायै सिंहारूढायै यक्षिणीदेव्यै नमः ।
यक्षिणीदेवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

९०. ईशाने ॐ त्रिशूलहस्तायै वृषभवाहनायै कालीदेव्यै नमः
कालीदेवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

९१. ऊर्ध्वम् ॐ पद्महस्तायै हंसवाहनायै सुरज्येष्ठादेव्यै नमः ।
सुरज्येष्ठादेवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

९२. अध: ॐ चक्रहस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराज्ञीदेव्यै नमः ।
सर्पराज्ञीदेवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ॐ नवमावरणदेवताभ्यो नमः । गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । सामान्यार्घ्यजलेन नवमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

पुष्पाञ्जलिमादाय –

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले! ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम् ।।

पुष्पाञ्जलिं दत्वा हस्तौ प्रक्षाल्य योनिमुद्रया प्रणमेत्

इत्यावरणपूजा समाप्ता

धूपः

ह्रीबेर[१]-कुष्ठ[२]-सरला[३]-गुरुपत्र[४]-दारु[५]-श्रीखण्ड[६]-गुग्गुलु[७]-शिवा[८]-गुड[९]-सर्ज[१०]-मांसी[११]-

---

१ ह्रीबेर = लाजवन्ती
२ कुष्ठ = कूट, कूठ ।
३ सरल = सफेदनिशोथ
४ अगरुपत्र = अगर के पत्ते
५ दारु = देवदारुवृक्ष की लकडी
६ श्रीखण्ड = चन्दन
७ गुग्गुलु = गूगल
८ शिवा = हरीतकी (हरडे)
९ गुड = गन्ने का गुड
१० सर्ज = शालवृक्ष की लकडी (सेखुआ की लकडी)
११ मांसी = जटामांसी

लाक्षा[१]-नखी[२]-जलद[३]-शैलभवा[४]-भयाभि[५]-
राघ्रापयामि रचितं शिवपत्नि! धूपम् ।

मन्त्रः -

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ।।

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै दुर्गादेव्यै नमः । धूपमाघ्रापयामि ।

दीपः

कार्पासवर्तिखचितं घृतपूर्णरूपं
ज्योतिर्मयं विमलराजतपात्रसंस्थम् ।
हे शैलपुत्रि! सुरलोकसमीक्षणार्थं
सन्दर्शयामि तिमिरौघहरं प्रदीपम् ।।

मन्त्रः -

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।।

साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै

---

१ लाक्षा = लाख
२ नखी = नखनामक गन्धद्रव्य
३ जलद = कपूर
४ शैलभव = शिलाजीत
५ अभया = खश ।

श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै दुर्गादेव्यै नमः । दीपं दर्शयामि । हस्तौ प्रक्षालयेत् ।

नैवेद्यम् –

नैवेद्यपदार्थपात्रं पुरतो निधाय चन्दनपुष्पैः सम्पूज्य 'यं' इति वायुबीजमष्टवारं जप्त्वा नैवेद्यदोषान् शोषयित्वा 'रं' इति वह्निबीजमष्टवारं जप्त्वा नैवेद्यदोषान् दाहयित्वा 'वं' इत्यमृतबीजमष्टवारं जप्त्वा नैवेद्येऽमृतमयचिन्तनं विधाय धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य ग्रासमुद्राः प्रदर्शयेत् – ॐ ह्रीं प्राणाय स्वाहा । ॐ ह्रीं अपानाय स्वाहा । ॐ ह्रीं व्यानाय स्वाहा । ॐ ह्रीं उदानाय स्वाहा । ॐ ह्रीं समानाय स्वाहा ।

शाल्योदनं[१] घृतयुतं सितया[२] समेतं
गोधूमचूर्ण[३]-वट[४]-तेमन[५]-सूप[६]-शाकम्[७] ।
मिष्टान्न[८]- पायस[९] - सुमौद्गकपर्पटाढ्यं[१०]
नैवेद्यमन्नमगपुत्रि! निवेदयामि ।।

---

१ शल्योदनं = चावल का भात
२ सितया = चीनी से (बूरे से)
३ गोधूमचूर्ण = गेहूँ का चूरमा
४ वट = बाटी
५ तेमनम् = खडी
६ सूप = दाल
७ शाकम् = साग
८ मिष्टान्न = मिठाई
९ पायसम् = खीर
१० सुमौद्गकपर्पटाढ्यम् = मूंग के पापड से युक्त

मन्त्रः -

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पदममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।

साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै दुर्गादेव्यै नमः । नैवेद्यमन्नं समर्पयामि ।

भोजनमध्ये जलं फलानि च
मध्येऽशनं जलजगन्धजुडम्बु गाङ्गं
पीत्वा रसाल - कदलीक्षुकपीत्थजम्बू- ।
नारङ्ग - नूद - बदरामल - दाडिमानि
है गौरि! भुङ्क्ष्व मधुराणि फलानि दुर्गे! ।।

मन्त्रः -

ॐ आर्द्रां यष्करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।

साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै दुर्गादेव्यै नमः । भोजनमध्ये जलं फलानि च समर्पयामि ।

करोद्वर्तनम् –

कस्तूरिकामलयजातसितांशु भाजा,
प्रोद्वर्तनेन विमलं सुमुखं प्रमृज्य ।
हे गौरि! पाणियुगलं जलजातकान्तं
सर्पिःसुपृक्तकमिदं परिशुन्यय त्वम् ।।

मन्त्रः -

ॐ आप॑वस्व हिर॑ण्यवदश्व॑वत्सोम॑वीरवत् ।।

वाजङ्गोमन्तमाभ॑र स्वाहा ।। (यजु.८-६३)

साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै दुर्गादेव्यै नमः । करोद्-वर्तनार्थे चन्दनादिलेपं समर्पयामि ।

आचमनं करप्रोञ्छनञ्च -

एलालवङ्ग – सितपाटल – वासितेन,
गङ्गाम्भसा सुरभिणा घनसारभाजा ।
आचम्य हे नगसुते! सलिलार्द्रहस्तौ,
सम्प्रोञ्छय त्वमधुना मृदुकर्पटेन ।।

मन्त्रः -

ॐ वरु॑णः प्राविता भु॑वन्मित्रो विश्वा॑भिरूतिभि॑ः ।

कर॑तान्नः सुराध॑सः ।। (यजु.३३-४६)

साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै दुर्गादेव्यै नमः । आचमनीयं जलं करप्रोञ्छकञ्च समर्पयामि ।

ताम्बूलवीटिद्वयम् -

एलालवङ्गशकलीकृतपूगयुक्तं ,
सुधावलिप्तममलं खदिरेण रक्तम् ।
ताम्बूलवीटियुगलं मुखवासनार्थं,
भक्त्यार्पितं गिरिसुते! दयया गृहाण ।।

मन्त्रः -

ॐ उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णन्नवेरनुवातिप्रगर्द्धिनः।
श्येनस्यैव द्ध्रजतोऽअङ्कं सम्परिंदधिक्राव्णः सहोर्ज्जा
तरित्रतः स्वाहा ।। (यजु.९-१५)

साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै दुर्गादेव्यै नमः । ताम्बूलवीटिद्वयं समर्पयामि ।

दक्षिणा –

लक्ष्मीः स्वयं त्वमसि ते किमु देयमस्ति
द्रव्यं तथापि रजतं यजनाङ्गभूतम् ।
कार्पण्यदोषरहितं बहुलाभभाजं,
भक्त्यार्पयामि गिरिपुत्रि! तवाङ्घ्रियुग्मे ।।

मन्त्रः -

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ।।

साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै दुर्गादेव्यै नमः । रजतमुद्रामयीं दक्षिणां समर्पयामि ।

छत्रम् –

रत्नप्रभं विमलमौक्तिकजालनद्धं
सौवर्णदण्डखचितं रजनीशशुभ्रम् ।
चामीकराग्रतिलकं शिरसोऽग्रदेशं
छत्रञ्च ते गिरिसुते! परितोऽर्पयेऽहम् ।।

मन्त्रः -

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् ।

दधद्रत्नानि दाशुषे । (यजु.११-२५)

साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै दुर्गादेव्यै नमः ।। छत्रं समर्पयामि ।

चामरयुगलम् –

सौवर्णदण्डखचितेन मनोहरेण
सद्रत्नपुञ्जजटितेन शशिप्रभेण ।
शैलाधिराजतनये! मृदुलं शरीरं
संवीजयामि तव चामरयुग्मकेन ।।

मन्त्रः -

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभि -

रुपयाहि यज्ञम् । वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात

स्वस्तिभिः सदा नः।। (यजु.२७-२८)

साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै दुर्गादेव्यै नमः ।। चामरयुगलेन वीजयामि ।

व्यजनानि -

गन्धाढ्यपाटलजलोद्भववारिशीतै-
श्चेतोहरैर्नलदपुञ्जसुगन्धभाग्भिः ।
मन्दं मृडाणि! मृदुलैः श्रमहारिवातैः
संवीजयामि सुतनुं तव तालवृन्तैः ।।

मन्त्रः -

ॐ वायो ये तें सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि।
नियुत्वान्सोमपीतये ।। (यजु.२७-३२)

साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै दुर्गादेव्यै नमः ।। तालवृन्तैस्तव शरीरं मन्दं मन्दं संवीजयामि ।

पादुकाद्वयम् –

मन्दारदारुरचिते दृढशङ्कुरम्ये
कान्तारमार्गजनिकण्टकशोधदक्षे ।
देवादिभक्तवरदे! गिरिपुत्रि! गौरि!
द्वे पादुके चरणयोरहमर्पयामि ।।

मन्त्रः -

ॐ ये पथां पथिरक्षय ऐलबृदा आयुर्युधः ।
तेषांॅ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ।। (यजु.१६-६०)

साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै दुर्गादेव्यै नमः । पादुकाद्वयं समर्पयामि ।

दर्पणम् –

शृङ्गारितां तव तनुं विविधोपचारै -
र्भास्वत्प्रभां सुरनुते! शशिखण्डमौले! ।
पूर्णेन्दुबिम्बरुचिरे! मुकुरे विशाले
दुर्गे! विलोकय विलोलविलोचने! त्वम् ।।

मन्त्रः -

ॐ मित्रस्य मा चक्षुषेक्षध्वमग्नयः सगराः सगराः स्थ सगरेण नाम्ना रौद्रेणानीकेन पात माग्नयः पिपृत माग्नयो गोपायत मा नमो वोऽस्तु मा मा हिꣳसिष्ट ।।

(यजु.५-३४)

साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै दुर्गादेव्यै नमः । दर्पणं दर्शयामि ।

नृत्यम्, गीतम्, वाद्यञ्च -

रुद्राणि! गौरि! गिरिजे! वरदे च मातः!
नामानि ते सुमधुराणि सदा वदन्त्यः ।
ढक्कादितालनिरता धृतकांस्यताला
नृत्यन्ति नाकवनिताः पुरतो नितान्तम् ।।

मन्त्रः -

ॐ नृत्याय सूतं गीताय शैलूषं धर्माय समाचरं नरिष्ठायै भीमलं नर्माय रेभꣳ हसाय कारिमानन्दाय स्त्रीपखं प्रमदे कुमारीपुत्रं मेधायै रथकारं धैर्याय तक्षाणम् । (यजु.६-३०)

साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै दुर्गादेव्यै नमः । नृत्यादिकं विभावयामि ।

दृष्ट्युत्तारणम् –

ताम्रपात्रे राजिकालवणखण्डमरीचिकादिकं निक्षिप्य खलमानवघोरदृष्टिमुत्तारयेत् ।

मायूरपिच्छ - पवनैर्मनुजापयुक्तैः
सद्राजिका - लवणखण्ड - मरीचिकाभिः ।
शृङ्गारिते वपुषि ते पतितां भवानि!
उत्तारयामि खलमानवघोरदृष्टिम् ।।

मन्त्रः -

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।

साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै दुर्गादेव्यै नमः । खलमानवपतितघोरदृष्टिमुत्तारयामि

मातङ्गः -

मधुकरवृतकुम्भो न्यस्तसिन्दूरपूरः
कनकरचितघण्टाकिङ्किणीशोभिकण्ठः ।
श्रवणयुगलचञ्चच्चामरो मेघतुल्यो
जननि! तव मुदे स्यान्मत्तमातङ्ग एषः ।।

मन्त्रः -

ॐ अ॒श्वपू॒र्वां र॑थम॒ध्यां ह॒स्तिना॑दप्र॒बोधि॑नीम् ।
श्रियं॑ दे॒वीमुप॑ह्वये॒ श्रीर्मा॑ दे॒वीर्जु॑षताम् ।।

साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै दुर्गादेव्यै नमः । भावनया मत्तमातङ्गं परिकल्पयामि ।

तुरङ्गः -

प्रियगतिरतितुङ्गो रत्नपल्याणयुक्तः
कनकमयविभूषः स्निग्धगम्भीरघोषः ।

तुरगशतसमेतो वायुवेगस्तुरङ्गो
भगवति! कलितोऽयं वाहनार्थं मया ते ।।

मन्त्रः -

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ।।

साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै दुर्गादेव्यै नमः । भावनात्मकं सज्जीकृतं वाहनार्थं वायुवेगं तुरङ्गं समर्पयामि ।

रथः -

विराजमानं तुरगैः सुरम्यैः
साकं रथं चक्रचतुष्टयेन ।
वितानयुक्तं वसनावृतं ते
भक्त्या हि दुर्गे! विनिवेदयामि ।।

मन्त्रः -

ॐ रथवाहनꣳ हविरस्य नाम यत्रायुधं निहितमस्य वर्म । तत्रा रथमुप शग्मꣳ सदेम विश्वाहा वयꣳ सुमनस्यमानाः ।। (यजु २९-४५)

साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै दुर्गादेव्यै नमः । निहितसकलशस्त्रास्त्रयुक्तं दिव्यसारथिसञ्चालितं सुरथं भावनया कल्पितं समर्पयामि ।

सैन्यम् –

तुरङ्गमातङ्गरथैः समेतं प्रत्येकदिग्दुन्दुभिमेघनादम् ।
वधाय दुर्गे! बहुदानवानां पदातिसैन्यं विनिवेदयामि ।।

मन्त्रः -

ॐ नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्यो अरथेभ्यश्च वो नमो नमः क्षत्तृभ्यः संग्रहीतृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्यो अर्भकेभ्यश्च वो नमः । (यजु - १६-२६)

साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै दुर्गादिव्यै नमः । भावनया परिकल्पितं प्रचण्डदैत्यविनाशकं पदातिसैन्यं विभावयामि ।

दुर्गः -

माणिक्यमुक्तापरिपूर्णमेनं सप्तार्णवौघैः परिधीकृतञ्च ।
सर्वत्रव्याप्तं शिववल्लभे! ते दुर्गातिदुर्गं विनिवेदयामि ।।

मन्त्रः -

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः ।
सनः परिषदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुन्दुरितात्यग्निः ।।

साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै दुर्गादिव्यै नमः । सञ्चित-मणिमाणिक्यादिधनं सैन्यनिवासयोग्यं दुर्गं भावनया परिकल्पयामि ।

महाबलिदानप्रकारः -

क्षत्रियादिनाऽश्वमेषच्छागमहिषाणामन्यतरो बलिर्देयः । विप्रेण तु कूष्माण्डबिल्वफलेक्षवः प्रदेयाः ।

देवीं द्रोणपुष्पबिल्वपत्राम्बुजदलजातीचम्पकैः सम्पूज्य कर्ता उदङ्मुखं पूर्वमुखं देव्यभिमुखं वा बलिं गन्धादिनाभ्यर्च्य -

पशुस्त्वं बलिरूपेण मम भाग्यादुपस्थितः।
प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम् ।।१।।
चण्डिकाप्रीतिदानेन दातुरापद्विनाशनम् ।
चामुण्डाबलिरूपाय बले! तुभ्यं नमोऽस्तु मे ।।२।।
यज्ञार्थं बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयम्भुवा ।
अतस्त्वां घातयाम्यद्य तस्माद् यज्ञे वधोऽवधः ।।३।।

इति बलिमभिमन्त्र्य 'ॐ ह्रीं श्रीं' इति मन्त्रपुष्पं क्षिप्त्वा 'रसना त्वं चण्डिकायाः सुरलोकप्रसाधकः' । 'ॐ ह्रां ह्रीं खड्ग आं हुं फट्' इति खड्गमन्यद्वा शस्त्रं सम्पूज्य 'ॐ कालि! कालि! यज्ञेश्वरि! लोहदण्डायै नमः इति बलिं छेदयित्वा 'ॐ ऐं ह्रीं कौशिकि! रुधिरेणाप्यायताम्' इति देव्यै निवेद्य माषपिष्टमयं शत्रुं विरचय्य खड्गेन च्छेदयित्वा स्कन्दाय विशिखाय च दत्वा बलिशेषं रक्षोभ्यो हरेत् ।

मन्त्रः -

ॐ ह्रीं स्फुर कुम्भ कुम्भ सूनु सूनु गुलु गुलु धुनु धुनु मारय मारय विद्रावय विद्रावय विदारय विदारय कम्पय कम्पय कम्पातय कम्पातय पूरय पूरय ॐ ह्रीं ॐ हुं फट् हुं मर्दय मर्दय हुम् । ततः शेषबलिं बहिर्दद्यात् ।

'बलिं गृह्णन्त्विमं देवा आदित्या वसवस्तथा ।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगाः खगाः ।।
असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः ।
डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः ।।

जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वा नागा विद्याधरा नगाः ।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः ।।
जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः ।
मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः ।।
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः ।

अयं बलिः शूद्रेण दुर्ब्राह्मणेन वा नेयः । ततः स्नात्वा तिलकं धृत्वा देवीं प्रार्थयेत् –

मन्त्रः –

ॐ 'खड्गिनी शूलिनी घोरा० । शूलेन पाहि नो देवि० ।

नमो देव्यै महादेव्यै० । रूपं देहि यशो देहि भर्ग भगवति देहि मे । पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे ।।

महिषघ्नि! महामाये! चामुण्डे! मुण्डमालिनि! ।
आयुरागोग्यमैश्वर्यं देहि देवि! नमोऽस्तु ते ।।

विशेषार्घ्यम् –

दूर्वाकुशाग्रदधिकुङ्कुमनीरपूग -
सिद्धार्थतण्डुलसुमै रचितं पवित्रम् ।
दुर्वर्णहेमसहितं तव पद्महस्ते
दत्तं गृहाण गिरिजे! सविशेषमर्घ्यम् ।।

मन्त्रः –

ॐ शि॒वेन॒व्वच॑सात्त्वा॒गिरि॒शाच्छा॑व्वदामसि ।
यथा॑नः॒ सर्व्व॒मिज्जग॑दय॒क्ष्मꣳ सु॒मना॒ऽअस॑त् ।।

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सवाहनायै सशक्तिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । दक्षिणहस्ते विशेषार्घ्यं समर्पयामि ।

नीराजनम् –

कार्पासवर्तिरचितैर्घृतपूर्णरूपै
रुद्दीप्तदीपनिकरैर्घनसारगर्भैः ।
शैलाधिराजतनये! रुचिरं शरीरं
नीराजयामि सह शङ्खजलैः सुवाद्यैः ।।

मन्त्रः -

ॐ आ रात्रि पार्थिवꣳ रजः पितुरप्रायि धामभिः ।
दिवꣳ सदाꣳसि बृहती वितिष्ठस ऽआ त्वेषं
वर्त्तते तमः ।। (यजु.३४-३२)

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता
चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवताऽदित्या देवता
मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो
देवता वरुणो देवता ।। (यजु.१४-२०)

आरती (१)

श्रीदेवीजी की आरती

जगजननी जय! जय!! (मा! जगजननी जय! जय!!)
भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय! जय!! जगजननी०
तू ही सत-चित-सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा ।
सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव सुर-भूपा ॥१॥ जगजननी०
आदिअनादिअनामय अविचल अविनाशी ।
अमल अनन्त अगोचरअज आनन्दराशी ॥२॥ जगजननी०
अविकारी अघहारी अकल कलाधारी ।
कर्त्ता विधि भर्ता हरि हर संहारकारी ॥३॥ जगजननी०
तू विधिवधू रमा तू उमा महामाया ।
मूलप्रकृति विद्या तू तू जननी, जाया ॥४॥ जगजननी०
राम, कृष्ण तू सीता व्रजरानी राधा ।
तू वाञ्छाकल्पद्रुम, हारिणी सब बाधा ॥५॥ जगजननी०
दश विद्या, नव दुर्गा, नानाशस्त्रकरा ।
अष्टमातृका, योगिनि, नव नव रूप धरा ॥६॥ जगजननी०
तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू ।
तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डवलासिनि तू ॥७॥ जगजननी०
सुर-मुनि-मोहिनी सौम्या तू शोभाऽऽधारा ।
विवसन विकट-सरूपा, प्रलयमयी धारा ॥८॥ जगजननी०
तू ही स्नेहसुधामयी, तू ही अति गरलमना ।
रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना ॥९॥ जगजननी०

मूलाधारनिवासिनि, इह-पर-सिद्धिप्रदे ।
कालातीता काली, कमला तू वरदे ॥१०॥ जगजननी०
शक्ति शक्तिधर तू ही नित्य अभेदमयी ।
भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले वेदत्रयी ॥११॥ जगजननी०
हम अति दीन दुःखी मा! विपत-जालघेरे ।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे ॥१२॥ जगजननी०
निज स्वभावविवश जननी, दयादृष्टि कीजै ।
करुणा कर करुणामयि! चरण-शरण दीजै ॥१३॥ जगजननी०

आरती (२)

श्री अम्बाजी की आरती

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी ।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री ॥१॥ जय अम्बे०
मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमदको ।
उज्ज्वल से दोउ नैना, चन्द्रवदन नीको ॥२॥ जय अम्बे०
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै ।
रक्त-पुष्प गल माला कण्ठनपर साजै ॥३॥ जय अम्बे०
केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी ।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुःखहारी ॥४॥ जय अम्बे०
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।
कोटिक चन्द्र दिवाकर सम राजत ज्योती ॥५॥ जय अम्बे०
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती ।
धूम्रविलोचन नैना, निशिदिन मदमाती ॥६॥ जय अम्बे०
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे ।
मधुकैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ॥७॥ जय अम्बे०

ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमलारानी ।
आगम-निगम-बखानी तुम शिव-पटरानी ॥८॥ जय अम्बे०
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ ।
बाजत ताल मृदंगा औ बाजत डमरू ॥९॥ जय अम्बे०
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता ।
भक्तजनकी दुःख हरता सुख सम्पति करता ॥१०॥ जय अम्बे०
भुजाचार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी ।
मनवाञ्छित फल पावत, सेवत नर-नारी ॥११॥ जय अम्बे०
कञ्चन थाल विराजत, अगर कपुर बातीः।
(श्री) मालकेतुमें राजत, कोटिरतन ज्योती ॥१२॥ जय अम्बे०
(श्री) अम्बेजी की आरति जो कोई नर गावै ।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावै ॥१३॥ जय अम्बे०

शङ्खोदकेन नीराजनम् –

मन्त्रः -

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षᳬ शान्तिः पृथिवीशान्ति -
रापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । व्वनस्पतयः शान्ति -
र्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वᳬशान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ (यजु. ३६-१७)

ॐ शङ्खस्थजलं सर्वभक्तजनानामुपरि प्रक्षिपेत् ।

पुष्पाञ्जलिः -

सौगन्ध्यलुब्धमधुपैः परिवेष्ट्यमानं
सौभाग्यसन्ततिकरं फलरत्नयुक्तम् ।
हे शैलपुत्रि! तव पादसरोजयुग्मे
भक्त्यार्पितं कुसुमपुञ्जमिमं गृहाण ॥

मन्त्रः -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् ।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः ।। (यजु.३१-१६)

मन्त्रः -

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो बाहुरुतविश्वतस्पात् ।।

सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देवऽएकः। (यजु.१७-१९)

मन्त्रः -

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायि स्यात् । सार्वभौमः सर्वायुषान्तादापरार्धात्पृथिव्यै समुद्रपर्यान्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्यावसन्गृहे । आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ।

मन्त्रः -

ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि । तन्नो देवी प्रचोदयात् ।।

ॐ पत्रं पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च ।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं देहि मे वाञ्छितं फलम् ।।
रूपं देहि जयं देहि भाग्यं भवानि! देहि मे ।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान्कामाँश्च देहि मे ।।
फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।
फलस्यार्घ्यप्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ।।

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

प्रदक्षिणा –

इन्द्रादिपूज्यपदवी भुवनं क्रमित्वा
प्राप्ता त्वया गिरिसुते! हि यथा तथैव ।
त्वद्भक्तदास्यपदलाभजुषा मयाऽपि
चङ्क्रम्यते मतिमता तव दिव्यदेहः ।।

मन्त्रः –

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
श्रियः पञ्चदशर्चञ्च श्रीकामः सततं जपेत् ।।

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सवाहनायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीरूपायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः । प्रदक्षिणां करोमि । चरणोदकपानं प्रसादग्रहणञ्च विधाय प्रार्थनां कुर्यात् ।

प्रार्थना –

हे चण्डमुण्डमहिषासुरनाशकर्त्रि !
हे रक्तबीजरुधिरोद्भवदैत्यहन्त्रि !।

देवेन्द्ररक्षणपरे! भुवनेश्वरि! त्वं
मां पाहि पाहि शरणागतदीनबालम् ।।
रत्नं न याचे कनकं न याचे
रूप्यं न याचे विभवं न याचे ।
भवानि! भूयाद् भवभीतिमुक्त्यै
भक्तिर्मदीया तव पादयुग्मे ।।

ततः कृतस्य पूजाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं कुमारीर्ब्राह्मण-सुवासिनीः पूजापूर्वकं यथाशक्ति ब्राह्मणान् बटुकान् बान्धवान् नानाभक्ष्यभोज्यैः सम्भोज्य तेभ्यो भूयसीं दक्षिणां दत्त्वा प्रदक्षिणाञ्च कृत्वा आशिषो गृह्णीयात् ।

पूजासमर्पणम् –

विविधोपचारैर्विहितयाऽनया पूजया साङ्गा सपरिवारा सायुधा सशक्तिका सवाहना श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपा भगवती श्रीदुर्गादेवी प्रियतां न मम ।

ॐ शान्तिः । ॐ शान्तिः । ॐ शान्तिः ।

परिशिष्टांशः

श्रीदुर्गासप्तशती

पाठविधिः

साधक स्नान करके पवित्र हो आसन-शुद्धिकी क्रिया सम्पन्न करके शुद्ध आसन पर बैठे, साथ में शुद्ध जल, पूजनसामग्री और दुर्गासप्तशती की पुस्तक रखे । पुस्तक को अपने सामने काष्ठ आदि के शुद्ध आसन पर विराजमान कर दे। ललाट में अपनी रुचि के अनुसार भस्म, चन्दन अथवा रोली लगा ले, शिखा बाँध ले, फिर पूर्वाभिमुख होकर तत्त्व-शुद्धि के लिये चार बार आचमन करे । उस समय अग्रांकित चार मन्त्रों को क्रमशः पढ़े -

ॐ ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।
ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।
ॐ क्लीं शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥

तत्पश्चात् प्राणायाम करके गणेश आदि देवताओं एवं गुरुजनों को प्रणाम करें, फिर 'पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ०' इत्यादि मन्त्र से कुश की पवित्री धारण करके हाथ में लाल फूल अक्षत और जल लेकर निम्नांकित रूप से संकल्प करें -

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः । ॐ परमात्मने, श्रीपुराण-पुरुषोत्तमस्य श्रीविष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथम-चरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यप्रदेशे बौद्धावतारे वर्तमाने यथानामसंवत्सरे अमुकायने

महामाङ्गल्यप्रदे मासानाम् उत्तमे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरान्वितायाम् अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकामुकराशिस्थितेषु चन्द्रभौमबुधगुरुशुक्रशनिषु सत्सु शुभे योगे शुभकरणे एवंगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ सकलशास्त्र-श्रुतिस्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्तिकामः अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्मा अहं ममात्मनः सपुत्रस्त्रीबान्धवस्य श्रीनवदुर्गानुग्रहतो ग्रहकृतराज-कृतसर्वविधपीडानिवृत्तिपूर्वकं नैरुज्यदीर्घायुः पुष्टिधनधान्य-समृद्ध्यर्थं श्रीनवदुर्गाप्रसादेन सर्वापन्निवृत्तिसर्वाभीष्टफलावाप्ति-धर्मार्थकाममोक्ष-चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताप्रीत्यर्थं शापोद्धारपुरस्सरं कवचार्गलाकीलक-पाठवेदतन्त्रोक्त-रात्रिसूक्तपाठदेव्यथर्वशीर्षपाठन्यासविधिसहितनवार्णजपसप्तशतीन्यास-ध्यानसहितचरित्रसम्बन्धिविनियोगन्यासध्यानपूर्वकं च 'मार्कण्डेय उवाच ॥ सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः ।' इत्याद्यारभ्य 'सावर्णिर्भविता मनुः' इत्यन्तं दुर्गासप्तशतीपाठं तदन्ते न्यासविधिसहितनवार्णमन्त्रजपं वेद-तन्त्रोक्तदेवीसूक्तपाठं रहस्यत्रय-पठनं शापोद्धारादिकं च करिष्ये ।

इस प्रकार प्रतिज्ञा (संकल्प) करके देवी का ध्यान करते हुए पंचोपचार की विधि से पुस्तक की पूजा करे, योनिमुद्रा का प्रदर्शन करके भगवती को प्रणाम करे, फिर मूल नवार्णमन्त्र से पीठ आदि में आधारशक्ति की स्थापना करके उसके ऊपर पुस्तक को विराजमान करे। इसके बाद शापोद्धार करना चाहिये । इसके अनेक प्रकार हैं । 'ॐह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं चण्डिकादेव्यै शापनाशानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा' – इस मन्त्र का आदि औरअन्त में सात बार जप करे । यह शापोद्धार मन्त्र कहलाता है । इसके अनन्तर उत्कीलन मन्त्र का जप किया जाता है । इसका जप आदि और अन्त में इक्कीस-इक्कीस बार होता है । यह मन्त्र इस प्रकार

पुस्तकालय
क्रमांक 23414

है – 'ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशति चण्डिके उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा ।' इसके जप के पश्चात् आदि और अन्त में सात – सात बार मृतसंजीवनी विद्या का जप करना चाहिये, जो इस प्रकार है – 'ॐ ह्रीं ह्रीं वं वं ऐं ऐं मृतसंजीवनि विद्ये मृतमुत्थापयोत्थापय क्रीं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा ।' मारीचकल्प के अनुसार सप्तशती-शापविमोचन का मन्त्र यह है – 'ॐ श्रीं श्रीं क्लीं हूं ॐ ऐं क्षोभय मोहय उत्कीलय उत्कीलय उत्कीलय ठं ठं ।' इस मन्त्र का आरम्भ में ही एक सौ आठ बार जप करना चाहिये, पाठ के अन्त में नहीं । अथवा रुद्रयामल महातन्त्र के अन्तर्गत दुर्गाकल्प में कहे हुए चण्डिका-शाप-विमोचन मन्त्रों का आरम्भ में ही पाठ करना चाहिये । वे मन्त्र इस प्रकार है –

ॐ अस्य श्रीचण्डिकाया ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापविमोचन-**मन्त्रस्य** वसिष्ठनारदसंवादसामवेदाधिपतिब्रह्माण ऋषयः सर्वैश्वर्य-**कारिणी** श्रीदुर्गा देवता चरित्रत्रयं बीजं ह्रीं शक्तिः **त्रिगुणात्मस्वरूपचण्डिकाशापविमुक्तौ** मम संकल्पितकार्यसिद्ध्यर्थे जपे **विनियोगः** ।

ॐ (ह्रीं) रीं रेतः स्वरूपिण्यै मधुकैटभमर्दिन्यै ब्रह्मवसिष्ठ-विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥१॥ ॐ श्रीं बुद्धिस्वरूपिण्यै महिषासुरसैन्यनाशिन्यै ब्रह्मवसिष्ठ- विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥२॥ ॐ रं रक्तस्वरूपिण्यै महिषासुरमर्दिन्यै ब्रह्मवसिष्ठ-विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥३॥ ॐ क्षुं क्षुधास्वरूपिण्यै देववन्दितायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥४॥ ॐ छां छायास्वरूपिण्यै दूतसंवादिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥५॥ ॐ शं शक्तिस्वरूपिण्यै धूम्रलोचनघातिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥६॥ ॐ तृं तृषास्वरूपिण्यै चण्डमुण्डवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्

विमुक्ता भव ।।७।। ॐ क्षां क्षान्तिस्वरूपिण्यै रक्तबीजवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ।।८।। ॐ जां जातिस्वरूपिण्यै निशुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ।।९।। ॐ लं लज्जास्वरूपिण्यै शुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ।।१०।। ॐ शां शान्तिस्वरूपिण्यै देवस्तुत्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ।।११।। ॐ श्रं श्रद्धास्वरूपिण्यै सकलफलदात्र्यै ब्रह्मवसिष्ठ-विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ।।१२।। ॐ कां कान्तिस्वरूपिण्यै राजवरप्रदायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ।।१३।। ॐ मां मातृस्वरूपिण्यै अनर्गलमहिमसहितायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ।।१४।। ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै सं सर्वैश्वर्यकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ।।१५।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिवायै अभेद्यकवचस्वरूपिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ।।१६।। ॐ क्रीं काल्यै कालि ह्रीं फट् स्वाहायै ऋग्वेदस्वरूपिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ।।१७।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः ।।१८।।

इत्येवं हि महामन्त्रान् पठित्वा परमेश्वर ।
चण्डीपाठं दिवा रात्रौ कुर्यादेव न संशयः ।।१९।।
एवं मन्त्रं न जानाति चण्डीपाठं करोति यः ।
आत्मानं चैव दातारं क्षीणं कुर्यान्न संशयः ।।२०।।

इस प्रकार शापोद्धार करने के अनन्तर अन्तर्मातृका-बहिर्मातृका आदि न्यास करे, फिर श्रीदेवी का ध्यान करके रहस्य में बताये अनुसार नौ कोष्ठों वाले यन्त्र में महालक्ष्मी आदि का पूजन करे, इसके बाद छः अंगों सहित दुर्गासप्तशती का पाठ आरम्भ किया जाता है । कवच, अर्गला, कीलक और तीनों

रहस्य–ये ही सप्तशती के छः अंग माने गये हैं। इनके क्रम में भी मतभेद है। चिदम्बर संहिता में पहले अर्गला फिर कीलक तथा अन्त में कवच पढ़ने का विधान है। किन्तु योगरत्नावली में पाठका क्रम इससे भिन्न है। उसमें कवच को बीज, अर्गला को शक्ति तथा कीलक को कीलक संज्ञा दी गयी है। जिस प्रकार सब मन्त्रों में पहले बीज का, फिर शक्ति का तथा अन्त में कीलक का उच्चारण होता है, उसी प्रकार यहाँ भी पहले कवचरूप बीज का, फिर अर्गलारूपा शक्ति का तथा अन्त में कीलकरूप कीलक का क्रमशः पाठ होना चाहिये। यहाँ इसी क्रम का अनुसरण किया गया है।

अथ देव्याः कवचम्

ॐ अस्य श्रीचण्डीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, चामुण्डा देवता, अङ्गन्यासोक्तमातरो बीजम् दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वम् , श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ।

ॐ नमश्चण्डिकायै ।।

मार्कण्डेय उवाच

ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम्।
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह।।१।।

ब्रह्मोवाच

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम्।
देवास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने।।२।।
प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्।।३।।
पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्।।४।।

नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः ।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ।।५।।
अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे ।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः ।।६।।
न तेषां जायते किंचिदशुभं रणसंकटे ।
नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि ।।७।।
यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते ।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः ।।८।।
प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना ।
ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना ।।९।।
माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना ।
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया ।।१०।।
श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना ।
ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरणभूषिता ।।११।।
इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः ।
नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः ।।१२।।
दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः ।
शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम् ।।१३।।

खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च।
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम्।।१४।।
दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च।
धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै।।१५।।
नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे।
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि।।१६।।
त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता।।१७।।
दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी।।१८।।
उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी।
ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा।।१९।।
एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना।
जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः।।२०।।
अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता।
शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता।।२१।।
मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी।
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके।।२२।।

शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी।
कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शाङ्करी।।२३।।
नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका।
अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती।।२४।।
दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका।
घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके।।२५।।
कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमङ्गला।
ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी।।२६।।
नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी।
स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी।।२७।।
हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च।
नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी।।२८।।
स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनः शोकविनाशिनी।
हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी।।२९।।
नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा।
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी।।३०।।
कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी।
जङ्घे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी।।३१।।

गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी।
पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत्पादाधस्तलवासिनी।।३२।।
नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी।
रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा।।३३।।
रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती।
अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी।।३४।।
पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा।
ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसंधिषु।।३५।।
शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा।
अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी।।३६।।
प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम्।
वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना।।३७।।
रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी।
सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा।।३८।।
आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी।
यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी।।३९।।
गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके।
पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी।।४०।।

पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा।
राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता।।४१।।
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु।
तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी।।४२।।
पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः।
कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति।।४३।।
तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान्।।४४।।
निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः।
त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान्।।४५।।
इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम्।
यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः।।४६।।
दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः।
जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः।।४७।।
नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः।
स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम्।।४८।।
अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले।
भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः।।४९।।

सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा।
अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः ।।५०।।
ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः।
ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः ।।५१।।
नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते।
मानोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम्।।५२।।
यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले।
जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा।।५३।।
यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम्।
तावत्तिष्ठति मेदिन्यां संततिः पुत्रपौत्रिकी।।५४।।
देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम्।
प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः।।५५।।
लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते ।।ॐ।।५६।।

इति देव्याः कवचं सम्पूर्णम्।

अथार्गलास्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीअर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुर्ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, श्रीजगदम्बाप्रीतये सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥१॥
जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते॥२॥
मधुकैटभविद्राविविधातृवरदे नमः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥३॥
महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥४॥
रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥५॥
शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥६॥

वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।७।।
अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।८।।
नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।९।।
स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।१०।।
चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।११।।
देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।१२।।
विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।१३।।
विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।१४।।
सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।१५।।
विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।१६।।

प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।१७।।
चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।१८।।
कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।१९।।
हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।२०।।
इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।२१।।
देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।२२।।
देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।२३।।
पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्।।२४।।
इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः।
स तु सप्तशतीसंख्यावरमाप्नोति सम्पदाम्।।ॐ।।२५।।

इति देव्या अर्गलास्तोत्रं सम्पूर्णम्।

अथ कीलकम्

ॐ अस्य श्रीकीलकमन्त्रस्य शिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहासरस्वती देवता, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थं सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ।

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे।
श्रेयःप्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्धधारिणे।।१।।
सर्वमेतद्विजानीयान्मन्त्राणामभिकीलकम् ।
सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः।।२।।
सिद्ध्यन्त्युच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि।
एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्रमात्रेण सिद्ध्यति।।३।।
न मन्त्रो नौषधं तत्र न किञ्चिदपि विद्यते।
विना जाप्येन सिद्ध्येत सर्वमुच्चाटनादिकम्।।४।।
समग्राण्यपि सिद्ध्यन्ति लोकशङ्कामिमां हरः।
कृत्वा निमन्त्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम्।।५।।
स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुप्तं चकार सः।
समाप्तिर्न च पुण्यस्य तां यथावन्नियन्त्रणाम्।।६।।

सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेवं न संशयः।
कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः।।७।।
ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदति।
इत्थंरूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम्।।८।।
यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम्।
स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वो जायते नरः।।९।।
न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापीह जायते।
नापमृत्युवशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात्।।१०।
ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति।
ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः।।११।
सौभाग्यादि च यत्किञ्चिद् दृश्यते ललनाजने।
तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम्।।१२।
शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्तिरुच्चकैः।
भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत्।।१३।
ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यसम्पदः।
शत्रुहानिः परो मोक्षः स्तूयते सा न किं जनैः।।ॐ।।१४।

इति देव्याः कीलकस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

अथ वेदोक्तं रात्रिसूक्तम्

ॐ रात्रीत्याद्यष्टर्चस्य सूक्तस्य कुशिकः सौभरो रात्रिर्वा भारद्वाजो ऋषिः, रात्रिर्देवता, गायत्री छन्दः, देवीमाहात्म्यपाठे विनियोगः ।

ॐ रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्यक्षभिः ।
विश्वा अधि श्रियोऽधित ।।१।।
ओर्वप्रा अमर्त्यानिवतो देव्युद्वतः ।
ज्योतिषा बाधते तमः ।।२।।
निरु स्वसारमस्कृतोषसं देव्यायती ।
अपेदु हासते तमः ।।३।।
सा नो अद्य यस्या वयं नि ते यामन्नविक्ष्महि ।
वृक्षे न वसतिं वयः ।।४।।
नि ग्रामासो अविक्षत नि पद्वन्तो निपक्षिणः ।
नि श्येनासश्चिदर्थिनः ।।५।।
यावया वृक्यं वृकं यवय स्तेनमूर्म्ये ।
अथा नः सुतरा भव ।।६।।
उप मा पेपिशत्तमः कृष्णं व्यक्तमस्थित ।
उष ऋणेव यातय ।।७।।
उप ते गा इवाकरं वृणीष्व दुहितर्दिवः ।
रात्रि स्तोमं न जिग्युषे ।।८।।

अथ तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तम्

ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ।।१।।

ब्रह्मोवाच

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ।।२।।
अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा ।।३।।
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्।
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ।।४।।
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने।
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ।।५।।
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः।
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी ।।६।।
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा ।।७।।

त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च॥८॥
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा॥९॥
सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी॥१०॥
यच्च किञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा॥११॥
यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः॥१२॥
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्॥१३॥
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ॥१४॥
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ॥१५॥

इति रात्रिसूक्तम्।

श्रीदेव्यथर्वशीर्षम्

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति ।।१।।

साब्रवीत् - अहं ब्रह्मस्वरूपिणी । मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत् । शून्यं चाशून्यं च ।।२।।

अहमानन्दानानन्दौ । अहं विज्ञानाविज्ञाने । अहं ब्रह्माब्रह्मणी वेदितव्ये । अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि । अहमखिलं जगत् ।।३।।

वेदोऽहमवेदोऽहम् । विद्याहमविद्याहम् । अजाहमनजाहम् । अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम् ।।४।।

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि । अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः । अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि । अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ ।।५।।

अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि । अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि ।।६।।

अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते । अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां

चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् । अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे । य एवं वेद । स दैवीं सम्पदमाप्नोति ।।७।।

ते देवा अब्रुवन्-नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ।।८।।
तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् ।
दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः ।।९।।
देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति ।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु ।।१०।।
कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम् ।
सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम् ।।११।।
महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ।।१२।।
अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव ।
तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः ।।१३।।
कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः ।
पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्यैषा विश्वमातादिविद्योम् ।।१४।।

एषाऽऽत्मशक्तिः । एषा विश्वमोहिनी । पाशाङ्कुशधनुर्बाण-धरा । एषा श्रीमहाविद्या । य एवं वेद स शोकं तरति ।।१५।।

नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः ।।१६।।

सैषाष्टौ वसवः । सैषैकादश रुद्राः । सैषा द्वादशादित्याः । सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च । सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिद्धाः । सैषा सत्त्वरजस्तमांसि । सैषा ब्रह्मविष्णु-रुद्ररूपिणी । सैषा प्रजापती-न्द्रमनवः । सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतींषि । कलाकाष्ठादि-कालरूपिणी । तामहं प्रणौमि नित्यम् ।।

पापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम् ।
अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम् ।।१७।।
वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम् ।
अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम् ।।१८।।
एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः ।
ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः ।।१९।।
वाङ्माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम् ।
सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्तष्टात्तृतीयकः ।
नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः ।
विच्चे नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः ।।२०।।

हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातः सूर्यसमप्रभाम्।
पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्।
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे।।२१।।
नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम्।
महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम्।।२२।।

यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया। यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता। यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या। यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यते अजा। एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका। एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका। अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्याजैका नैकेति ।।२३।।

मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी।
ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी।
यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता।।२४।।
तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम्।
नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम्।।२५।।

इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति। इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां

स्थापयति, शतलक्षं प्रजप्त्वापि सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति । शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः।

दशवारं पठेद् यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते।
महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः ।।२६।।

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति । सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति । निशीथे तुरीयसन्ध्यायां जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति । नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासांनिध्यं भवति । प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति । भौमाश्विन्यां महादेवीसंनिधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति । स महामृत्युं तरति य एवं वेद । इत्युपनिषत् ।।

अथ नवार्णविधिः

श्रीगणपतिर्जयति । 'ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।'

ऋष्यादिन्यासः

ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि । गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः, मुखे । महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः, हृदि । ऐं बीजाय नमः, गुह्ये । ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः । क्लीं कीलकाय नमः, नाभौ ।

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे'

करन्यासः

ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ चामुण्डायैअनामिकाभ्यां नमः । ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यासः

ॐ ऐं हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ क्लीं शिखायै वषट् । ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम् । ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ऐ ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट् ।

अक्षरन्यासः

ॐ ऐं नमः, शिखायाम् । ॐ ह्रीं नमः, दक्षिणनेत्रे । ॐ क्लीं नमः, वामनेत्रे । ॐ चां नमः, दक्षिणकर्णे । ॐ मुं नमः, वामकर्णे । ॐ डां नमः, दक्षिणनासापुटे । ॐ यैं नमः, वामनासापुटे । ॐ विं नमः, मुखे । ॐ च्चें नमः, गुह्ये । इत्थं न्यासं विधाय मूलमन्त्रेणाष्टवारं व्यापकं (द्वाभ्यां हस्ताभ्यां शिरसः पादपर्यन्तं सर्वाण्यङ्गाणि स्पृशेत्) कुर्यात् पुनः प्रत्येकं दिक्षु छोटिकां (चुटकी) वादयन् न्यासं कुर्यात् ।

दिङ्न्यासः।

ॐ ऐं प्राच्यै नमः । ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः । ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः । ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः । ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः । ॐ क्लीं वायव्यै नमः । ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः । ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः ।

ध्यानम्

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ।।१।।
अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलं घण्टां सुराभाजनम् ।
शूलं पाशसुदर्शने च-दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ।।२।।

घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ।।३।।

ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ।।
ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे ।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये ।।

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा ।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि! त्वत्प्रसादान्महेश्वरि! ।।

सप्तशतीन्यासः

प्रथममध्यमोत्तरचरित्राणां ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, नन्दाशाकम्भरीभीमाः शक्तयः, रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि, अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि, ऋग्यजुःसामवेदा ध्यानानि, सकलकामनासिद्धये श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ।।

अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।

ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वनेन च ।।

तर्जनीभ्यां नमः ।

ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ।।

मध्यमाभ्यां नमः ।

ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ।।

अनामिकाभ्यां नमः ।

ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ।।

कनिष्ठिकाभ्यां नम; ।

ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ।।

करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा० - हृदयाय नमः ।
ॐ शूलेन पाहि नो देवि० - शिरसे स्वाहा ।
ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च० - शिखायै वषट् ।
ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि० - कवचाय हुम् ।
ॐ खड्गशूलगदादीनि० - नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे० - अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ।।

अथ श्रीदुर्गासप्तशती

प्रथमोऽध्यायः

मधुकैटभवधः

विनियोगः

ॐ प्रथमचरित्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, महाकाली देवता, गायत्री छन्दः, नन्दा शक्तिः, रक्तदन्तिका बीजम्, अग्निस्तत्त्वम्, ऋग्वेदः स्वरूपम्, श्रीमहाकालीप्रीत्यर्थे प्रथमचरित्रजपे विनियोगः ।

ध्यानम्

ॐ खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ।।१।।

ॐ नमश्चण्डिकायै

ॐ ऐं मार्कण्डेय उवाच ।।१।।

सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः ।
निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद् गदतो मम ।।२।।

महामायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः।
स बभूव महाभागः सावर्णिस्तनयो रवेः।।३।।
स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं चैत्रवंशसमुद्भवः।
सुरथो नाम राजाभूत्समस्ते क्षितिमण्डले।।४।।
तस्य पालयतः सम्यक् प्रजाः पुत्रानिवौरसान्।
बभूवुः शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसिनस्तदा।।५।।
तस्य तैरभवद् युद्धमतिप्रबलदण्डिनः।
न्यूनैरपि स तैर्युद्धे कोलाविध्वंसिभिर्जितः।।६।।
ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत्।
आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः।।७।।
अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य दुरात्मभिः।
कोशो बलं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः।।८।।
ततो मृगयाव्याजेन हृतस्वाम्यः स भूपतिः।
एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम्।।९।।
स तत्राश्रममद्राक्षीद् द्विजवर्यस्य मेधसः।
प्रशान्तश्वापदाकीर्णं मुनिशिष्योपशोभितम्।।१०।।
तस्थौ कंचित्स कालं च मुनिना तेन सत्कृतः।
इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन्मुनिवराश्रमे।।११।।
सोऽचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्टचेतनः।
मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं मया हीनं पुरं हि तत्।।१२।।

मद्भृत्यैस्तैरसद्वृत्तैर्धर्मतः पाल्यते न वा।
न जाने स प्रधानो मे शूरहस्ती सदामदः ।।१३।।
मम वैरिवशं यातः कान् भोगानुपलप्स्यते।
ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः ।।१४।।
अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम्।
असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययम्।।१५।।
संचितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोशो गमिष्यति।
एतच्चान्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिवः ।।१६।।
तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः।
स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्र कः ।।१७।।
सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे।
इत्याकर्ण्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम्।।१८।।
प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपम्।।१९।।

वैश्य उवाच ।।२०।।

समाधिर्नाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले।।२१।।
पुत्रदारैर्निरस्तश्च धनलोभादसाधुभिः।
विहीनश्च धनैर्दारैः पुत्रैरादाय मे धनम्।।२२।।
वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्तबन्धुभिः।
सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुशलाकुशलात्मिकाम्।।२३।।

प्रवृत्तिं स्वजनानां च दाराणां चात्र संस्थितः ।
किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतम् ।।२४।।
कथं ते किं नु सद्वृत्ता दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः ।।२५।।

राजोवाच ।।२६।।

यैर्निरस्तो भवाँल्लुब्धैः पुत्रदारादिभिर्धनैः ।।२७।।
तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम् ।।२८।।

वैश्य उवाच ।। २९।।

एवमेतद्यथा प्राह भवानस्मद्गतं वचः ।।३०।।
किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतां मनः ।
यैः संत्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धैर्निराकृतः ।।३१।।
पतिस्वजनहार्दं च हार्दि तेष्वेव मे मनः ।
किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते ।।३२।।
यत्प्रेमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु ।
तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यं च जायते ।।३३।।
करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम् ।।३४।।

मार्कण्डेय उवाच ।।३५।।

ततस्तौ सहितौ विप्र तं मुनिं समुपस्थितौ ।।३६।।
समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिवसत्तमः ।
कृत्वा तु तौ यथान्यायं यथार्हं तेन संविदम् ।।३७।।
उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ ।।३८।।

राजोवाच ।।३९।।

भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत् ।।४०।।
दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्तायत्ततां विना।
ममत्वं गतराज्यस्य राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि ।।४१।।
जानतोऽपि यथाज्ञस्य किमेतन्मुनिसत्तम।
अयं च निकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः ।।४२।।
स्वजनेन च संत्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्यति।
एवमेष तथाहं च द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ ।।४३।।
दृष्टदोषेऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ।
तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि ।।४४।।
ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता ।।४५।।

ऋषिरुवाच ।।४६।।

ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषयगोचरे ।।४७।।
विषयश्च महाभाग याति चैवं पृथक् पृथक्।
दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथापरे ।।४८।।
केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः।
ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किं तु ते न हि केवलम् ।।४९।।
यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः।
ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम् ।।५०।।

मनुष्याणां च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयोः।
ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान् पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु ।।५१।।
कणमोक्षादृतान्मोहात्पीड्यमानानपि क्षुधा।
मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषाः सुतान् प्रति ।।५२।।
लोभात्प्रत्युपकाराय नन्वेतान् किं न पश्यसि।
तथापि ममतावर्त्ते मोहगर्ते निपातिताः ।।५३।।
महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणा।
तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः ।।५४।।
महामाया हरेश्चैषा तया सम्मोह्यते जगत्।
ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ।।५५।।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।
तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम्।।५६।।
सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये।
सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी।।५७।।
संसारबन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी।।५८।।

राजोवाच ।।५९।।

भगवन् का हि सा देवी महामायेति यां भवान्।।६०।।
ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज।
यत्प्रभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा।।६१।।
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदां वर।।६२।।

ऋषिरुवाच ।।६३।।

नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम् ।।६४।।
तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम।
देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा ।।६५।।
उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते।
योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते ।।६६।।
आस्तीर्य शेषमभजत्कल्पान्ते भगवान् प्रभुः ।
तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ ।।६७।।
विष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ।
स नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः ।।६८।।
दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दनम्।
तुष्टाव योगनिद्रां तामेकाग्रहृदयस्थितः ।।६९।।
विबोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्रकृतालयाम्।
विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ।।७०।।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ।।७१।।

ब्रह्मोवाच ।।७२।।

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ।।७३।।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता।
अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः ।।७४।।

त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा।
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्॥७५॥
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा।
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने॥७६॥
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये।
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः॥७७॥
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी।
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी॥७८॥
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा।
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा॥७९॥
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च।
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा॥८०॥
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा।
सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी॥८१॥
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी।
यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके॥८२॥
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा।
यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्॥८३॥
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः।
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च॥८४॥

कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्।
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता।।८५।।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ।
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु।।८६।।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ।।८७।।

ऋषिरुवाच ।।८८।।

एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा।।८९।।
विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ।
नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः ।।९०।।
निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः।
उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः।।९१।।
एकार्णवेऽहिशयनात्ततः स ददृशे च तौ।
मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ।।९२।।
क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितोद्यमौ।
समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरिः।।९३।।
पञ्चवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः।
तावप्यतिबलोन्मत्तौ महामायाविमोहितौ।।९४।।
उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो व्रियतामिति केशवम्।।९५।।

श्रीभगवानुवाच ।।९६।।

भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि ।।९७।।
किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतं मम ।।९८।।

ऋषिरुवाच ।।९९।।

वञ्चिताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत् ।।१००।।
विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान् कमलेक्षणः ।
आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता ।।१०१।।

ऋषिरुवाच ।।१०२।।

तथेत्युक्त्वा भगवता शङ्खचक्रगदाभृता ।
कृत्वा चक्रेण वै च्छिन्ने जघने शिरसी तयोः ।।१०३।।
एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम् ।
प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामि ते ।।ऐं ॐ।।१०४।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
मधुकैटभवधो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

उवाच १४, अर्धश्लोकाः २४, श्लोकाः ६६,
एवमादितः ॥१०४॥

द्वितीयोऽध्यायः

महिषासुरसैन्यवधः

विनियोगः

ॐमध्यमचरित्रस्य विष्णुर्ऋषिः, महालक्ष्मीर्देवता, उष्णिक् छन्दः, शाकम्भरी शक्तिः, दुर्गा बीजम्, वायुस्तत्त्वम्, यजुर्वेदः स्वरूपम्, श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं मध्यमचरित्रजपे विनियोगः ।

ध्यानम्

ॐ अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ।।

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच ।।१।।

देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा ।
महिषेऽसुराणामधिपे देवानां च पुरन्दरे ।।२।।
तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यं पराजितम् ।
जित्वा च सकलान् देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः ।।३।।

ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिम्।
पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ।।४।।
यथावृत्तं तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम्।
त्रिदशाः कथयामासुर्देवाभिभवविस्तरम्।।५।।
सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च।
अन्येषां चाधिकारान् स स्वयमेवाधितिष्ठति।।६।।
स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि।
विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना।।७।।
एतद्वः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितम्।
शरणं वः प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम्।।८।।
इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः।
चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ।।९।।
ततोऽतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः।
निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शंकरस्य च।।१०।।
अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः।
निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत।।११।।
अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतम्।
ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम्।।१२।।
अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम्।
एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा।।१३।।

यदभूच्छाम्भवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम्।
याम्येन चाभवन् केशा बाहवो विष्णुतेजसा।।१४।।
सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत्।
वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस्तेजसा भुवः।।१५।।
ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदङ्गुल्योऽर्कतेजसा।
वसूनां च कराङ्गुल्यः कौबेरेण च नासिका।।१६।।
तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः प्राजापत्येन तेजसा।
नयनत्रितयं जज्ञे तथा पावकतेजसा।।१७।।
भ्रुवौ च संध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च।
अन्येषां चैव देवानां सम्भवस्तेजसां शिवा।।१८।।
ततः समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्भवाम्।
तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः।।१९।।
शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक्।
चक्रं च दत्तवान् कृष्णः समुत्पाद्य स्वचक्रतः।।२०।।
शङ्खं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः।
मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधी।।२१।।
वज्रमिन्द्रः समुत्पाद्य कुलिशादमराधिपः।
ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद् गजात्।।२२।।
कालदण्डाद्यमो दण्डं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ।
प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम्।।२३।।

समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन् दिवाकरः।
कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्याश्चर्म च निर्मलम्।।२४।।
क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाम्बरे।
चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च।।२५।।
अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान् सर्वबाहुषु।
नूपुरौ विमलौ तद्वद् ग्रैवेयकमनुत्तमम्।।२६।।
अङ्गुलीयकरत्नानि समस्तास्वङ्गुलीषु च।
विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलम्।।२७।।
अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाभेद्यं च दंशनम्।
अम्लानपङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापराम्।।२८।।
अददज्जलधिस्तस्यै पङ्कजं चातिशोभनम्।
हिमवान् वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च।।२९।।
ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः।
शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम्।।३०।।
नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम्।
अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा।।३१।।
सम्मानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः।
तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः।।३२।।
अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत्।
चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे।।३३।।

चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः।
जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीम्।।३४।।
तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः।
दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः।।३५।।
सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः।
आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः।।३६।।
अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः।
स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयां त्विषा।।३७।।
पादाक्रान्त्या नतभुवं किरीटोल्लिखिताम्बराम्।
क्षोभिताशेषपातालां धनुर्ज्यानिःस्वनेन ताम्।।३८।।
दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद् व्याप्य संस्थिताम्।
ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम्।।३९।।
शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपितदिगन्तरम्।
महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः।।४०।।
युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ्गबलान्वितः।
रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः।।४१।।
अयुध्यतायुतानां च सहस्रेण महाहनुः।
पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः।।४२।।
अयुतानां शतैः षड्भिर्बाष्कलो युयुधे रणे।
गजवाजिसहस्रौघैरनेकैः परिवारितः।।४३।।

वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत।
बिडालाख्योऽयुतानां च पञ्चाशद्भिरथायुतैः ।।४४।।
युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः।
अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर्वृताः ।।४५।।
युयुधुः संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः।
कोटिकोटिसहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा ।।४६।।
हयानां च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुरः।
तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा ।।४७।।
युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशुपट्टिशैः।
केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित्पाशांस्तथापरे ।।४८।।
देवीं खड्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः।
सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका ।।४९।।
लीलयैव प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी।
अनायस्तानना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभिः ।।५०।।
मुमोचासुरदेहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी।
सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेसरी ।।५१।।
चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताशनः।
निःश्वासान् मुमुचे यांश्च युध्यमाना रणेऽम्बिका ।।५२।।
त एव सद्यः सम्भूता गणाः शतसहस्रशः।
युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालासिपट्टिशैः ।।५३।।

नाशयन्तोऽसुरगणान् देवीशक्त्युपबृंहिताः ।
अवादयन्त पटहान् गणाः शङ्खांस्तथापरे ।।५४।।
मृदङ्गांश्च तथैवान्ये तस्मिन् युद्धमहोत्सवे ।
ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्तिवृष्टिभिः ।।५५।।
खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान् ।
पातयामास चैवान्यान् घण्टास्वनविमोहितान् ।।५६।।
असुरान् भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्षयत् ।
केचिद् द्विधा कृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे ।।५७।।
विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते ।
वेमुश्च केचिद्रुधिरं मुसलेन भृशं हताः ।।५८।।
केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि ।
निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे ।।५९।।
श्येनानुकारिणः प्राणान् मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः ।
केषांचिद् बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे ।।६०।।
शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः ।
विच्छिन्नजङ्घास्त्वपरे पेतुरुर्व्यां महासुराः ।।६१।।
एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधा कृताः ।
छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः ।।६२।।
कबन्धा युयुधुर्देव्या गृहीतपरमायुधाः ।
ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः ।।६३।।

कबन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः ।
तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः ।।६४।।
पातितै रथनागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा ।
अगम्या साभवत्तत्र यत्राभूत्स महारणः ।।६५।।
शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र प्रसुस्रुवुः ।
मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम् ।।६६।।
क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका ।
निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृणदारुमहाचयम् ।।६७।।
स च सिंहो महानादमुत्सृजन्धुतकेसरः ।
शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति ।।६८।।
देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं महासुरैः ।
यथैषां तुतुषुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि ।।ॐ।।६९।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
महिषासुरसैन्यवधो नाम द्वितीयोऽध्यायः ।।२।।
उवाच १, श्लोकाः ६८, एवं ६९,
एवमादितः १७३ ।।

तृतीयोऽध्यायः

महिषासुरवधः

ध्यानम्

ॐ उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम् ।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्देऽरविन्दस्थिताम् ।।

ॐ ऋषिरुवाच ।।१।।

निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः ।
सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धुमथाम्बिकाम् ।।२।।
स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः ।
यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः ।।३।।
तस्यच्छित्त्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान् ।
जघान तुरगान् बाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम् ।।४।।
चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छ्रितम् ।
विव्याध चैव गात्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगैः ।।५।।

सच्छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः ।
अभ्यधावत तां देवीं खड्गचर्मधरोऽसुरः ।।६।।
सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि ।
आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान् ।।७।।
तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृपनन्दन ।
ततो जग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः ।।८।।
चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः ।
जाज्वल्यमानं तेजोभी रविबिम्बमिवाम्बरात् ।।९।।
दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवी शूलममुञ्चत ।
तच्छूलं शतधा तेन नीतं स च महासुरः ।।१०।।
हते तस्मिन्महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ ।
आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः ।।११।।
सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्रुतम् ।
हुंकाराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम् ।।१२।।
भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः ।
चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि साच्छिनत् ।।१३।।
ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरे स्थितः ।
बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा ।।१४।।
युद्ध्यमानौ ततस्तौ तु तस्मान्नागान्महीं गतौ ।
युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः ।।१५।।

ततो वेगात् खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा।
करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम्।।१६।।
उदग्रश्च रणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः।
दन्तमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः।।१७।।
देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम्।
वाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथान्धकम्।।१८।।
उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव च महाहनुम्।
त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी।।१९।।
बिडालस्यासिना कायात्पातयामास वै शिरः।
दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्ये यमक्षयम्।।२०।।
एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः।
माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान्।।२१।।
कांश्चित्तुण्डप्रहारेण खुरक्षेपैस्तथापरान्।
लाङ्गूलताडितांश्चान्याञ्छृङ्गाभ्यां च विदारितान्।।२२।।
वेगेन कांश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन च।
निःश्वासपवनेनान्यान् पातयामास भूतले।।२३।।
निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः।
सिंहं हन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका।।२४।।
सोऽपि कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः।
शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च।।२५।।

वेगभ्रमणविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत।
लाङ्गूलेनाहतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः ।।२६।।
धुतशृङ्गविभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घनाः।
श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः ।।२७।।
इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुरम्।
दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाकरोत्।।२८।।
सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरम्।
तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे।।२९।।
ततः सिंहोऽभवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः।
छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यत।।३०।।
तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः।
तं खड्गचर्मणा सार्धं ततः सोऽभून्महागजः।।३१।।
करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च।
कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत।।३२।।
ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः।
तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम्।।३३।।
ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम्।
पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना।।३४।।
ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः।
विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान्।।३५।।

सा च तान् प्रहितांस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः ।
उवाच तं मदोद्धूतमुखरागाकुलाक्षरम् ।।३६।।

देव्युवाच ।।३७।।

गर्ज गर्ज क्षण मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम् ।
मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः ।।३८।।

ऋषिरुवाच ।।३९।।

एवमुक्त्वा समुत्पत्य साऽऽरूढा तं महासुरम् ।
पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत् ।।४०।।
ततः सोऽपि पदाऽऽक्रान्तस्तया निजमुखात्ततः ।
अर्धनिष्क्रान्त एवासीद् देव्या वीर्येण संवृतः ।।४१।।
अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः ।
तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः ।।४२।।
ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत् ।
प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला देवतागणाः ।।४३।।
तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः ।
जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः ।।ॐ।।४४।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
महिषासुरवधो नाम तृतीयोऽध्यायः ।।३।।
उवाच ३, श्लोकाः ४१, एवम् ४४,
एवमादितः २१७ ।।

चतुर्थोऽध्यायः

शक्रादिस्तुतिः

ध्यानम्

ॐ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां
शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः।।

ॐ ऋषिरुवाच ।। १।।

शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये
तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या ।
तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा
वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्‌गमचारुदेहाः ।।२।।
देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या
निश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या ।
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः ।।३।।

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च ।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु ।।४।।
या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ।।५।।
किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्
किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि ।
किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि
सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ।।६।।
हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषै-
र्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा ।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूत-
मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ।।७।।
यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन
तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि ।
स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु -
रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च ।।८।।

या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता त्व -
मभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः ।
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषै-
र्विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि ।।९।।
शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधान-
मुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम् ।
देवी त्रयी भगवती भवभवनाय
वार्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री ।।१०।।
मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा
दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा ।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा
गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ।।११।।
ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्र-
बिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम् ।
अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि
वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ।।१२।।
दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकराल-
मुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः ।
प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं
कैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन ।।१३।।

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि ।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत -
न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥१४॥
ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः ।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥१५॥
धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्मा-
ण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति ।
स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादा-
ल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन ॥१६॥
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता ॥१७॥
एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम् ।
संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु
मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि ॥१८॥

दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म
सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम् ।
लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता
इत्थं मतिर्भवति तेष्वपि तेऽतिसाध्वी ।।१९।।
खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः
शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम् ।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्ड-
योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ।।२०।।
दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं
रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः ।
वीर्यं च हन्तृ हृतदेवपराक्रमाणां
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ।।२१।।
केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य
रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र ।
चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा
त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि ।।२२।।
त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन
त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा ।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्त-
मस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते ।।२३।।

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।२४।।
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि।।२५।।
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्।।२६।।
खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।।२७।।

ऋषिरुवाच।।२८।।

एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः।
अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः।।२९।।
भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैस्तु धूपिता।
प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान् प्रणतान् सुरान्।।३०।।

देव्युवाच।।३१।।

व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम्।।३२।।

देवा ऊचुः।।३३।।

भगवत्या कृतं सर्वं न किंचिदवशिष्यते।।३४।।
यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः।
यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि।।३५।।

संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः।
यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने।।३६।।
तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धनदारादिसम्पदाम्।
वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके।।३७।।

ऋषिरुवाच।।३८।।

इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः।
तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप।।३९।।
इत्येतत्कथितं भूप सम्भूता सा यथा पुरा।
देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी।।४०।।
पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्भूता यथाभवत्।
वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भनिशुम्भयोः।।४१।।
रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी।
तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं यथावत्कथयामि ते।।ह्रीं ॐ।।४२।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
शक्रादिस्तुतिर्नाम चतुर्थोऽध्यायः ।।४।।
उवाच ५, अर्धश्लोकौ २, श्लोकाः ३५, एवं ४२,
एवमादितः २५९ ॥

पञ्चमोऽध्यायः

देवैर्देवीस्तुतिः देव्या दूतसंवादश्च

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीउत्तरचरित्रस्य रुद्र ऋषिः, महासरस्वती देवता, अनुष्टुप् छन्दः, भीमा शक्तिः, भ्रामरी बीजम्, सूर्यस्तत्त्वम्, सामवेदः स्वरूपम्, महासरस्वतीप्रीत्यर्थे उत्तरचरित्रपाठे विनियोगः ।

ध्यानम्

ॐ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।

ॐ क्लीं ऋषिरुवाच ।।१।।

पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपतेः।
त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृता मदबलाश्रयात्।।२।।
तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैन्दवम्।
कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च।।३।।

तावेव पवनर्द्धिं च चक्रतुर्वह्निकर्म च।
ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः ।।४।।
हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः।
महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम् ।।५।।
तयास्माकं वरो दत्तो यथाऽऽपत्सु स्मृताखिलाः।
भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः ।।६।।
इति कृत्वा मतिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम्।
जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः ।।७।।

देवा ऊचुः ।।८।।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ।।९।।
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ।।१०।।
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ।।११।।
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ।।१२।।
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ।।१३।।

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै ।।१४।। नमस्तस्यै ।।१५।।
नमस्तस्यै नमो नमः ।।१६।।
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते।
नमस्तस्यै ।।१७।। नमस्तस्यै ।।१८।।
नमस्तस्यै नमो नमः ।।१९।।
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ।।२०।। नमस्तस्यै ।।२१।।
नमस्तस्यै नमो नमः ।।२२।।
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ।।२३।। नमस्तस्यै ।।२४।।
नमस्तस्यै नमो नमः ।।२५।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ।।२६।। नमस्तस्यै ।।२७।।
नमस्तस्यै नमो नमः ।।२८।।
या देवी सर्वभूतेषुच्छायारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ।।२९।। नमस्तस्यै ।।३०।।
नमस्तस्यै नमो नमः ।।३१।।
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ।।३२।। नमस्तस्यै ।।३३।।

नमस्तस्यै नमो नमः ।।३४।।
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ।।३५।। नमस्तस्यै।।३६।।
नमस्तस्यै नमो नमः ।।३७।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ।।३८।। नमस्तस्यै।।३९।।
नमस्तस्यै नमो नमः ।।४०।।
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ।।४१।। नमस्तस्यै।।४२।।
नमस्तस्यै नमो नमः ।।४३।।
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ।।४४।। नमस्तस्यै।।४५।।
नमस्तस्यै नमो नमः ।।४६।।
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ।।४७।। नमस्तस्यै।।४८।।
नमस्तस्यै नमो नमः ।।४९।।
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ।।५०।। नमस्तस्यै।।५१।।
नमस्तस्यै नमो नमः ।।५२।।

या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ॥५३॥ नमस्तस्यै ॥५४॥
नमस्तस्यै नमो नमः ॥५५॥
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ॥५६॥ नमस्तस्यै ॥५७॥
नमस्तस्यै नमो नमः ॥५८॥
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ॥५९॥ नमस्तस्यै ॥६०॥
नमस्तस्यै नमो नमः ॥६१॥
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ॥६२॥ नमस्तस्यै ॥६३॥
नमस्तस्यै नमो नमः ॥६४॥
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ॥६५॥ नमस्तस्यै ॥६६॥
नमस्तस्यै नमो नमः ॥६७॥
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ॥६८॥ नमस्तस्यै ॥६९॥
नमस्तस्यै नमो नमः ॥७०॥
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ॥७१॥ नमस्तस्यै ॥७२॥

नमस्तस्यै नमो नमः ।।७३।।
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ।।७४।। नमस्तस्यै ।।७५।।
नमस्तस्यै नमो नमः ।।७६।।
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः ।।७७।।
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै ।।७८।। नमस्तस्यै ।।७९।।
नमस्तस्यै नमो नमः ।।८०।।

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-
त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ।।८१।।
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै-
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ।।८२।।

ऋषिरुवाच ।।८३।।

एवं स्तवादियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती।
स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन।।८४।।

साब्रवीत्तान् सुरान् सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का।
शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूताब्रवीच्छिवा।।८५।।
स्तोत्रं ममैतत् क्रियते शुम्भदैत्यनिराकृतैः।
देवैः समेतैः समरे निशुम्भेन पराजितैः।।८६।।
शरीरकोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका।
कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते।।८७।।
तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापि पार्वती।
कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया।।८८।।
ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहरम्।
ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः।।८९।।
ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता सातीव सुमनोहरा।
काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम्।।९०।।
नैव तादृक् क्वचिद्रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम्।
ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर।।९१।।
स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्त्विषा।
सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान् द्रष्टुमर्हति।।९२।।
यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो।
त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे।।९३।।
ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात्।
पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः।।९४।।

विमानं हंससंयुक्तमेतत्तिष्ठति तेऽङ्गणे।
रत्नभूतमिहानीतं यदासीद्वेधसोऽद्भुतम्॥९५॥
निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात्।
किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालामम्लानपङ्कजाम्॥९६॥
छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्त्रावि तिष्ठति।
तथायं स्यन्दनवरो यः पुराऽऽसीत्प्रजापतेः॥९७॥
मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वया हृता।
पाशः सलिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे॥९८॥
निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः।
वह्निरपि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी॥९९॥
एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते।
स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते॥१००॥

ऋषिरुवाच॥१०१॥

निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः।
प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम्॥१०२॥
इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम।
यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु॥१०३॥
स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने।
सा देवी तां ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा॥१०४॥

दूत उवाच ।।१०५।।

देवि दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः ।
दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः ।।१०६।।
अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु ।
निर्जिताखिलदैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत् ।।१०७।।
मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः ।
यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक् पृथक् ।।१०८।।
त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्यशेषतः ।
तथैव गजरत्नं च हृत्वा देवेन्द्रवाहनम् ।।१०९।।
क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नं ममामरैः ।
उच्चैःश्रवससंज्ञं तत्प्रणिपत्य समर्पितम् ।।११०।।
यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च ।
रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने ।।१११।।
स्त्रीरत्नभूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम् ।
सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम् ।।११२।।
मां वा ममानुजं वापि निशुम्भमुरुविक्रमम् ।
भज त्वं चञ्चलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः ।।११३।।
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात् ।
एतद् बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज ।।११४।।

ऋषिरुवाच ।।११५।।

इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तः स्मिता जगौ।
दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत् ।।११६।।

देव्युवाच ।।११७।।

सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किञ्चित्त्वयोदितम्।
त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः ।।११८।।
किं त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम्।
श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या कृता पुरा।।११९।।
यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति।।१२०।।
तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः।
मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु।।१२१।।

दूत उवाच ।।१२२।।

अवलिप्तासि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः।
त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः ।।१२३।।
अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि।
तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका।।१२४।।
इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे।
शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम्।।१२५।।

सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः ।
केशाकर्षणनिर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि ।।१२६।।

देव्युवाच ।।१२७।।

एवमेतद् बली शुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्यवान् ।
किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा ।।१२८।।
स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत्सर्वमादृतः ।
तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु तत् ।।ॐ।।१२९।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
देव्या दूतसंवादो नाम पञ्चमोऽध्यायः ।।५।।
उवाच ९, त्रिपान्मन्त्राः ६६, श्लोकाः ५४, एवं १२९,
एवमादितः ३८८ ।।

षष्ठोऽध्यायः

धूम्रलोचनवधः

ध्यानम्

ॐ नागाधीश्वरविष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावली-
भास्वद्देहलतां दिवाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम् ।
मालाकुम्भकपालनीरजकरां चन्द्रार्धचूडां परां
सर्वज्ञेश्वरभैरवाङ्कनिलयां पद्मावतीं चिन्तये ।।

ॐ ऋषिरुवाच ।।१।।

इत्याकर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः ।
समाचष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात् ।।२।।
तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट् ततः ।
सक्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्रलोचनम् ।।३।।
हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसैन्यपरिवारितः ।
तामानय बलाद् दुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम् ।।४।।
तत्परित्राणदः कश्चिद्यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः ।
स हन्तव्योऽमरो वापि यक्षो गन्धर्व एव वा ।।५।।

ऋषिरुवाच ।।६।।

तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः ।
वृतः षष्ट्या सहस्राणामसुराणां द्रुतं ययौ ।।७।।
स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचलसंस्थिताम् ।
जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः ।।८।।
न चेत्प्रीत्याद्य भवती मद्भर्तारमुपैष्यति ।
ततो बलान्नयाम्येष केशाकर्षणविह्वलाम् ।।९।।

देव्युवाच ।।१०।।

दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान् बलसंवृतः ।
बलान्नयसि मामेवं ततः किं ते करोम्यहम् ।।११।।

ऋषिरुवाच ।।१२।।

इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः ।
हुंकारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः ।।१३।।
अथ क्रुद्धं महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका ।
ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्तिपरश्वधैः ।।१४।।
ततो धुतसटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम् ।
पपातासुरसेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः ।।१५।।
कांश्चित् करप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान् ।
आक्रम्य चाधरेणान्यान् स जघान महासुरान् ।।१६।।

केषांचित्पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी।
तथा तलप्रहारेण शिरांसि कृतवान् पृथक् ॥१७॥
विच्छिन्नबाहुशिरसः कृतास्तेन तथापरे।
पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुतकेसरः ॥१८॥
क्षणेन तद्बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना।
तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपिना ॥१९॥
श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोचनम्।
बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवीकेसरिणा ततः ॥२०॥
चुकोप दैत्याधिपतिः शुम्भः प्रस्फुरिताधरः।
आज्ञापयामास च तौ चण्डमुण्डौ महासुरौ ॥२१॥
हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्बहुभिः परिवारितौ।
तत्र गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु ॥२२॥
केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदि वः संशयो युधि।
तदाशेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम् ॥२३॥
तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते।
शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम् ॥ॐ॥२४॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
शुम्भनिशुम्भसेनानीधूम्रलोचनवधो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥६॥
उवाच ४, श्लोकाः २०, एवं २४,
एवमादितः ४१२ ॥

सप्तमोऽध्यायः

चण्डमुण्डवधः

ध्यानम्

ॐ ध्यायेयं रत्नपीठे शुककलपठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीं
न्यस्तैकाङ्घ्रिं सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम्।
कह्लाराबद्धमालां नियमितविलसच्चोलिकां रक्तवस्त्रां
मातङ्गीं शङ्खपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासिभालाम्।।

ॐ ऋषिरुवाच ।।१।।

आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्डमुण्डपुरोगमाः।
चतुरङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः।।२।।
ददृशुस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम्।
सिंहस्योपरि शैलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने।।३।।
ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः।
आकृष्टचापासिधरास्तथान्ये तत्समीपगाः।।४।।
ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन् प्रति।
कोपेन चास्या वदनं मषीवर्णमभूत्तदा।।५।।

भ्रुकुटीकुटिलात्तस्या ललाटफलकाद्द्रुतम्।
काली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी ।।६।।
विचित्रखट्वाङ्गधरा नरमालाविभूषणा।
द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसातिभैरवा ।।७।।
अतिविस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा।
निमग्नारक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा ।।८।।
सा वेगेनाभिपतिता घातयन्ती महासुरान्।
सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत तद्बलम् ।।९।।
पार्ष्णिग्राहाङ्कुशग्राहियोधघण्टासमन्वितान्।
समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान् ।।१०।।
तथैव योधं तुरगै रथं सारथिना सह।
निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्यतिभैरवम् ।।११।।
एकं जग्राह केशेषु ग्रीवायामथ चापरम्।
पादेनाक्रम्य चैवान्यमुरसान्यमपोथयत् ।।१२।।
तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथासुरैः।
मुखेन जग्राह रुषा दशनैर्मथितान्यपि ।।१३।।
बलिनां तद् बलं सर्वमसुराणां दुरात्मनाम्।
ममर्दाभक्षयच्चान्यानन्यांश्चाताडयत्तथा ।।१४।।
असिना निहताः केचित्केचित्खट्वाङ्गताडिताः।
जग्मुर्विनाशमसुरा दन्ताग्राभिहतास्तथा ।।१५।।

क्षणेन तद् बलं सर्वमसुराणां निपातितम्।
दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम्।।१६।।
शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षीं तां महासुरः।
छादयामास चक्रैश्च मुण्डः क्षिप्तैः सहस्रशः।।१७।।
तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम्।
बभुर्यथार्कबिम्बानि सुबहूनि घनोदरम्।।१८।।
ततो जहासातिरुषा भीमं भैरवनादिनी।
कालीकरालवक्त्रान्तर्दुर्दर्शदशनोज्ज्वला ।।१९।।
उत्थाय च महासिं हं देवी चण्डमधावत।
गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासिनाच्छिनत्।।२०।।
अथ मुण्डोऽभ्यधावत्तां दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्।
तमप्यपातयद्भूमौ सा खड्गाभिहतं रुषा।।२१।।
हतशेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्।
मुण्डं च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम्।।२२।।
शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्डमेव च।
प्राह प्रचण्डाट्टहासमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम्।।२३।।
मया तवात्रोपहृतौ चण्डमुण्डौ महापशू।
युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हनिष्यसि।।२४।।

ऋषिरुवाच ।।२५।।

तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डौ महासुरौ।
उवाच कालीं कल्याणी ललितं चण्डिका वचः ।।२६।।
यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता।
चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि भविष्यसि ।।ॐ।।२७।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
चण्डमुण्डवधो नाम सप्तमोऽध्यायः ।।७।।
उवाच २, श्लोकाः २५, एवं २७,
एवमादितः ४३९ ॥

अष्टमोऽध्यायः

रक्तबीजवधः

ध्यानम्

ॐ अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं
धृतपाशाङ्कुशबाणचापहस्ताम् ।
अणिमादिभिरावृतां मयूखै-
रहमित्येव विभावये भवानीम् ।।

ॐ ऋषिरुवाच ।।१।।

चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते ।
बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः ।।२।।
ततः कोपपराधीनचेताः शुम्भः प्रतापवान् ।
उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह ।।३।।
अद्य सर्वबलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः ।
कम्बूनां चतुरशीतिर्निर्यान्तु स्वबलैर्वृताः ।।४।।
कोटिवीर्याणि पञ्चाशदसुराणां कुलानि वै ।
शतं कुलानि धौम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया ।।५।।

कालका दौर्हृदा मौर्याः कालकेयास्तथासुराः।
युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम ।।६।।
इत्याज्ञाप्यासुरपतिः शुम्भो भैरवशासनः।
निर्जगाम महासैन्यसहस्रैर्बहुभिर्वृतः ।।७।।
आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम्।
ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीगगनान्तरम् ।।८।।
ततः सिंहो महानादमतीव कृतवान् नृप।
घण्टास्वनेन तन्नादमम्बिका चोपबृंहयत् ।।९।।
धनुर्ज्यासिंहघण्टानां नादापूरितदिङ्मुखा।
निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारिताननां ।।१०।।
तं निनादमुपश्रुत्य दैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम्।
देवी सिंहस्तथा काली सरोषैः परिवारिताः ।।११।।
एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम्।
भवायामरसिंहानामतिवीर्यबलान्विताः ।।१२।।
ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः।
शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः ।।१३।।
यस्य देवस्य यद्रूपं यथाभूषणवाहनम्।
तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान् योद्धुमाययौ ।।१४।।
हंसयुक्तविमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः।
आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणी साभिधीयते ।।१५।।

माहेश्वरी वृषारूढा त्रिशूलवरधारिणी ।
महाहिवलया प्राप्ता चन्द्ररेखाविभूषणा ।।१६।।
कौमारी शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना ।
योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरूपिणी ।।१७।।
तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि संस्थिता ।
शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ ।।१८।।
यज्ञवाराहमतुलं रूपं या बिभ्रतो हरेः ।
शक्तिः साप्याययौ तत्र वाराहीं बिभ्रती तनुम् ।।१९।।
नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः ।
प्राप्ता तत्र सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः ।।२०।।
वज्रहस्ता तथैवैन्द्री गजराजोपरि स्थिता ।
प्राप्ता सहस्रनयना यथा शक्रस्तथैव सा ।।२१।।
ततः परिवृतस्ताभिरीशानो देवशक्तिभिः ।
हन्यन्तामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याऽऽह चण्डिकाम् ।।२२।।
ततो देवीशरीरात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा ।
चण्डिकाशक्तिरत्युग्रा शिवाशतनिनादिनी ।।२३।।
सा चाह धूम्रजटिलमीशानमपराजिता ।
दूत त्वं गच्छ भगवन् पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः ।।२४।।
ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवावतिगर्वितौ ।
ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः ।।२५।।

त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः।
यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ॥२६॥
बलावलेपादथ चेद्भवन्तो युद्धकाङ्क्षिणः।
तदागच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः॥२७॥
यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम्।
शिवदूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्यातिमागता॥२८॥
तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातं महासुराः।
अमर्षापूरिता जग्मुर्यत्र कात्यायनी स्थिता॥२९॥
ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः।
ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरारयः॥३०॥
सा च तान् प्रहितान् बाणाञ्छूलशक्तिपरश्वधान्।
चिच्छेद लीलयाऽऽध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभिः॥३१॥
तस्याग्रतस्तथा काली शूलपातविदारितान्।
खट्वाङ्गपोथितांश्चारीन् कुर्वती व्यचरत्तदा॥३२॥
कमण्डलुजलाक्षेपहतवीर्यान् हतौजसः।
ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून् येन येन स्म धावति॥३३॥
माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी।
दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्यातिकोपना॥३४॥
ऐन्द्रीकुलिशपातेन शतशो दैत्यदानवाः।
पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः॥३५॥

तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः ।
वाराहमूर्त्या न्यपतंश्चक्रेण च विदारिताः ।।३६।।
नखैर्विदारितांश्चान्यान् भक्षयन्ती महासुरान् ।
नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगम्बरा ।।३७।।
चण्डाट्टहासैरसुराः शिवदूत्यभिदूषिताः ।
पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तांश्चखादाथ सा तदा ।।३८।।
इति मातृगणं क्रुद्धं मर्दयन्तं महासुरान् ।
दृष्ट्वाभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः ।।३९।।
पलायनपरान् दृष्ट्वा दैत्यान् मातृगणार्दितान् ।
योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो रक्तबीजो महासुरः ।।४०।।
रक्तबिन्दुर्यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः ।
समुत्पतति मेदिन्यां तत्प्रमाणस्तदासुरः ।।४१।।
युयुधे स गदापाणिरिन्द्रशक्त्या महासुरः ।
ततश्चैन्द्री स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत् ।।४२।।
कुलिशेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम् ।
समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः ।।४३।।
यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्तबिन्दवः ।
तावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्यबलविक्रमाः ।।४४।।
ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसम्भवाः ।
समं मातृभिरत्युग्रशस्त्रपातातिभीषणम् ।।४५।।

पुनश्च वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा।
ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः॥४६॥
वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजघान ह।
गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरेश्वरम्॥४७॥
वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्रावसम्भवैः।
सहस्रशो जगद् व्याप्तं तत्प्रमाणैर्महासुरैः॥४८॥
शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना।
माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजं महासुरम्॥४९॥
स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत् पृथक्।
मातृः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुरः॥५०॥
तस्याहतस्य बहुधा शक्तिशूलादिभिर्भुवि।
पपात यो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः॥५१॥
तैश्चासुरासृक्सम्भूतैरसुरैः सकलं जगत्।
व्याप्तमासीत्ततो देवा भयमाजग्मुरुत्तमम्॥५२॥
तान् विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा चण्डिका प्राह सत्वरा।
उवाच कालीं चामुण्डे विस्तीर्णं वदनं कुरु॥५३॥
मच्छस्त्रपातसम्भूतान् रक्तबिन्दून्महासुरान्।
रक्तबिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना॥५४॥
भक्षयन्ती चर रणे तदुत्पन्नान्महासुरान्।
एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति॥५५॥

भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा न चोत्पतस्यन्ति चापरे ।
इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम् ।।५६।।
मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम् ।
ततोऽसावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम् ।।५७।।
न चास्या वेदानां चक्रे गदापातोऽल्पिकामपि ।
तस्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम् ।।५८।।
यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुण्डा सम्प्रतीच्छति ।
मुखे समुद्गता येऽस्या रक्तपातान्महासुराः ।।५९।।
तांश्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम् ।
देवी शूलेन वज्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः ।।६०।।
जघान रक्तबीजं तं चामुण्डापीतशोणितम् ।
स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसङ्घसमाहतः ।।६१।।
नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः ।
ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप ।।६२।।
तेषां मातृगणो जातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः ।।ॐ।।६३।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
रक्तबीजवधो नामाष्टमोऽध्यायः ।।८।।
उवाच १, अर्धश्लोकः १, श्लोकाः ६१, एवं ६३,
एवमादितः ५०२ ।।

नवमोऽध्यायः

निशुम्भ-वधः

ध्यानम्

ॐ बन्धूककाञ्चननिभं रुचिराक्षमालां
पाशाङ्कुशौ च वरदां निजबाहुदण्डैः।
बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्र-
मर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि ।।

ॐ राजोवाच ।।१।।

विचित्रमिदमाख्यातं भगवन् भवता मम।
देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रितम्।।२।।
भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते।
चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपनः।।३।।

ऋषिरुवाच ।।४।।

चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते।
शुम्भासुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे।।५।।
हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन्।
अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ मुख्ययासुरसेनया।।६।।

तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः ।
संदष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धा हन्तुं देवीमुपाययुः ।।७।।
आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः ।
निहन्तुं चण्डिकां कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः ।।८।।
ततो युद्धमतीवासीद्देव्या शुम्भनिशुम्भयोः ।
शरवर्षमतीवोग्रं मेघयोरिव वर्षतोः ।।९।।
चिच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां चण्डिका स्वशरोत्करैः ।
ताडयामास चाङ्गेषु शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ ।।१०।।
निशुम्भो निशितं खड्गं चर्म चादाय सुप्रभम् ।
अताडयन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम् ।।११।।
ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम् ।
निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम् ।।१२।।
छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः ।
तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभिमुखागताम् ।।१३।।
कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह दानवः ।
आयातं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत् ।।१४।।
आविध्याथ गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति ।
सापि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता ।।१५।।
ततः परशुहस्तं तमायान्तं दैत्यपुङ्गवम् ।
आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भूतले ।।१६।।

तस्मिन्निपतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्रमे।
भ्रातर्यतीव संक्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम्।।१७।।
स रथस्थस्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः।
भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः।।१८।।
तमायान्तं समालोक्य देवी शङ्खमवादयत्।
ज्याशब्दं चापि धनुषश्चकारातीव दुःसहम्।।१९।।
पूरयामास ककुभो निजघण्टास्वनेन च।
समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोवधविधायिना।।२०।।
ततः सिंहो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः।
पूरयामास गगनं गां तथैव दिशो दश।।२१।।
ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत्।
कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्ते तिरोहिताः।।२२।।
अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह।
तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ।।२३।।
दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा।
तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः।।२४।।
शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा।
आयान्ती वह्निकूटाभा सा निरस्ता महोल्कया।।२५।।
सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम्।
निर्घातनिःस्वनो घोरो जितवानवनीपते।।२६।।

शुम्भमुक्ताञ्छरान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान्।
चिच्छेद स्वशरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्रशः ।।२७।।
ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेनाभिजघान तम्।
स तदाभिहतो भूमौ मूर्च्छितो निपपात ह ।।२८।।
ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः।
आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा ।।२९।।
पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः।
चक्रायुधेन दितिजश्छादयामास चण्डिकाम् ।।३०।।
ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी।
चिच्छेद तानि चक्राणि स्वशरैः सायकांश्च तान् ।।३१।।
ततो निशुम्भो वेगेन गदामादाय चण्डिकाम्।
अभ्यधावत वै हन्तुं दैत्यसेनासमावृतः ।।३२।।
तस्यापतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका।
खड्गेन शितधारेण स च शूलं समाददे ।।३३।।
शूलहस्तं समायान्तं निशुम्भममरार्दनम्।
हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका ।।३४।।
भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निःसृतोऽपरः।
महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन् ।।३५।।
तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः।
शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद्भुवि ।।३६।।

ततः सिंहश्चखादोग्रं दंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान्।
असुरांस्तांस्तथा काली शिवदूती तथापरान्।।३७।।
कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः।
ब्रह्माणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः।।३८।।
माहेश्वरीत्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथापरे।
वाराहीतुण्डघातेन केचिच्चूर्णीकृता भुवि।।३९।।
खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः।
वज्रेण चैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथापरे।।४०।।
केचिद्विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा महाहवात्।
भक्षिताश्चापरे कालीशिवदूतीमृगाधिपैः ।।ॐ।।४१।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
निशुम्भवधो नाम नवमोऽध्यायः ॥९॥
उवाच २, श्लोकाः ३९, एवं ४१,
एवमादितः ५४३ ॥

दशमोऽध्यायः

शुम्भ-वधः

ध्यानम्

ॐ उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्नि-
नेत्रां धनुश्शरयुताङ्कुशपाशशूलम् ।
रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्तिरूपां
कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम् ।।

ॐ ऋषिरुवाच ।।१।।

निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसम्मितम् ।
हन्यमानं बलं चैव शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः ।।२।।
बलावलेपाद्दुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह ।
अन्यासां बलमाश्रित्य युद्ध्यसे यातिमानिनी ।।३।।

देव्युवाच ।।४।।

एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा ।
पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः ।।५।।
ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणीप्रमुखा लयम् ।
तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत्तदाम्बिका ।।६।।

देव्युवाच ।।७।।

अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदास्थिता।
तत्संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव।।८।।

ऋषिरुवाच ।।९।।

ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य चोभयोः।
पश्यतां सर्वदेवानामसुराणां च दारुणम्।।१०।।
शरवर्षैः शितैः शस्त्रैस्तथास्त्रैश्चैव दारुणैः।
तयोर्युद्धमभूद्भूयः सर्वलोकभयङ्करम्।।११।।
दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका।
बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः।।१२।।
मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी।
बभञ्ज लीलयैवोग्रहुङ्कारोच्चारणादिभिः।।१३।।
ततः शरशतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः।
सापि तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः।।१४।।
छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे।
चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्य करे स्थिताम्।।१५।।
ततः खड्गमुपादाय शतचन्द्रं च भानुमत्।
अभ्यधावत्तदा देवीं दैत्यानामधिपेश्वरः।।१६।।

तस्यापतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका।
धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्ककरामलम्।।१७।।
हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः।
जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यतः।।१८।।
चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः।
तथापि सोऽभ्यधावत्तां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान्।।१९।।
स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुङ्गवः।
देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्यताडयत्।।२०।।
तलप्रहाराभिहतो निपपात महीतले।
स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः।।२१।।
उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थितः।
तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका।।२२।।
नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम्।
चक्रतुः प्रथमं सिद्धमुनिविस्मयकारकम्।।२३।।
ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह।
उत्पात्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले।।२४।।
स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगितः।
अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिकानिधनेच्छया।।२५।।
तमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम्।
जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि।।२६।।

स गतासुः षपातोर्व्यां देवीशूलाग्रविक्षतः।
चालयन् सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम्।।२७।।
ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन् दुरात्मनि।
जगत्स्वास्थ्यमतीवाप निर्मलं चाभवन्नभः।।२८।।
उत्पातमेघाः सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः।
सरितो मार्गवाहिन्यस्तथासंस्तत्र पातिते।।२९।।
ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भरमानसाः।
बभूवुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वा ललितं जगुः।।३०।।
अवादयंस्तथैवान्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः।
ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः।।३१।।
जज्वलुश्चाग्नयः शान्ताः शान्ता दिग्जनितस्वनाः ।।ॐ।।३२।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
शुम्भवधो नाम नवमोऽध्यायः ॥१०॥
उवाच ४, अर्धश्लोकः १, श्लोकाः २७, एवम् ३२,
एवमादितः ५७५ ॥

एकादशोऽध्यायः

देवी-स्तुतिः, देवेभ्यो वरदानम्

ध्यानम्

ॐ बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम् ।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् ।।

ॐ ऋषिरुवाच ।।१।।

देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे
सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम् ।
कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभाद्
विकाशिवक्त्राब्जविकाशिताशाः ।।२।।

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ।।३।।

आधारभूता जगतस्त्वमेका
महीस्वरूपेण यतः स्थितासि ।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैत-
दाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये ।।४।।

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया ।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ।।५।।
विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु ।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्
का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः ।।६।।

सर्वभूता यदा देवी स्वर्गमुक्तिप्रदायिनी।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः।।७।।
सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।८।।
कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि।
विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते।।९।।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।१०।।
सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते।।११।।
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।१२।।

हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि ।
कौशाम्भः क्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ।।१३।।
त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि ।
माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते ।।१४।।
मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे ।
कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते ।।१५।।
शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे ।
प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते ।।१६।।
गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुंधरे ।
वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते ।।१७।।
नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे ।
त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तु ते ।।१८।।
किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले ।
वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते ।।१९।।
शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले ।
घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते ।।२०।।
दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे ।
चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते ।।२१।।
लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टिस्वधे ध्रुवे ।
महारात्रि महाऽविद्ये नारायणि नमोऽस्तु ते ।।२२।।

मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि।
नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते।।२३।।
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।२४।।
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते।।२५।।
ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम्।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते।।२६।।
हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव।।२७।।
असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम्।।२८।।

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।२९।।
एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य
धर्मद्विषां देवि महासुराणाम्।
रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्ममूर्तिं
कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या।।३०।।

विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपे -
ष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या ।
ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे
विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम् ।।३१।।
रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा
यत्रारयो दस्युबलानि यत्र ।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये
तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् ।।३२।।
विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम् ।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः ।।३३।।
देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीते-
र्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः ।
पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु
उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान् ।।३४।।
प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव।।३५।।

देव्युवाच ।।३६।।

वरदाहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ।
तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम्।।३७।।

देवा ऊचुः ।।३८।।

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ।।३९।।

देव्युवाच ।।४०।।

वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे ।
शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ ।।४१।।
नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भसम्भवा ।
ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी ।।४२।।
पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले ।
अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान् ।।४३।।
भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान् वैप्रचित्तान्महासुरान् ।
रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकुसुमोपमाः ।।४४।।
ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः ।
स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम् ।।४५।।
भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि ।
मुनिभिः संस्तुता भूमौ सम्भविष्याम्ययोनिजा ।।४६।।
ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन् ।
कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः ।।४७।।

ततोऽहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः।
भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः।।४८।।
शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि।
तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम्।।४९।।
दुर्गा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।
पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले।।५०।।
रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राणकारणात्।
तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः।।५१।।
भीमा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।
यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति।।५२।।
तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वाऽसंख्येयषट्पदम्।
त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महासुरम्।।५३।।
भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः।
इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति।।५४।।
तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ।।ॐ।।५५।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
देव्याः स्तुतिर्नामैकादशोऽध्यायः ।।११।।
उवाच ४, अर्धश्लोकः १, श्लोकाः ५०, एवम् ५५,
एवमादितः ६३०।।

द्वादशोऽध्यायः

पाठ-माहात्म्यम्

ध्यानम्

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

ॐ देव्युवाच ।।१।।

एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः ।
तस्याहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्यसंशयम्।।२।।
मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम् ।
कीर्तयिष्यन्ति ये तद्वद् वधं शुम्भनिशुम्भयोः।।३।।
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः ।
श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम्।।४।।
न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद् दुष्कृतोत्था न चापदः ।
भविष्यति न दारिद्र्यं न चैवेष्टवियोजनम्।।५।।

शत्रुतो न भयं तस्य दस्युतो वा न राजतः।
न शस्त्रानलतोयौघात्कदाचित्सम्भविष्यति ।।६।।
तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः।
श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं हि तत् ।।७।।
उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान्।
तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम ।।८।।
यत्रैतत्पठ्यते सम्यङ्नित्यमायतने मम।
सदा न तद्विमोक्ष्यामि सांनिध्यं तत्र मे स्थितम् ।।९।।
बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे।
सर्वं ममैतच्चरितमुच्चार्यं श्राव्यमेव च ।।१०।।
जानताऽजानता वापि बलिपूजां तथा कृताम्।
प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या वह्निहोमं तथा कृतम् ।।११।।
शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः ।।१२।।
सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ।।१३।।
श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः।
पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान् ।।१४।।
रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते।
नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृण्वताम् ।।१५।।

शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने।
ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम।।१६।।
उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः।
दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते।।१७।।
बालग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम्।
संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम्।।१८।।
दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम्।
रक्षोभूतपिशाचानां पठनादेव नाशनम्।।१९।।
सर्वं ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम्।
पशुपुष्पार्घ्यधूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः।।२०।।
विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम्।
अन्यैश्च विविधैर्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या।।२१।।
प्रीतिर्मे क्रियते सास्मिन् सकृत्सुचरिते श्रुते।
श्रुतं हरति पापानि तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति।।२२।।
रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम।
युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्टदैत्यनिबर्हणम्।।२३।।
तस्मिञ्छ्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते।
युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः।।२४।।
ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभां मतिम्।
अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्निपरिवारितः।।२५।।

दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः।
सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने वा वनहस्तिभिः।।२६।।
राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि वा।
आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे।।२७।।
पतत्सु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृशदारुणे।
सर्वाबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा।।२८।।
स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत संकटात्।
मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा।।२९।।
दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्चरितं मम।।३०।।

ऋषिरुवाच ।।३१।।

इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्डविक्रमा।।३२।।
पश्यतामेव देवानां तत्रैवान्तरधीयत।
तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान् यथा पुरा।।३३।।
यज्ञभागभुजः सर्वे चक्रुर्विनिहतारयः।
दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि।।३४।।
जगद्विध्वंसिनि तस्मिन् महोग्रेऽतुलविक्रमे।
निशुम्भे च महावीर्ये शेषाः पातालमाययुः।।३५।।
एवं भगवती देवी सा नित्यापि पुनः पुनः।
सम्भूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम्।।३६।।

तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते।
सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति ।।३७।।
व्याप्तं तयैतत्सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर।
महाकाल्या महाकाले महामारीस्वरूपया ।।३८।।
सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा।
स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी ।।३९।।
भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे।
सैवाभावे तथाऽलक्ष्मीर्विनाशायोपजायते ।।४०।।
स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्धूपगन्धादिभिस्तथा।
ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे गतिं शुभाम् ।।ॐ।।४१।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
फलस्तुतिर्नाम द्वादशोऽध्यायः ॥१२॥
उवाच २, अर्धश्लोकौ २, श्लोकाः ३७, एवम् ४१,
एवमादितः ६७१ ॥

त्रयोदशोऽध्यायः

सुरथवैश्ययोर्वरदानम्

ध्यानम्

ॐ बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।
पाशाङ्कुशवराभीतीर्धारयन्तीं शिवां भजे।।

ॐ ऋषिरुवाच ।।१।।

एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम्।
एवंप्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत्।।२।।
विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया।
तया त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः।।३।।
मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे।
तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम्।।४।।
आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा।।५।।

मार्कण्डेय उवाच ।।६।।

इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः।।७।।
प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं शंसितव्रतम्।
निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च।।८।।

जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने।
संदर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनसंस्थितः ।।९।।
स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन्।
तौ तस्मिन् पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमयीम्।।१०।।
अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणैः।
निराहारौ यताहारौ तन्मनस्कौ समाहितौ।।११।।
ददतुस्तौ बलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम्।
एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः।।१२।।
परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका।।१३।।

देव्युवाच ।।१४।।

यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन।
मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि तत्।।१५।।

मार्कण्डेय उवाच ।।१६।।

ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि।
अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात्।।१७।।
सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्णमानसः।
ममेत्यहमिति प्राज्ञः सङ्गविच्युतिकारकम्।।१८।।

देव्युवाच ।।१९।।

स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान्।।२०।।

हत्वा रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्यति ।।२१।।
मृतश्च भूयः सम्प्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः ।।२२।।
सावर्णिको मनुर्नामभवान् भुवि भविष्यति ।।२३।।
वैश्यवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवाञ्छितः ।।२४।।
तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै तव ज्ञानं भविष्यति ।।२५।।

मार्कण्डेय उवाच ।।२६।।

इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाभिलषितं वरम् ।।२७।।
बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता ।
एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ।।२८।।
सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ।।२९।।
एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ।
सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ।।क्लीं ॐ ।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
सुरथवैश्ययोर्वरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥
उवाच ६, अर्धश्लोकाः ११,
श्लोकाः १२, एवम् २९, एवमादितः ७०० ॥

नवार्णमन्त्र-जपविधिः

विनियोगः

श्रीगणपतिर्जयति । ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहा-सरस्वत्यो देवताः, ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः

ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि । गायत्र्युष्णिग-नुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः, मुखे । महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः, हृदि । ऐं बीजाय नमः, गुह्ये । ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः । क्लीं कीलकाय नमः, नाभौ । 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' - इति मूलेन करौ संशोध्य -

करन्यासः -

ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः । ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यासः

ॐ ऐं हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ क्लीं शिखायै वषट् । ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम् । ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट् ।

अक्षरन्यासः

ॐ ऐं नमः, शिखायाम् । ॐ ह्रीं नमः, दक्षिणनेत्रे । ॐ क्लीं नमः, वामनेत्रे । ॐ चां नमः, दक्षिणकर्णे । ॐ मुं नमः, वामकर्णे । ॐ डां नमः, दक्षिणनासापुटे । ॐ यैं नमः, वामनासापुटे । ॐ विं नमः, मुखे । ॐ च्चें नमः,गुह्ये । 'एवं विन्यस्याष्टवारं मूलेन व्यापकं कुर्यात्'

दिङ्न्यासः

ॐ ऐं प्राच्यै नमः । ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः । ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः । ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः । ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः । ॐ क्लीं वायव्यै नमः । ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः । ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः ।

ध्यानम्

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ।।१।।
अक्षस्त्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ।।२।।

घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।३।।

ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः। मालां सम्पूज्य प्रार्थनां कुर्यात्।

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।
ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।

जपसमर्पणम्

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।।

सप्तशतीन्यासः

करन्यासः

ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ चं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ डिं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ कां अनामिकाभ्यां नमः । ॐ यैं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं चण्डिकायै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यासः

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ।।

हृदयाय नमः ।

ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ।।

शिरसे स्वाहा ।

ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथोश्वरि ।।

शिखायै वषट् ।

ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ।।

कवचाय हुम् ।

ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।।

नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।

अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

ऋग्वेदोक्तं देवीसूक्तम्

ॐ अहमित्यष्टर्चस्य सूक्तस्य वागाम्भृणी ऋषिः, सच्चित्सुखात्मकः सर्वगतः परमात्मा देवता, द्वितीयाया ऋचो जगती, शिष्टानां त्रिष्टुप् छन्दः, देवीमाहात्म्यपाठे विनियोगः ।

ध्यानम्

ॐ सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः
शङ्खं चक्रधनुः शरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता ।
आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणरणत्काञ्चीरणन्नूपुरा
दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला ।।

देवीसूक्तम्

ॐ अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः ।
अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा ।। १ ।।
अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम् ।
अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते ।। २ ।।
अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् ।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्य्यावेशयन्तीम् ।। ३ ।।

मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः
प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम् ।
अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि
श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि ।।४।।

अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं
देवेभिरुत मानुषेभिः ।
यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि
तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् ।।५।।

अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ ।
अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश ।।६।।

अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम
योनिरप्स्वन्तः समुद्रे ।
ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वो -
तामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पृशामि ।।७।।

अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा ।
परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना संबभूव ।।८।।

अथ तन्त्रोक्तं देवीसूक्तम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥१॥
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः॥२॥
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः॥३॥
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः॥४॥
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः॥५॥
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥६॥
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥७॥
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥८॥

या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।९।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।१०।।
या देवी सर्वभूतेषुच्छायारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।११।।
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।१२।।
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।१३।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।१४।।
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।१५।।
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।१६।
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।१७।।
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।१८।।

या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।१९।।
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।२०।।
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।२१।।
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।२२।।
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।२३।।
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।२४।।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।२५।।
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।२६।।
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः ।।२७।।
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।२८।।

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-
त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ।।२९।।
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै -
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ।।३०।।

अथ प्राधानिकं रहस्यम्

ॐ अस्य श्रीसप्तशतीरहस्यत्रयस्य नारायण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः, महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवता यथोक्तफलावाप्त्यर्थं जपे विनियोगः ।

राजोवाच

भगवन्नवतारा मे चण्डिकायास्त्वयोदिताः ।
एतेषां प्रकृतिं ब्रह्मन् प्रधानं वक्तुमर्हसि ।।१।।
आराध्यं यन्मया देव्याः स्वरूपं येन च द्विज ।
विधिना ब्रूहि सकलं यथावत्प्रणतस्य मे ।।२।।

ऋषिरुवाच

इदं रहस्यं परममनाख्येयं प्रचक्षते ।
भक्तोऽसीति न मे किञ्चित्तवावाच्यं नराधिप ।।३।।
सर्वस्याद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी ।
लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्नं व्यवस्थिता ।।४।।
मातुलुङ्गं गदां खेटं पानपात्रं च बिभ्रती ।
नागं लिङ्गं च योनिं च बिभ्रती नृप मूर्धनि ।।५।।

तप्तकाञ्चनवर्णाभा तप्तकाञ्चनभूषणा।
शून्यं तदखिलं स्वेन पूरयामास तेजसा।।६।।
शून्यं तदखिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी।
बभार परमं रूपं तमसा केवलेन हि।।७।।
सा भिन्नाञ्जनसंकाशा दंष्ट्राङ्कितवरानना।
विशाललोचना नारी बभूव तनुमध्यमा।।८।।
खड्गपात्रशिरःखेटैरलङ्कृतचतुर्भुजा।
कबन्धहारं शिरसा बिभ्राणा हि शिरःस्रजम्।।९।।
सा प्रोवाच महालक्ष्मीस्तामसीं प्रमदोत्तमाम्।
नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमो नमः।।१०।।
तां प्रोवाच महालक्ष्मीस्तामसीं प्रमदोत्तमाम्।
ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते।।११।।
महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा।
निद्रा तृष्णा चैकवीरा कालरात्रिर्दुरत्यया।।१२।।
इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभिः।
एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽश्नुते सुखम्।।१३।।
तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृप।
सत्त्वाख्येनातिशुद्धेन गुणेनेन्दुप्रभं दधौ।।१४।।
अक्षमालाङ्कुशधरा वीणापुस्तकधारिणी।
सा बभूव वरा नारी नामान्यस्यै च सा ददौ।।१५।।

महाविद्या महावाणी भारती वाक् सरस्वती।
आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्वेदगर्भा च धीश्वरी।।१६।।
अथोवाच महालक्ष्मीर्महाकालीं सरस्वतीम्।
युवां जनयतां देव्यौ मिथुने स्वानुरूपतः।।१७।।
इत्युक्त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुनं स्वयम्।
हिरण्यगर्भौ रुचिरौ स्त्रीपुंसौ कमलासनौ।।१८।।
ब्रह्मन् विधे विरिञ्चेति धातरित्याह तं नरम्।
श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मीत्याह माता च तां स्त्रियम्।।१९।।
महाकाली भारती च मिथुने सृजतः सह।
एतयोरपि रूपाणि नामानि च वदामि ते।।२०।।
नीलकण्ठं रक्तबाहुं श्वेताङ्गं चन्द्रशेखरम्।
जनयामास पुरुषं महाकाली सितां स्त्रियम्।।२१।।
स रुद्रः शंकरः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलोचनः।
त्रयी विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषाक्षरा स्वरा।।२२।।
सरस्वती स्त्रियं गौरीं कृष्णं च पुरुषं नृप।
जनयामास नामानि तयोरपि वदामि ते।।२३।।
विष्णुः कृष्णो हृषीकेशो वासुदेवो जनार्दनः।
उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शिवा।।२४।।
एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे।
चक्षुष्मन्तो नु पश्यन्ति नेतरेऽतद्विदो जनाः।।२५।।

ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीं महालक्ष्मीर्नृप त्रयीम्।
रुद्राय गौरीं वरदां वासुदेवाय च श्रियम्।।२६।।
स्वरया सह सम्भूय विरिञ्चोऽण्डमजीजनत्।
बिभेद भगवान् रुद्रस्तद् गौर्या सह वीर्यवान्।।२७।।
अण्डमध्ये प्राधानादि कार्यजातमभून्नृप।
महाभूतात्मकं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम्।।२८।।
पुपोष पालयामास तल्लक्ष्म्या सह केशवः।
संजहार जगत्सर्वं सह गौर्या महेश्वरः।।२९।।
महालक्ष्मीर्महाराज सर्वसत्त्वमयीश्वरी।
निराकारा च साकारा सैव नानाभिधानभृत्।।३०।।
नामान्तरैर्निरूप्यैषा नाम्ना नान्येन केनचित् ।।ॐ।।३१।।

इति प्राधानिकं रहस्यं सम्पूर्णम्

अथ वैकृतिकं रहस्यम्

ऋषिरुवाच

ॐ त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्रिधोदिता।
सा शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते।।१।।
योगनिद्रा हरेरुक्ता महाकाली तमोगुणा।
मधुकैटभनाशार्थं यां तुष्टावाम्बुजासनः।।२।।
दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभा।
विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया।।३।।
स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीमरूपापि भूमिप।
रूपसौभाग्यकान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियः।।४।।
खड्गबाणगदाशूलचक्रशङ्खभुशुण्डिभृत्।
परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्च्योतद्रुधिरं दधौ।।५।।
एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया।
आराधिता वशीकुर्यात् पूजाकर्तुश्चराचरम्।।६।।
सर्वदेवशरीरेभ्यो याऽऽविर्भूतामितप्रभा।
त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी।।७।।

श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला।
रक्तमध्या रक्तपादा नीलजङ्घोरुरुन्मदा।।८।।
सुचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा।
चित्रानुलेपना कान्तिरूपसौभाग्यशालिनी।।९।।
अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती।
आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधः करक्रमात्।।१०।।
अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा।
चक्रं त्रिशूलं परशुः शङ्खो घण्टा च पाशकः।।११।।
शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः।
अलङ्कृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम्।।१२।।
सर्वदेवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप।
पूजयेत्सर्वलोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत्।।१३।।
गौरीदेहात्समुद्भूता या सत्त्वैकगुणाश्रया।
साक्षात्सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिबर्हिणी।।१४।।
दधौ चाष्टभुजा बाणमुसले शूलचक्रभृत्।
शङ्खं घण्टां लाङ्गलं च कार्मुकं वसुधाधिप।।१५।।
एषा सम्पूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति।
निशुम्भमथिनी देवी शुम्भासुरनिबर्हिणी।।१६।।
इत्युक्तानि स्वरूपाणि मूर्तीनां तव पार्थिव।
उपासनं जगन्मातुः पृथगासां निशामय।।१७।।

महालक्ष्मीर्यदा पूज्या महाकाली सरस्वती ।
दक्षिणोत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतो मिथुनत्रयम् ।।१८।।
विरञ्चिः स्वरया मध्ये रुद्रो गौर्या च दक्षिणे ।
वामे लक्ष्म्या हृषीकेशः पुरतो देवतात्रयम् ।।१९।।
अष्टादशभुजा मध्ये वामे चास्या दशानना ।
दक्षिणेऽष्टभुजा लक्ष्मीर्महतीति समर्चयेत् ।।२०।।
अष्टादशभुजा चैषा यदा पूज्या नराधिप ।
दशानना चाष्टभुजा दक्षिणोत्तरयोस्तदा ।।२१।।
कालमृत्यू च सम्पूज्यौ सर्वारिष्टप्रशान्तये ।
यदा चाष्टभुजा पूज्या शुम्भासुरनिबर्हिणी ।।२२।।
नवास्याः शक्तयः पूज्यास्तदा रुद्रविनायकौ ।
नमो देव्या इति स्तोत्रैर्महालक्ष्मीं समर्चयेत् ।।२३।।
अवतारत्रयार्चायां स्तोत्रमन्त्रास्तदाश्रयाः ।
अष्टादशभुजा चैषा पूज्या महिषमर्दिनी ।।२४।।
महालक्ष्मीर्महाकाली सैव प्रोक्ता सरस्वती ।
ईश्वरी पुण्यपापानां सर्वलोकमहेश्वरी ।।२५।।
महिषान्तकरी येन पूजिता स जगत्प्रभुः ।
पूजयेज्जगतां धात्रीं चण्डिकां भक्तवत्सलाम् ।।२६।।
अर्घ्यादिभिरलङ्कारैर्गन्धपुष्पैस्तथाक्षतैः ।
धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैर्नानाभक्ष्यसमन्वितैः ।।२७।।

रुधिराक्तेन बलिना मांसेन सुरया नृप।
(बलिमांसादिपूजेयं विप्रवर्ज्या मयेरिता।।
तेषां किल सुरामांसैर्नोक्ता पूजा नृप क्वचित्।)
प्रणामाचमनीयेन चन्दनेन सुगन्धिना।।२८।।
सकर्पूरैश्च ताम्बूलैर्भक्तिभावसमन्वितैः।
वामभागेऽग्रतो देव्याश्छिन्नशीर्षं महासुरम्।।२९।।
पूजयेन्महिषं येन प्राप्तं सायुज्यमीशया।
दक्षिणे पुरतः सिंहं समग्रं धर्ममीश्वरम्।।३०।।
वाहनं पूजयेद्देव्या धृतं येन चराचरम्।
कुर्याच्च स्तवनं धीमांस्तस्या एकाग्रमानसः।।३१।।
ततः कृताञ्जलिर्भूत्वा स्तुवीत चरितैरिमैः।
एकेन वा मध्यमेन नैकेनेतरयोरिह।।३२।।
चरितार्धं तु न जपेज्जपञ्छिद्रमवाप्नुयात्।
प्रदक्षिणानमस्कारान् कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः।।३३।।
क्षमापयेज्जगद्धात्रीं मुहुर्मुहुरतन्द्रितः।
प्रतिश्लोकं च जुहुयात्पायसं तिलसर्पिषा।।३४।।
जुहुयात्स्तोत्रमन्त्रैर्वा चण्डिकायै शुभं हविः।
भूयो नामपदैर्देवीं पूजयेत्सुसमाहितः।।३५।।
प्रयतः प्राञ्जलिः प्रह्वः प्रणम्यारोप्य चात्मनि।
सुचिरं भावयेदीशां चण्डिकां तन्मयो भवेत्।।३६।।

एवं यः पूजयेद्भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम्।
भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात्।।३७।।
यो न पूजयते नित्यं चण्डिकां भक्तवत्सलाम्।
भस्मीकृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत्परमेश्वरी।।३८।।
तस्मात्पूजय भूपाल सर्वलोकमहेश्वरीम्।
यथोक्तेन विधानेन चण्डिकां सुखमाप्स्यसि।।३९।।

इति वैकृतिकं रहस्यं सम्पूर्णम्

अथ मूर्तिरहस्यम्

ऋषिरुवाच

ॐ नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा।
स्तुता सा पूजिता भक्त्या वशीकुर्याज्जगत्त्रयम्।।१।।
कनकोत्तमकान्तिः सा सुकान्तिकनकाम्बरा।
देवी कनकवर्णाभा कनकोत्तमभूषणा।।२।।
कमलाङ्कुशपाशाब्जैरलङ्कृतचतुर्भुजा।
इन्दिरा कमला लक्ष्मीः सा श्री रुक्माम्बुजासना।।३।।
या रक्तदन्तिका नाम देवी प्रोक्ता मयानघ।
तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि शृणु सर्वभयापहम्।।४।।
रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्तसर्वाङ्गभूषणा।
रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशातिभीषणा।।५।।
रक्ततीक्ष्णनखा रक्तदशना रक्तदन्तिका।
पतिं नारीवानुरक्ता देवी भक्तं भजेज्जनम्।।६।।
वसुधेव विशाला सा सुमेरुयुगलस्तनी।
दीर्घौ लम्बावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ।।७।।

कर्कशावतिकान्तौ तौ सर्वानन्दपयोनिधी।
भक्तान् सम्पाययेद्देवी सर्वकामदुघौ स्तनौ।।८।।
खड्गं पात्रं च मुसलं लाङ्गलं च बिभर्ति सा।
आख्याता रक्तचामुण्डा देवी योगेश्वरीति च।।९।।
अनया व्याप्तमखिलं जगत्स्थावरजङ्गमम्।
इमां यः पूजयेद्भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम्।।१०।।
(भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात्।)
अधीते य इमं नित्यं रक्तदन्त्या वपुःस्तवम्।
तं सा परिचरेद्देवी पतिं प्रियमिवाङ्गना।।११।।
शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना।
गम्भीरनाभिस्त्रिवलीविभूषिततनूदरी।।१२।।
सुकर्कशसमोत्तुङ्गवृत्तपीनघनस्तनी।
मुष्टिं शिलीमुखापूर्णं कमलं कमलालया।।१३।।
पुष्पपल्लवमूलादिफलाढ्यं शाकसञ्चयम्।
काम्यानन्तरसैर्युक्तं क्षुत्तृण्मृत्युभयापहम्।।१४।।
कार्मुकं च स्फुरत्कान्ति बिभ्रती परमेश्वरी।
शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता।।१५।।
विशोका दुष्टदमनी शमनी दुरितापदाम्।
उमा गौरी सती चण्डी कालिका सा च पार्वती।।१६।।
शाकम्भरीं स्तुवन् ध्यायञ्जपन् सम्पूजयन्नमन्।
अक्षय्यमश्नुते शीघ्रमन्नपानामृतं फलम्।।१७।।

भीमापि नीलवर्णा सा दंष्ट्रादशनभासुरा।
विशाललोचना नारी वृत्तपीनपयोधरा॥१८॥
चन्द्रहासं च डमरुं शिरः पात्रं च बिभ्रती।
एकवीरा कालरात्रिः सैवोक्ता कामदा स्तुता॥१९॥
तेजोमण्डलदुर्धर्षा भ्रामरी चित्रकान्तिभृत्॥२०॥
चित्रभ्रमरपाणिः सा महामारीति गीयते।
इत्येता मूर्तयो देव्या याः ख्याता वसुधाधिप॥२१॥
जगन्मातुश्चण्डिकायाः कीर्तिताः कामधेनवः।
इदं रहस्यं परमं न वाच्यं कस्यचित्त्वया॥२२॥
व्याख्यानं दिव्यमूर्तीनामभीष्टफलदायकम्।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन देवीं जप निरन्तरम्॥२३॥
सप्तजन्मार्जितैर्घोरैर्ब्रह्महत्यासमैरपि।
पाठमात्रेण मन्त्राणां मुच्यते सर्वकिल्बिषैः॥२४॥
देव्या ध्यानं मया ख्यातं गुह्याद् गुह्यतरं महत्।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन सर्वकामफलप्रदम्॥२५॥
(एतस्यास्त्वं प्रसादेन सर्वमान्यो भविष्यसि।
सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत्।
अतोऽहं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम्।)

इति मूर्तिरहस्यं सम्पूर्णम्।

ततः पूर्वप्रोक्तं शापोद्धारं कुर्यात्।

क्षमाप्रार्थना

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि।।१।।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि।।२।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत् पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे।।३।।
अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत्।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः।।४।।
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके।
इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु।।५।।
अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि।।६।।
कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि।।७।।
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि।।८।।

श्रीदुर्गार्पणमस्तु

कामनापरत्वेन चण्डीपाठसंख्या

वाराहीतन्त्रे ''शिव उवाच'' ।

चण्डीपाठफलं देवि! शृणुष्व गदतो मम।
एकावृत्त्यादिपाठानां यथावत्कथयामि ते।।१।।
उपसर्गोपशान्त्यर्थं त्रिरावृत्तिं पठेन्नरः।
ग्रहोपशान्तौ कर्तव्या पञ्चावृत्तिर्वरानने!।।२।।
महाभये समुत्पन्ने सप्तावृत्तिमुदीरयेत्।
नवावृत्तौ भवेच्छान्तिर्वाजपेयफलं लभेत्।।३।।
राजवश्याय भूत्यै च रुद्रावृत्तिमुदीरयेत्[1]।
अर्कावृत्त्या[2] कामसिद्धिर्वैरहानिश्च जायते।।४।।
मन्वावृत्त्या[3] रिपुर्वश्यस्तथा स्त्री वशतामियात्।
सौख्यं पञ्चदशावृत्त्या श्रियमाप्नोति मानवः।।५।।
कलावृत्त्या[4] पुत्रपौत्रधनधान्यागमं विदुः।
राजभीतिविनाशाय विपक्षोच्चाटनाय च।।६।।

---

१ रुद्रावृत्तिः = ग्यारह आवृत्ति ।
२ अर्कावृत्तिः = बारह आवृत्ति ।
३ मन्वावृत्तिः = चौदह आवृत्ति ।
४ कलावृत्तिः = सोलह आवृत्ति ।

कुर्यात्सप्तदशावृत्तीस्तथाष्टादशकं प्रिये।
महाऋणविमोक्षाय विंशावृत्तिं पठेन्नरः।।७।।
पञ्चविंशावर्तनाद्धि भवबन्धविमोक्षणम्।
सङ्कटे समनुप्राप्ते दुश्चिकित्स्यागमे सदा।।८।।
जातिध्वंसे कुलोच्छेदे आयुषो नाशमागते।
वैरिवृद्धौ व्याधिवृद्धौ धननाशे तथा क्षये।।९।।
तथैव त्रिविधोत्पाते तथा चैवातिपातके।
कुर्याद्यत्नाच्छतावृत्तिं ततः सम्पद्यते शुभम्।।१०
विपदस्तस्य नश्यन्ति, अन्ते याति परां गतिम्।
जयवृद्धौ शतावृत्त्या राज्यवृद्धौ सदा पठेत्।।११।
मनसा चिन्तितं देवि! सिद्धिरष्टोत्तराच्छतात्।
शताश्वमेधयज्ञानां फलमाप्नोति सुव्रते।।१२।
सहस्त्रावर्तनाल्लक्ष्मीरावृणोति स्वयं स्थिरा।
भुक्त्वा कामान्यथाकामं नरो मोक्षमवाप्नुयात्।।१३।
यथाश्वमेधः क्रतुषु देवानाञ्च यथा हरिः।
स्तवानामपि सर्वेषां तथा सप्तशतीस्तवः।।१४।
नातः परतरं स्तोत्रं किञ्चिदस्ति वरानने।
भुक्तिमुक्तिप्रदं पुण्यं पावनानाञ्च पावनम्।।१५।

अथ कामनाभेदेन दुर्गापाठे सम्पुटितमन्त्रप्रयोगः

कात्यायनीतन्त्रे -

प्रतिश्लोकमाद्यन्तयोः प्रणवेन जपेन्मन्त्रसिद्धिः ॥१॥ प्रणवे व्याहृतित्रयं च श्लोकादौ पठित्वा जपेन्मन्त्रसिद्धिः॥२॥ सप्रणवां सव्याहृतिकां गायत्रीमादावन्ते वा कृत्वा श्लोकं जपेत्तदा महाफलम् ॥३॥ प्रतिश्लोकमादावन्ते 'जातवेदसे०' इति ऋचं जपेत् सर्वकाम-सिद्धिः ॥४॥ अपमृत्युवारणाय रोगारिक्षयमृत्यून्मूलनमभीप्सितो सर्वापद्विनिवारणाय च शताक्षरत्र्यम्बकमन्त्रेण सम्पुटीकृत्य श्लोकं पठेत् (गायत्री० जातवेदसे० त्र्यम्बकेतिमन्त्रत्रयमिलितः शताक्षरः) ॥५॥ प्रतिश्लोकं 'शरणागतदीनार्त्त०' इति श्लोकं पठेत्सर्वकार्यसिद्धिः ॥६॥ प्रतिश्लोकं 'करोतु सा नः शुभ०' इत्यर्धं पठेत्सर्वकामाप्तिः ॥७॥ सर्वापत्तिवारणाय प्रतिश्लोकं 'दुर्गे स्मृता०' इति पठेत् ॥८॥ अस्य केवलस्यापि श्लोकस्य कार्यानुसारेण लक्षमयुतं सहस्रं शतं वा जपः ॥९॥ 'सर्वाबाधा०' इत्यस्य लक्षजपेऽपि सर्वापत्तिनिवारणं भवति ॥१०॥ 'इत्थं यदा यदा बाधा०' इति श्लोकस्य लक्षजपे महामारीशान्तिः ॥११॥ 'कांसोस्मि०' इत्यृचः प्रतिश्लोकं पठेल्लक्ष्मीप्राप्तिः ॥१२॥ 'रोगानशेषान्०' इति श्लोकस्य प्रतिश्लोकं पाठे सकलरोगनाशः तन्मन्त्रजपेऽपि सः ॥१३॥ 'इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरा०' इति प्रतिश्लोकं पाठे पृथग्जपे वा विद्याप्राप्तिर्वाग्वैकृतिनाशश्च ॥१४॥ 'भगवत्या कृतं सर्वम् ०' इत्यादिद्वादशोत्तरशताक्षरीमन्त्रः सर्वकामदः

सर्वापन्निवारणश्च ॥१५॥ 'देवि प्रपन्नार्तिहरे०' इति श्लोकस्य यथाकार्यं लक्षायुतसहस्रशतान्यतमे जपे प्रतिश्लोकं पाठे वा सर्वापन्निवृत्तिः सर्वकार्ये सिद्धिः ॥१६॥ एषु प्रयोगेषु प्रतिश्लोकं दीपाग्रे केवलमेव वा नमस्कारकरणेऽतिशीघ्रं सिद्धिः ॥१७॥ प्रतिश्लोकं क्लीं कामबीजसम्पुटितस्यैकचत्वारिंशद्दिनं त्रिरावृत्तौ पुत्रप्राप्तिः ॥१८॥ ह्रीं मायाबीजसम्पुटिस्य फट्पल्लवसहितस्य सप्तदिनपर्यन्तं त्रयोदशावृत्तौ उच्चाटनसिद्धिः सर्वोपद्रवनाशश्च ॥१९॥ श्रीं लक्ष्मीबीजसम्पुटितस्य एकोनपञ्चाशद्दिनपर्यन्तं पञ्चदशावृत्तौ लक्ष्मीप्राप्तिः ॥२०॥ ऐं बीजसम्पुटितस्य शतावृत्त्या विद्याप्राप्ति; ॥२१॥

इति कामनापरत्वे सम्पुटितमन्त्रप्रयोगः

सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम्

शिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत्।।१।।
न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तं नापि ध्यानं न न्यासो न च वार्चनम्।।२।।
कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम्।।३।।
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
पाठमात्रेण संसिद्ध्येत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्।।४।।

अथ मन्त्रः

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥ ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा ।

।। इति मन्त्रः ।।

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि।।१।।

नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि।
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे।।२।।
ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका।
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते।।३।।
चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी।
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि।।४।।
धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु।।५।।
हुं हुं हुङ्काररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः।।६।।
अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं
धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वहा।।७।।
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा।
सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे।।८।।
इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागर्तिहितवे।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति।।
यस्तु कुञ्जिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत्।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा।।

इति श्रीरुद्रयामले गौरीतन्त्रे शिवपार्वतीसम्वादे
कुञ्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम्।
॥ ॐ तत्सत् ॥

अथ दुर्गाद्वात्रिंशन्नाममाला

दुर्गा दुर्गातिशमनी दुर्गापद्विनिवारिणी।
दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी।।
दुर्गतोद्धारिणी दुर्गनिहन्त्री दुर्गमापहा।
दुर्गमज्ञानदा दुर्गदैत्यलोकदवानला।।
दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमात्मस्वरूपिणी।
दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता।।
दुर्गमज्ञानसंस्थाना दुर्गमध्यानभासिनी।
दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थस्वरूपिणी।।
दुर्गमासुरसंहन्त्री दुर्गमायुधधारिणी।
दुर्गमाङ्गी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी।।
दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गदारिणी।
नामावलिमिमां यस्तु दुर्गाया मम मानवः।।
पठेत् सर्वभयान्मुक्तो भविष्यति न संशयः।।

अथ सप्तश्लोकी दुर्गा

शिव उवाच -

देवि त्वं भक्तसुलभे सर्वकार्यविधायिनी ।
कलौ हि कार्यसिद्ध्यर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः ।।

देव्युवाच -

शृणु देव प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्टसाधनम् ।
मया तवैव स्नेहेनाप्यम्बास्तुतिः प्रकाश्यते ।।

विनियोगः -

ॐ अस्य श्रीदुर्गासप्तश्लोकीस्तोत्रमन्त्रस्य नारायण ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थं सप्तश्लोकीदुर्गापाठे विनियोगः ।

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ।।१।।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्यदुःख भयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ।।२।।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ।।३।।

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ।।४।।
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ।।५।।

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ।।६।।
सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ।।७।।

इति श्रीसप्तश्लोकी दुर्गा सम्पूर्णा

॥ श्रीदुर्गायै नमः ॥

श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

ईश्वर उवाच

शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने।
यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती॥१॥
ॐ सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी।
आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी॥२॥
पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः।
मनो बुद्धिरहङ्कारा चित्तरूपा चिता चितिः॥३॥
सर्वमन्त्रमयी सत्ता सत्यानन्दस्वरूपिणी।
अनन्ता भाविनी भाव्या भव्याभव्या सदागतिः॥४॥
शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा।
सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी॥५॥
अपर्णानेकवर्णा च पाटला पाटलावती।
पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीररञ्जिनी॥६॥
अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी।
वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता॥७॥

ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा।
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः ।।८।।
विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा।
बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना ।।९।।
निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी।
मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी ।।१०।।
सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी।
सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा ।।११।।
अनेकशस्त्रहस्ता च, अनेकास्त्रस्य धारिणी।
कुमारी चैककन्या च कैशोरी युवती यतिः ।।१२।।
अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ।।१३।।
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी।
नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी ।।१४।।
शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी।
कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी ।।१५।।
य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्टकम्।
नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वति ।।१६।।
धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेव च।
चतुर्वर्गं तथा चान्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम् ।।१७।।

कुमारीं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम्।
पूजयेत् परया भक्त्या पठेन्नामशताष्टकम्।।१८।।
तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि सर्वैः सुरवरैरपि।
राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवाप्नुयात्।।१९।।

गोरोचनालक्तककुङ्कुमेन
सिन्दूरकर्पूरमधुत्रयेण ।
विलिख्य यन्त्रं विधिना विधिज्ञो
भवेत् सदा धारयते पुरारिः ।।२०।।

भौमावास्यानिशामग्रे चन्द्रे शतभिषां गते।
विलिख्य प्रपठेत् स्तोत्रं स भवेत् सम्पदां पदम्।।२१।।

इति श्रीविश्वसारतन्त्रे दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्।

अथ बटुकभैरवब्रह्मकवचम्

(रुद्रयामले)

श्रीदेव्युवाच -

भगवन् सर्ववेत्ता त्वं देवानां प्रीतिदायकम्।
भैरवं कवचं ब्रूहि यदि चास्ति कृपा मयि।।१।।
प्राणत्यागं करिष्यामि यदि नो कथयिष्यति।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यमेव न संशयः।।२।।
इत्थं देव्या वचः श्रुत्वा प्रहस्यातिस्वयं प्रभुः।
उवाच वचनं तत्र देवदेवो महेश्वरः।।३।।

ईश्वर उवाच -

बटुकस्य कवचं दिव्यं शृणु यत्प्राणवल्लभे।
चण्डिकातन्त्रसर्वस्वं बटुकस्य विशेषतः।।४।।
तत्र मन्त्राद्यक्षरं तु वासुदेवस्वरूपकम्।
शङ्खवर्णद्वयो ब्रह्म बटुकं चन्द्रशेखरः।।५।।
आपदुद्धारणो देवो भैरवः परिकीर्तितः।
प्रवक्ष्यामि समासेन चतुर्वर्गप्रसिद्धये।।६।।

प्रणवं कामदं विद्याल्लज्जाबीजं च सिद्धिदम्।
बटुकायेति विज्ञेयं महापातकनाशनम्।।७।।
आपदुद्धारणायेति त्वापदुद्धारणं नृणाम्।
कुरु द्वयं महेशानि मोहने परिकीर्तितम्।।८।।
बटुकाय महेशानि! स्तम्भने परिकीर्तितम्।
लज्जाबीजं तथा विद्यान्मुक्तिदं परिकीर्तितम्।।९।।
द्वाविंशत्यक्षरो मन्त्रः क्रमेण जगदीश्वरि -

विनियोगः -

'ॐ अस्य श्रीबटुकभैरवब्रह्मकवचस्य भैरव ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । श्रीबटुकभैरवो देवता मम बटुकभैरवप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ॐ पातु शिरसि नित्यं पातु ह्रीं कण्ठदेशके।।१०।।
बटुकाय पातु नाभौ चापदुद्धारणाय च।
ऊरुद्वयं लिङ्गमूले त्वाधारे बटुकाय च।।११।।
सर्वदा पातु ह्रीं बीजं बाह्वोर्युगलमेव च ।
षडङ्गसहितो देवो नित्यं रक्षतु भैरवः।।१२।।
(ॐ) ह्रीं बटुकाय सततं सर्वाङ्गं मम सर्वदा।
ॐ ह्रीं पादौ महाकालः पातु वीरासनो हृदि।।१३।।
ॐ ह्रीं कालः शिरः पातु कण्ठदेशे तु भैरवः।
गणराट् पातु जिह्वायामष्टभिः शक्तिभिः सह।।१४।।

"ॐ ह्रीं" दण्डपाणिर्गुह्यमूले भैरवीसहितस्तथा।
"ॐ ह्रीं" विश्वनाथः सदापातु सर्वाङ्गं मम सर्वदा ।।१५।।
"ॐ ह्रीं" अन्नपूर्णा सदा पातु चांसौ रक्षतु चण्डिका।
असिताङ्गः शिरः पातु ललाटं रुरुभैरवः ।।१६।।
चण्डभैरवः पात्वास्यं कण्ठं श्रीक्रोधभैरवः।
उन्मत्तभैरवः पातु हृदयं मम सर्वदा।।१७।।
नाभिदेशे कपाली च लिङ्गे भीषणभैरवः।
संहारभैरवः पातु मूलाधारं च सर्वदा।।१८।।
बाहुयुग्मं सदा पातु भैरवो मम केवलम्।
हंसबीजं पातु हृदि सोऽहं पाणी च रक्षतु।।१९।।
प्राणापानौ समानं च, उदानं व्यानमेव च।
रक्षतु हारमूले च दशदिक्षु समन्ततः।।२०।।
प्रणवः पातु सर्वाङ्गं लज्जाबीजं महाभयम्।
इति श्रीब्रह्मकवचं भैरवस्य प्रकीर्त्तितम्।।२१।।

फलश्रुतिः -

चतुर्वर्गप्रदं नित्यं स्वयं देवप्रकाशितम्।
यः पठेच्छृणुयान्नित्यं धार्य्यते कवचोत्तमम्।।२२।।
सदानन्दमयो भूत्वा लभते परमं पदम्।
य इदं कवचं देवि! चिन्तयेन्मन्मुखोदितम्।।२३।।

कोटिजन्मार्जितं पापं विनश्यति च तत्क्षणात्।
जलमध्येऽग्निमध्ये वा दुर्ग्रहे शत्रुसङ्कटे।।२४।।
कवचस्मरणाद्देवि! सर्वत्र विजयी भवेत्।
भक्तियुक्तेन मनसा कवचं पूजयेद्यदि।।२५।।
कामतुल्यस्तु नारीणां रिपूणां च यमोपमः।
तस्य पादाम्बुजद्वन्द्वं राज्ञां मुकुटभूषणम्।।२६।।
तस्य भूतिं विलोक्यैव कुबेरोऽपि तिरस्कृतः।
अस्य विज्ञानमात्रेण मन्त्रसिद्धिर्न संशयः।।२७।।
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद्वटुकं नरः।
न चाप्नोति फलं तस्य परं नरकमाप्नुयात्।।२८।।
मन्वन्तरत्रयं स्थित्वा तिर्यग्योनिषु जायते।
इह लोके महारोगी दारिद्र्येणाति पीडितः।।२९।।
शत्रूणां वशगो भूत्वा करपात्री भवेज्जडः।
देयं पुत्राय शिष्याय शान्ताय प्रियवादिने।।३०।।
कार्पण्यरहितायालं बटुभक्तिरताय च।
औपरागये प्रदाता वैतस्य तस्याति सत्वरम्।।३१।।
आयुर्विद्या यशो धर्म बलं चैव न संशयः।
इति ते कथितं देवि ! गोपनीयं स्वयोनिवत्।।३२।।

अथ बटुकभैरवस्तोत्रम्

"ॐ ह्रीं" भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः ।
क्षेत्रदः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रज्ञः क्षत्रियो विराट् ।।१।।
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकृत् ।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः ।।२।।
कङ्कालः कालशमनः कलाः काष्ठातनुः कविः ।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः ।।३।।
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्काली धूम्रलोचनः ।
अभीरुर्भैरवीनाथो भूतपो योगिनीपतिः ।।४।।
धनदो धनहारी च धनवान्प्रीतिभावनः ।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत् ।।५।।
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः ।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रस्त्रिशिखी च त्रिलोकपः ।।६।।
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः ।
बटुको बटुवेशश्च खट्वाङ्गवरधारकः ।।७।।
भूताध्यक्षः पशुपतिर्भिक्षुकः परिचारिकः ।
धूर्तो दिगम्बरः शूरो हरिणः पाण्डुलोचनः ।।८।।
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करः प्रियबान्धवः ।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः ।।९।।

अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखः।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः ।।१०।।
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतवान्।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा ।।११।।
शुद्धनीलाञ्जनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः ।।१२।।
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी ।।१३।।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि।
अष्टोत्तरशतं नाम्नां भैरवस्य महात्मनः ।।१४।।

फलश्रुतिः -

मया ते कथितं देवि रहस्यं सर्वकामदम्।
य इदं पठति स्तोत्रं नामाष्टशतमुत्तमम् ।।१५।।
न तस्य दुरितं किंचिन्न च भूतभयं तथा।
न च मारीभयं तस्य ग्रहराजभयं तथा ।।१६।।
न शत्रुभ्यो भयं क्वापि प्राप्नुयान्मानवः क्वचित्।
पातकानां भयं चैव पठेत्स्तोत्रमनुत्तमम् ।।१७।।
मारीभये राजभये तथा चौराग्निजे भये।
औत्पातिके महाघोरे तथा दुःस्वप्नदर्शने ।।१८।।

बन्धने च तथा घोरे पठेत्स्तोत्रमनन्यधीः।
सर्वं प्रशमनं याति भयं भैरवकीर्तनात्।।१९।।
एकादशसहस्रं तु पुरश्चरणमुच्यते।
यस्त्रिसंध्यं पठेन्नित्यं संवत्सरमतन्द्रितः।।२०।।
स सिद्धिं प्राप्नुयादिष्टां दुर्लभामपि मानवः।
षण्मासं भूमिकामस्तु जपित्वा प्राप्नुयान्महीम्।।२१।।
राजशत्रुविनाशार्थं जपेन्मासाष्टकं पुनः।
रात्रौ वारत्रयं चैव नाशयत्येव शात्रवान्।।२२।।
जपेन्मासत्रयं मर्त्यो राजानं वशमानयेत्।
धनार्थी च सुतार्थी च दारार्थी यस्तु मानवः।।२३।।
जपेन्मासत्रयं देवि! वारमेकं तथा निशि।
धनं पुत्रं तथा दारान्प्राप्नुयान्नात्र संशयः।।२४।।
रोगी रोगात्प्रमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात्।
भीतो भयात्प्रमुच्येत देवि सत्यं न संशयः।।२५।।
निगडैश्चापि बद्धो यः कारागृहे निपातितः।
शृङ्खलाबन्धनं प्राप्तः पठेच्चैव दिवा निशि।।२६।।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।
अप्रकाशं परं गुह्यं न देयं यस्य कस्यचित्।।२७।।
सुकुलीनाय शान्ताय ऋजवे दम्भवर्जिते।
दद्यात्स्तोत्रमिमं पुण्यं सर्वकामफलप्रदम्।।२८।।

इति श्रुत्वा ततो देवी नामाष्टशतमुत्तमम्।
जजाप परया भक्त्या सदा सर्वेश्वरेश्वरी।।२९।।
भैरवोऽपि प्रहृष्टोऽभूत्सर्वलोकमहेश्वरः।
वरं ददाति भक्तेभ्यः पठेत्स्तोत्रमनन्यधीः।।३०।।
संतोषं परमं प्राप्य भैरवस्य महात्मनः।
जितेन्द्रियः सत्यवादी मुक्तिमाप्नोति मानवः।।३१।।

वारं वारं भुवनजननी प्रोच्यते साधुवादः,
सत्यं सत्यं जगति सकले भैरवो देव एकः।
यां यां सिद्धिं भुवनजठरे कामयेन्मानवो य -
स्तां तां सिद्धिं वितरति सदा भैरवः सुप्रसन्नः।।३२।।
पाणिभ्यां परितः प्रपीड्य सुदृढं निश्चोत्य निश्चोत्य च
ब्रह्माण्डं सकलं प्रचालितरसालोच्चैः फलाभं मुहुः।
पायं पायमपाययत्त्रिजगतीमुन्मत्तवत्तैरसै-
र्नृत्यंस्ताण्डवमम्बरेण शिरसा पायान्महाभैरवः।।३३।।
बिभ्राणः शुभ्रवर्णं द्विगुणनवभुजं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं,
शङ्खं भैषज्यचापं सविषममृतकं ज्ञानमुद्रेन्द्रशस्त्रम्।
शूलं खट्वाङ्गबाणान् डमरुमसिगदावह्निमारोग्यमाला-
मिष्टाभीतिं च दोर्भिर्जयति खलु महाभैरवः सर्वसिद्ध्यै।।३४।।
क्वाकाशः क्व समीरणः क्व दहनः क्वापश्च विश्वम्भरः
क्व ब्रह्मा क्व जनार्दनः क्व तरणिः क्वेन्दुश्च देवासुराः।

कल्पान्तारभटीनटप्रमुदितः श्रीसिद्धयोगीश्वरो
क्रीडानाटकनायको विजयते देवो महाभैरवः ।।३५।।
लिखित्वा परया भक्त्या भैरवस्तोत्रमुत्तमम् ।
अष्टानां ब्राह्मणानां च देयं पुस्तकमादरात् ।।३६।।
यः संयमी सदाचारी स्तोत्रं पठति सर्वदा ।
यान्यान् समीहते कामांस्तांस्तान्प्राप्नोत्यसंशयम् ।।३७।।
इह लोके सुखं प्राप्य पुस्तकस्य प्रदानतः ।
शिवलोकमनुप्राप्य शिवेन सह मोदते ।।३८।।
लिखित्वा भूर्जपत्रे तु त्रिलोहपरिवेष्टितम् ।
सौम्ये च वस्तुवसने कर्पटे च सुशोभने ।।३९।।
करे बाहौ गले कट्यां मूर्ध्नि त्रिलोहगोपितम् ।
यस्तु धारयते स्तोत्रं सर्वत्र जयमाप्नुयात् ।।४०।।

श्री बटुकभैरवप्रीतये बलिदानम्

षोडशोपचारैर्बटुकभैरवं सम्पूज्य देवस्याग्रे त्रिकोणं विधाय तत्र बलिपात्रे माषभक्तं पायसान्नं मोदकं चणकादीनि च कवलाकारं संपादितं विधाय गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य देवं सञ्चिन्त्य हस्ते जलमादाय मूलमन्त्रमुच्चार्य जलं भूमौ निक्षिप्य स्वहस्ते बलिमादाय देवाय समर्पयेत् ।

इति बलिदानम्

श्रीदुर्गासप्तशतीहवनविधानम्

१. 'सर्वप्राक् गं गणपतये स्वाहा' इति मन्त्रेण १०८ आहुतयः ।

२. 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' इति नवार्णमन्त्रेण १०८ आहुतयः ।

३. प्रथमाध्याये 'मार्कण्डेय उवाच' इत्यादि १४ उवाच इतिपदैः, २४ अर्धश्लोकैः, ६६ पूर्णश्लोकैः (अत्र श्लोकशब्दो मन्त्रवाचकः) एवं मिलित्वा १०४ आहुतयः । अध्यायान्ते स्रुचि सघृतहविः - कूष्माण्डखण्ड-नारिकेलखण्ड - पुष्पाणि च निधाय घृतमापूर्य - उत्त्थाय -

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।

नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै वाग्भवबीजाधिष्ठात्र्यै श्रीमहाकाल्यै स्वाहा । इति महाहुतिं समर्पयेत् । इति जलमुत्सृजेत् ।

४. द्वितीयाध्याये - ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच इति पदेन १ आहुतिः, ६८ पूर्णश्लोकैः, एवं मिलित्वा ६९ आहुतयः । अध्यायान्ते स्रुचि सघृतहविः- नारिकेलफलखण्ड-पुष्पाणि निधाय घृतमापूर्य - उत्त्थाय च नमो देव्यै - इतिपूर्वोक्तमन्त्रं पठित्वा ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै विजयाधिष्ठात्र्यै श्रीमहालक्ष्म्यै स्वाहा । इति महाहुतिं समर्पयेत् । इति जलमुत्सृजेत् ।

५. तृतीयाध्याये - उवाच - इतिपदैः३, आहुतयः । पूर्णश्लोकैः ४१ एवं मिलित्वा ४४ - आहुतयः । अध्यायान्ते स्रुचि सघृतहविर्मधुपुष्पाणि निधाय घृतमापूर्य उत्त्थाय - नमो देव्यै - इतिपूर्वोक्तमन्त्रं पठित्वा ॐ साङ्गायै सपरिवारायै, सायुधायै, सशक्तिकायै, सवाहनायै अष्टाविंशतिवर्णात्मिकायै महालक्ष्म्यै स्वाहा - इति महाहुतिं समर्पयेत् । जलमुत्सृजेत् ।

६. चतुर्थाध्याये - ॐ ऋषिरुवाच - इत्यादिपदैः-५ आहुतयः अर्धश्लोकाभ्यां - २ आहुती, पूर्णश्लोकैः ३५ आहुतयः, एवं मिलित्वा ४२ आहुतयः । अस्मिन्नध्याये शूलेन पाहि-इत्यारभ्य, खड्गशूलगदादीनि - इति चतुर्भिर्मन्त्रैः आहुतीर्न दद्यात् । मूलमन्त्रेण अथवा ह्रीं महालक्ष्म्यै स्वाहा इति मन्त्रेण ४ आहुतयो देयाः । अध्यायान्ते स्रुचि सघृतहविः - पायस-पूगफलपुष्पाणि निधाय घृतमापूर्य उत्त्थाय च - 'नमो देव्यै' इति मन्त्रमुच्चार्य साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै त्रिवर्णात्मिकायै त्रिशक्त्यै महालक्ष्म्यै स्वाहा, इति महाहुतिं समर्पयेत् । जलमुत्सृजेत् । अस्मिन्नध्याये सम्पूर्णाध्यायपर्यन्तं पायसेनाहुतयो देयाः ।

७. पञ्चमाध्याये - ॐ क्लीं ऋषिरुवाच - इत्यादिपदैः ९ आहुतयः, त्रिपान्मन्त्रैः ६६ आहुतयः, पूर्णश्लोकैः ५४ आहुतयः, एवं मिलित्वा १२९ आहुतयः । अध्यायान्ते स्रुचि सघृतहविः-बीजपूरफलश्वेतचन्दन-पुष्पाणि निधाय घृतमापूर्य समुत्थाय च 'नमो देव्यै०' इति मन्त्रमुच्चार्य साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै विष्णुमायादित्रयोविंशतिदेव्यै महासरस्वत्यै, स्वाहा, इति महाहुतिं समर्पयेत् । जलमुत्सृजेत् ।

८. षष्ठाध्याये - ॐ ऋषिरुवाच - इत्यादिपदैः ४ आहुतयः, पूर्णश्लोकैः २० आहुतयः, एवं मिलित्वा २४ आहुतयः । अध्यायान्ते स्रुचि सघृतहविः - कूष्माण्डखण्ड-नारिकेलफल-पुष्पाणि निधाय घृतमापूर्य समुत्थाय च 'नमो देव्यै०' इति मन्त्रमुच्चार्य साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै शताक्ष्यै धूम्राक्ष्यै महासरस्वत्यै स्वाहा, इति महाहुतिं समर्पयेत् । जलमुत्सृजेत् ।

९. सप्तमाध्याये - ॐ ऋषिरुवाच - इत्यादिपदाभ्यां २ आहुती, पूर्णश्लोकैः २५ आहुतयः, एवं मिलित्वा २७ आहुतयः । अध्यायान्ते - स्रुचि सघृतहविः - चिरञ्जीबीज-सितावाजिजवा-आमलक-फलानि निधाय घृतमापूर्य समुत्थाय च 'नमो देव्यै०' इति मन्त्रमुच्चार्य साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै कर्पूरबीजाधिष्ठात्र्यै चामुण्डायै महासरस्वत्यै स्वाहा, इति महाहुतिं समर्पयेत् । जलमुत्सृजेत् ।

१०. अष्टमाध्याये - ॐ ऋषिरुवाच - इतिपदेन १ आहुतिः, अर्धश्लोकेन १ आहुतिः, पूर्णश्लोकैः ६१ आहुतयः, एवं मिलित्वा ६३ आहुतयः । अध्यायान्ते - स्रुचि सघृतहविः-ईक्षुदण्डखण्डरक्तचन्दन-मधु-पुष्पाणि निधाय घृतमापूर्य समुत्थाय च 'नमो देव्यै०' इति मन्त्रमुच्चार्य साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै अष्टमातृकासहितायै रक्तास्यै महासरस्वत्यै स्वाहा, इति महाहुतिं समर्पयेत् । जलं त्यजेत् ।

११. नवमाध्याये - ॐ राजोवाच इत्यादिपदाभ्यां २ आहुती, पूर्णश्लोकैः ३९ आहुतयः, एवं मिलित्वा ४१ आहुतयः ।

अध्यायान्ते - स्रुचि सघृतहविः-जम्बीर-जावित्री-कूष्माण्डखण्ड-पुष्पाणि निधाय घृतमापूर्य समुत्थाय च 'नमो देव्यै०' इति मन्त्रमुच्चार्य साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै भैरव्यै महासरस्वत्यै स्वाहा, इति महाहुतिं समर्पयेत् । जलमुत्सृजेत् ।

१२. दशमाध्याये - ॐ ऋषिरुवाच - इत्यादिपदैः ४ आहुतयः, अर्धश्लोकेन १ आहुतिः, पूर्णश्लोकैः २७ आहुतयः, एवं मिलित्वा ३२ आहुतयो देयाः । अध्यायान्ते स्रुचि सघृतहविः - मातुलुङ्ग-कस्तूरी-पुष्पाणि निधाय घृतमापूर्य समुत्थाय च 'नमो देव्यै०' इति मन्त्रमुच्चार्य साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै सिंहासनाधिष्ठात्र्यै त्रिशूलपाशधारिण्यै महासरस्वत्यै स्वाहा, इति महाहुतिं समर्पयेत् । जलमुत्सृजेत् ।

१३. एकादशाध्याये - ॐ ऋषिरुवाच इत्यादिपदैः ४ आहुतयः, अर्धश्लोकेन १ आहुतिः, पूर्णश्लोकैः ५० आहुतयः, एवं मिलित्वा ५५ आहुतयः । अस्मिन्नध्याये पायसेनाहुतयः प्रदेयाः । चतुर्विंशतिमन्त्रादष्टाविंशतिमन्त्रपर्यन्तम् 'सर्वस्वरूपे सर्वेशे०' इति मन्त्रादारभ्य 'चण्डिके त्वां नता वयम् ' इति मन्त्रपर्यन्तं नवार्णमन्त्रेण अथवा 'क्लीं सरस्वत्यै नमः' आहुतयो देयाः । अध्यायान्ते स्रुचि सघृतहविः- पायस-कर्पूर-दाडिमफल-पुष्पाणि निधाय घृतमापूर्य समुत्थाय च 'नमो देव्यै०' इति मन्त्रमुच्चार्य साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै महानारायण्यै महासरस्वत्यै स्वाहा, इति महाहुतिं समर्पयेत् । जलमुत्सृजेत् ।

१४. द्वादशाध्याये - ॐ देव्युवाच - इतिपदाभ्यां २ आहुती, अर्धश्लोकाभ्यां २ आहुती, पूर्णश्लोकैः ३७ आहुतयः,

एवं मिलित्वा ४१ आहुतयः । अध्यायान्ते स्रुचि सघृतहविः- बिल्वफल-अगरु-तगर-केसर-पुष्पाणि निधाय घृतमापूर्य समुत्थाय च 'नमो देव्यै०' इति मन्त्रमुच्चार्य साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीबालायै त्रिपुरसुन्दर्यै महासरस्वत्यै स्वाहा, इति महाहुतिं समर्पयेत् । जलमुत्सृजेत् ।

१५. त्रयोदशाध्याये - ॐ ऋषिरुवाच - इत्यादिपदैः ६ आहुतयः, अर्धश्लोकैः ११ आहुतयः, पूर्णश्लोकैः १२ आहुतयः, एवं मिलित्वा २९ आहुतयः । अध्यायान्ते - स्रुचि सघृतहविः - कदलीफल-केसर-पुष्पाणि निधाय घृतमापूर्य समुत्थाय च 'नमो देव्यै०' इति मन्त्रमुच्चार्य साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै महात्रिपुरसुन्दर्यै श्रीविद्यायै महासरस्वत्यै स्वाहा, इति महाहुतिं समर्पयेत् । जलमुत्सृजेत् ।

१६. अन्ते नवार्णमन्त्रेण १०८ आहुतयः प्रदेयाः ।

१७. भैरवनामभिः १०८ आहुतयो देयाः ।

टिप्पणी - प्रारम्भे कवचार्गलाकीलकमन्त्रैस्तथा पाठान्ते रहस्यत्रयमन्त्रैश्च होम-निषेधः । उक्तं च सप्तशतीसर्वस्वे वैकृतिकरहस्ये पं. श्रीसरयूप्रसादद्विवेदेन तन्त्रशास्त्रानुसारम् - चण्डीस्तवे प्रतिश्लोकमेकैकाहुतिरिष्यते । रक्षाकवचगैर्मन्त्रैर्होमं तत्र न कारयेत् । मौर्ख्यात् कवचगैर्मन्त्रैः प्रतिश्लोकं जुहोति यः । स्याद्देहपतनं तस्य नरकं च प्रतिपद्यते । अन्धकाख्यो महादैत्यो दुर्गाहोमपरायणः । कवचाहुतिजात्पापान्महेशेन निपातितः । शतचण्डीविधानेऽपि स्पष्टमुक्तम् - शूलेनेत्यादिचतुर्मन्त्रैस्तथा कवचादित्रयेण रहस्यत्रयेण च होमो न कार्यः ।

रामकृष्णपरमहंसरचितदेवीपद्यपुष्पाञ्जलिस्तवः

भगवतीभगवत्पदपङ्कजं भ्रमरभूतसुरासुरसेवितम् ।
सुजनमानसहंसपरिष्कृतं कमलयाऽमलया विभृतं भजे ॥१॥

ते उभे अपि वन्देऽहं विघ्नेशकुलदेवते ।
नरो नागाननस्त्वेको नरस्सिंहाननो परः ॥२॥

हरिगुरुपदपद्मे चित्तपद्मानुरागा-
दधिगतपरिभागे सन्निधायादरेण ।
तदनुचरि करोमि प्रीतये भक्तिभाजां,
भगवति पदपद्मे पद्यपुष्पाञ्जलिस्ते ॥३॥

केनैते रचिताः कुतो न निहिताः शुम्भादयो दुर्मदाः,
केनैते बत पालिता इति हि तत्प्रश्ने किमाचक्ष्महे ।
ब्रह्माद्या अपि शङ्किताः स्वविषये यस्याः प्रसादावधि,
प्रीता सा महिषासुरप्रमथिनी सिद्धादिवन्द्यावतु ॥४॥

पातु श्रीस्तु चतुर्भुजा किमु चतुर्बाहोर्महौजो भुजान्,
धत्तेऽष्टादशधा हि कारणगुणाः कार्ये गुणारम्भकाः।
सत्यं दिक्पतितुल्यसंख्यभुजभृच्छम्भुस्वयम्भूस्वभूः,
धामैकप्रतिपत्तये किमथवा पातुं दशाष्टौ दिशः ।।५।।

प्रीत्याष्टादशसम्मितेषु युगपद्दीनेषु दातुं वरान्,
त्रातुं वो भयतो बिभर्ति भगवत्यष्टादशैतान् भुजान्।
यद्वाष्टादशधा भुजांस्तु बिभृतः काली सरस्वत्युभे,
संहत्यैक्यमिहानयोः प्रथयितुं सा त्वं रमे रक्ष माम्।।६।।

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि, विश्वविनोदिनि नन्दिनुते
गिरिवरविन्ध्यशिरोऽधिनिवासिनि, विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि, भूरिकुटुम्बिनि भूतिकृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि, रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।७।।

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि, दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवनपोषिणि शङ्करतोषिणि कल्मषमोषिणि घोषरते।
दनुजनिरोषिणि दुर्मदशोषिणि, दुर्मुनिरोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि, रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।८।।

अयि जगदम्ब! कदम्बवनप्रियवासिनि तोषिणि हासरते
शिखरिशिरोमणितुङ्गहिमालयशृङ्गनिजालयमध्यगते ।
मधुरमधुरे मधुकैटभगञ्जिनि, महिषविदारिणि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि, रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।९।।

अयि निजहुङ्कृतिमात्रनिराकृतधूम्रविलोचनधूम्रशते
समरविशोषितरोषितशोणितबीजसमुद्भवबीजलते ।
शिवशिवशुम्भनिशुम्भमहाहवहर्षितभूतपिशाचपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि, रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।१०।।

अयि शतखण्डविखण्डितरुण्डवितुण्डितशुण्डगजाधिपते
निजभुजदण्डनिपातितचण्डविपाटितमुण्डभटाधिपते ।
रिपुगजगण्डविदारणचण्डपराक्रमशौण्डमृगाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि, रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।११।।

धनुरनुषङ्गरणक्षणसङ्गपरिस्फुरदङ्गनटत्कटके
कनकपिशङ्गपृषत्कनिषङ्गरसद्भटशृङ्गहताबटुके ।
हतचतुरङ्गबलिक्षितिरङ्गघटद्बहुरङ्गरटद्बटुके
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि, रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।१२।।

अयि रणदुर्मदशत्रुवधोद्धुरदुर्धरनिर्भरशक्तिभृते
चतुरविचारधुरीणमहाशयदूतकृतप्रमथाधिपते ।
दुरितदुरीहदुराशयदुर्मतिदानवदूतदुरन्तगते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि, रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।१३।।

अयि शरणागतवैरिवधूजनवीरवराभयदायिकरे
त्रिभुवनमस्तकशूलविरोधिशिरोधिकृतामलशूलकरे ।
दुमिदुमितामरदुन्दुभिनादमुहुर्मुखरीकृतदिङ्निकरे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि, रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।१४।।

सुरललनाततथेयितथेयितथाभिनयोत्तरनृत्यरते
कृतकुकुथाकुकुथोदिडदाडिकतालकुतूहलगानरते ।
धुधुकुटधूधुटधिन्धिमितध्वनिधीरमृदङ्गनिनादरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि, रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।१५।।

जय जय जाप्यजये जयशब्दपरस्तुतितत्परविश्वनुते
झण-झण झिञ्झिमझिङ्कृतनूपुरशिञ्जितमोहितभूतपते ।
नटितनटार्धनटीनटनायकनाटननाटितनाट्यरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि, रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।१६।।

अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोरमकान्तियुते
श्रितरजनीरजनीरजनीरजनीरजनीकरवक्त्रभृते ।
सुनयनविभ्रमरभ्रमरभ्रमरभ्रमरभ्रमराभिदृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि, रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।१७।।

महितमहाहवमल्लमतल्लिकवल्लितरल्लितभल्लिरते
विरचितवल्लिकपालिकपल्लिकझिल्लिकभिल्लिकवर्गवृते ।
श्रुतकृतफुल्लसमुल्लसितारुणतल्लजपल्लवसल्लसिते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि, रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।१८।।

अयि सुदतीजनलालसमानसमोहनमन्मथराजसुते
अविरलगण्डगलन्मदमेदुरमत्तमतङ्गजराजगते ।
त्रिभुवनभूषणभूतकलानिधिरूपपयोनिधिराजसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि, रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।१९।।

कमलदलामलकोमलकान्तिकलाकलितामलभालतले
सकलविलासकलानिलयक्रमकेलिचलत्कलहंसकुले ।
अलिकुलसंकुलकुन्तलमण्डलमौलिमिलद्बकुलालिकुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि, रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।२०।।

करमुरलीरववीजितकूजितलज्जितकोकिलमञ्जुमते
मिलितमिलिन्दमनोहरगुञ्जितरञ्जितशैलनिकुञ्जगते ।
निजगणभूतमहाशबरीगणरङ्गणसम्भृतकेलिरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि, रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥२१॥

कटितटपीतदुकूलविचित्रमयूखतिरस्कृतचण्डरुचे
जितकनकाचलमौलिमदोर्जितगर्जितकुञ्जरकुम्भकुचे ।
प्रणतसुरासुरमौलिमणिस्फुरदंशुलसन्नखचन्द्ररुचे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि, रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥२२॥

विजितसहस्रकरैकसहस्रकरैकसहस्रकरैकनुते
कृतसुरतारकसङ्गरतारकसङ्गरतारकसूनुनुते ।
सुरथसमाधिसमानसमाधिसमानसमाधिसुजाप्यरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि, रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥२३॥

पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत् ।
तव पदमेव परमपदमस्त्विति शीलयतो मम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि, रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥२४॥

कनकलसत्कलशीकजलैरनुषिञ्चति तेऽङ्गणरङ्गभुवम्
भजति स किं न शचीकुचकुम्भनटीपरिरम्भसुखानुभवम् ।

तव चरणं शरणं करवाणि, सुवाणि पथं मम देहि शिवम्
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि, रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।२५।।

तव विमलेन्दुकलं वदनेन्दुमलं कलयन्ननुकूलयते
किमु पुरुहूतपुरीन्दुमुखीसुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते ।
मम तु मतं शिवमानधने भवती कृपया किमु न क्रियते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि, रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।२६।।

अय मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
अयि जगतो जननीति यथासि मयासि तथानुमतासि रमे ।
यदुचितमत्र भवत्पुरगं कुरु शाम्भवि देवि दयां कुरु मे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि, रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।२७।।

स्तुतिमिमां स्तिमितः सुसमाधिना, नियमतो यमतोऽनुदिनं पठेत् ।
परमया रमया स निषेव्यते, परिजनोऽरिजनोऽपि च तं भजेत् ।।२८।।

रमयति किलकर्षस्तेषु चित्तं नराणामवरजवरयस्माद्रामकृष्णः कवीनाम् ।
अकृतसुकृतगम्यं रम्यपद्यैकहर्म्यं स्तवनमवनहेतुं प्रीतये विश्वमातः ।।२९।।

इन्दुरम्यो मुहुर्विन्दुरम्यो मुहुर्विन्दुरम्यो यतः साऽनवद्यं स्मृतः ।
श्रीपतेः सूनुना कारितो योऽधुना विश्वमातुः पदे पद्मपुष्पाञ्जलिः ।।३०।।

।।इति श्रीरामकृष्णपरमहंसविरचितं देवीपुष्पाञ्जलिस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

श्रीदुर्गाप्रसादद्विवेदप्रणीतो वज्रेश्वरीस्तवः

जयजगदम्ब! कदम्बविहारिणि! मङ्गलकारिणि! कामकले!
जय तनुशोभाकम्पितशम्पे! लसदनुकम्पे कान्तिनिधे!।
जय जितकामेऽपि जनितकामे! धूर्जटिवामे! वामगते!
जय जालन्धरपीठविलासिनि! दुःखविनाशिनि! भक्तिवशे!।।१।।

नानालङ्कृतिझङ्कृतिशालिनि! मौक्तिमालिनि! केलिपरे!
मुनिजनहृदयागारनिवासिनि! विद्यास्वामिनि! बोधघने!।
सान्द्रानन्दसुधारसभासिनि! वीणावादिनि! वेदनुते!
जय जालन्धरपीङ्गविलासिनि! दुःखविनाशिनि! भक्तिवशे!।।२।।

आपत्तूलमहानलकीले! पालनशीले! भूतिखने!
द्युतिजितचम्पकदामकलापे! मधुरालापे! हंसगते!।
विभ्रमरञ्जितशङ्करहृदये! कृतजगदुदये! शैलसुते!
जय जालन्धरपीठविलासिनि! दुःखविनाशिनि! भक्तिवशे!।।३।।

मूले दीपककलिकाकारे! विद्यासारे! भवसि परा
तस्मादपसृतिकलनावृद्धे! मणिपुरमध्ये पश्यन्ती।
स्वान्ते मध्यमभावाकूता, कण्ठे वितता वैखरिका
जय जालन्धरपीठविलासिनि! दुःखविनाशिनि! भक्तिवशे! ।।४।।

पश्चादाविर्भवदनवद्ये! श्रेयः पद्ये! यत्तदिदम्
शब्दब्रह्मतया खलु गेयं, खमिवामेयं किमपि घनम्।
पञ्चाशल्लिपिभेदविचित्रं वाङ्मयमात्रं त्वमसि परे!
जय जालन्धरपीठविलासिनि! दुःविनाशिनि! भक्तिवशे! ।।५।।

भवभवविभवपराभवहेतो! गिरिकुलकेतो! भक्तहिते!
नानाविधवृजिनोत्करवारिणि! करुणासारिणि! शान्ततरे!।
सहसोत्सादितसाधकविघ्ने! श्रद्धानिघ्ने! सुखकलिके!
जय जालन्धरपीठविलासिनि! दुःखविनाशिनि! भक्तिवशे! ।।६।।

सिन्दूरद्रवचुम्बितभाले ! सेवितहाले! प्रेमभरे!
मातश्चिन्तामणिभवनान्ते ! निर्झरकान्ते! विततततम्।
सोत्कं गायसि किन्नरदारैः, साकमुदारैः पतिचरितम्
जय जालन्धरपीठविलासिनि ! दुःखविनाशिनि! भक्तिवशे! ।।७।।

क्लेशं भञ्जय, रञ्जय चित्तं, वित्तं स्फारीकुरु वरदे!
शत्रुं मर्दय, वर्धय शक्तिं, भक्तिं सान्द्रीकुरु सरले!।
नास्ति कृपानिधिरम्ब! त्वत्तो मत्तो मत्ततमो न शिवे!
जय जालन्धरपीठविलासिनि! दुःखविनाशिनि! भक्तिवशे!।।८।।

वज्रालङ्करणायाः वज्रातटिनीविहारशीलायाः।
वज्रेश्याः स्तवमेतं पठतां सङ्गच्छतां श्रेयः।।९।।

।।इति दुर्गाप्रसादद्विवेदप्रणीतायां दुर्गापुष्पाञ्जलौ प्रथमस्तवः सम्पूर्णः।।

श्रीहरिशास्त्रिविरचितसुवर्णालक्ष्मी-नक्षत्रमालास्तवः

अयिभृगुनन्दिनि विश्वविनोदिनि सेवकमोदिनि वैभवदे,
भगवति हे भवभीतिनिवारिणि शोकविदारिणि पाहि चिरम्।
प्रणत मनोरथ-सिद्धि-विधायिनि हे वरदायिनि विश्वनुते,!
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते।।१।।

अयि किल दुर्जन-दानवदर्पविदारणकारिणि देवि! रमे!
प्रसरदमन्द-सुधामृदुविन्दुकवृन्द-मुखेन्दुलसत्सुषमे ।
दलदरविन्दविभापरिनिन्दकलोचनिके! भवमोचनिके,
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते।।२।।

कलकलितावलिमञ्जुकणत्कलहंसरणन्मणिकिङ्किणिके ,
तिमिरितदैन्यविदारणकारणदारुणकारुणवीक्षणिके ।
अविरतमिन्द्रमुखादितिनन्दन-वृन्दकवन्द्य-पदद्वितये ,
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते।।३।।

प्रणतिपतत्सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोरमतां गमितं,
तव चरणं विपदुद्धरणं भवसंहरणं शरणं विदधे।
मयि यमुनाञ्चितवीचिविचञ्चलचारुदृगञ्चलमञ्चयते,
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते।।४।।

नमदमरीविधुरीभवदच्छललत्कबरीकभरीप्रसर-
त्सुरसुमनोमृदुगन्ध-झरीभरितं भ्रमरीभ्रमरीतिवृतम्।
कमलमकर्द्दमसङ्गमसुद्गमनालकमस्ति विचित्रमिदं,
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते।।५।।

समधिकपीनघनस्तनभारकमध्यदरानमिताङ्गलते
न कुरु विलम्बनमम्ब 'तवाङ्घ्रिवलम्बनकं' बत लम्भय मे,
रुचिरकुसुम्भकसम्भरदम्बरशोभिनितम्बकबिम्बयुते ।
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते।।६।।

स्फुरणदरुणारुणकान्तिलसल्लघुकञ्चुकसामिवृतस्तनिके,
सुविशदमञ्जुलमौक्तिकहारविहारमहीभृदुरः स्थलिके।
दलदरविन्दकयुग्मवराभयशोभितपाणिचतुष्कयुते ।
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते।।७।।

मणिकनकाङ्गदकङ्कणसद्वलयादिधृताभरणच्छलना-
दविरतमेव कृते नमतां शुभसंपद उज्जनयन्त इव।
तव युगवत्पुरुषार्थकदानपराः सुभुजाः किल कल्पनगाः
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते।।८।।

अमृतमयूखमुखप्रसरन्मधुरस्मितचन्दिरचारुरुचि-
प्रचयचिरञ्चटुलायितचञ्चल-चारु-चकोरकचञ्चुपुटे ।
रविरुचिदर्पविखण्डनपण्डितकुण्डलमण्डितगण्डयुगे ,
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते।।९।।

स्फुरदधरारुणबिम्बककान्तिकरम्बमितद्विजराजिविभा-
मृदुलसितेन तिरस्कृतसंस्फुटदाडिमिकारुणबीजकणे।
तब किल गन्धवहाविजितं तिलपुष्पमलं वनमाश्रयते,
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते।।१०।।

पुलककलाकुलकोमलकान्तिकरम्बविलोलकपोलसित-
च्छबिजविलासपराकलितद्विपपोतकदन्तदलद्युतिके ।
तव ललितस्मरणपाशविलासकला-प्रवणे श्रवणे जयतः
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते।।११।।

नटनपटीमृदुभालतटी पृथगुल्लसितोत्कटकोटियुगे
दरविकटं प्रकटाप्रकटं कुटिलं प्रणटद्भ्रुकुटीनटिके।
मृगमदविन्दुलसच्छरदिन्दुविनिन्दकसुन्दरभालयुते
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते।।१२।।

जितकुटिलान्तरकान्तविलीनसुकुन्तलभारतमिस्रचयः
जयति दिशो विदिशो ज्वलयंस्तवमौलिकरत्नसहस्रकरः।
कलचलदुच्चकलङ्गि महामणिमण्डितहेमकिरीटधृते!
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते।।१३।।

अयि परमे परमेश्वरि! ते करुणावरुणालयमध्यलुलत्
तरलवितुङ्गतरङ्गकरिगदपाङ्गविभां क्षणमेत्यपि यः।
त्रिदशकुरङ्गदृशोऽपि तदङ्कसङ्गमवाञ्छितमादधते,
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते।।१४।।

अनिशमकारणकारुणिकेम्ब! सुवर्णसुवर्णवतीं भवतीं
मनसि विचिन्तयते प्रयते किल यः सुजनः सुमनस्त्वमितः।
करकषणादपि रेणुकणातिगणान्स सुवर्णमयान्कुरुते
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते।।१५।।

शरयुग्मीकृतितोऽनुकृतं हिमधामकलाकुलबिन्दुयुतं
इह य इदं तव वीजपदं शिवदं प्रजपेत्स हि फूत्करणात्।
अतिथिललाटदरिद्रलिपिं परिलिम्प्य धनेश्वरतां ददते,
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते।।१६।।

स्वरशिरसं च कवर्गहृदं चटवर्गभुजां तपवर्गपदां,
यरलवपार्श्वयुगोदरनाभिसवर्गनितम्बमहाजघनाम्।
तिलकदनुस्वरकां मुकुटप्रणवांस्तनकाग्रविसर्गमयीं,
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते।।१७।।

इति किल वर्णमयीं तव चारुतनुं हृदये परिचिन्तयतां
स्फुरदरविन्दवदाननतो वनिताधरदुग्धसुधामधुरम्।
मधुसहकारसितारसपूरपरिप्लुतमुक्तिमधु द्रवते,
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते।।१८।।

तव भवसम्भवपालनकालनशिल्पनकल्पनकेलिविधौ,
अमृतपयोनिधितुङ्गतरङ्गवदङ्गपाङ्गकलैव परम्।
जननि! विरिञ्चति विष्णवति त्रिपुरान्तकति स्वयमेव मुहुः
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते।।१९।।

भुवनमहेश्वरि ते चरणाम्बुजयोः प्रणमन्क्षणतः प्रणयात्
सुरललनाकुलसङ्कलितामलचामरवीजितमञ्जुतनुः ।
सकलसुराधिपताधिकृतः शतमन्युरपीन्द्रपदं भजते,
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते ।।२०।।

उपरि तवामृतपूर्ण-सुवर्णघटैरभिषेचनकं विदध-
ज्झटितिकपालिसखोऽपि धनेश्वरताधिकृतौ त्रिदशैर्म्रियते ।
न तदिदमद्भुतमस्ति यतस्तव सेवितुरस्ति न किं सुलभं,
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते ।।२१।।

अधिमधुरामृतवारिधि 'शोणसहस्रदले' कमले लसितां
प्रणमति 'यः' क्षणतोऽपि नरः स्वपुरः प्रणमद्बहुभूमिभुजाम् ।
मुकुटविराजितहीरकराजिविभाविनिराजनमेति पदे
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते ।।२२।।

निजकरुणारस-पाणिलसत्खरधाकटाक्षकुङ्गारिकया
भगवति! मत्परितो हरितां लसितां सुदुरन्तदरिद्रलताम् ।
झटिति विलूय मदीयतनूपवने तव दृग्रमणी रमताम्,
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते ।।२३।।

निजमदगन्धविलुब्धमिलिन्दसुमञ्जुलझङ्कृतिनादमिषा-
च्छ्रुतिमनुकाम्रपठद्भिरगाधिपतुङ्गविशुभ्रचतुर्भिरलम् ।
त्वदुपरि हेमघटैरभिषेचनकं कलयद्भिरिभैर्वलिते
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते।।२४।।

प्रभवति यो भवतीं हृदये कलयन्त्वयि भक्तिनिमग्नमनाः
स लसदलिन्दतले किरतो मदवारि मिलन्मधुपाकुलितान्।
सकलमहीपकुलैरुपदीकृतगन्धगजानवलोकयते ,
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते।।२५।।

जननि! यतस्तव 'दृष्टिकला' विरमेत्परमेऽपि रमेत रमे-
प्रभवति तद्भुवनं भवनं च वनं च वनं भुवनं भवनम्।
सुदृढमरीभवति स्वजनोऽरिजनः स्वजनीभवति क्षणतो,
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते।।२६।।

समधिकदुः सहदुः खददैन्यकदुर्ज्वरजर्जरदेहभरे-
मयि दयनीयशिशौ 'निजदीनदयालुविधेः' सफलत्वकृते।
मधुर-सुधारसशीलन-शीतल-पाणितलं परिशीलय ते,
जय कमले. जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते।।२७।।

तव पदपद्ममधुव्रतकोविदकेशरिणा हरिणा भणितां
प्रणुतिमिमामतिमञ्जुलकोमलकान्तपदां पङ्ठतां भवतीम्।
गृहवसुधां वसुदां कलयन्त्यचिरं स्वयमालयमाश्रयताम्,
जय कमले जय पद्मनिवासिनि विष्णुविलासिनि सिन्धुसुते।।२८।।

मातर्मे! परमे! गुणत्रयमयि! क्षीरोदकन्ये! रमे!
पद्मे! पद्मनिकेतने! भृगुसुते! नित्ये! जयन्तीन्दिरे!।
श्रीः! कल्याणि! हरेः कुटुम्बिनि! परे! कारुण्यवारां निधे,
प्रेम्णैतां कविमौलिभूषणहरेर्वर्णालिमाकर्णय।।२९।।

रमाहमारभ्य शतं दिनानि यः समाहितात्मा कमलां प्रपूजयन्
अत्रोक्तमन्त्रं विधिना दिवा जपन् निशीथकालान्तमिमां स्तुतिं पङ्ठेत्।।३०।।

तथा रमामूर्तिपुरो नटन्मुदा गायेदिमां वा स्वरतालभेदतः।
भूमौ स भूरिद्रविणाधिराजकं पदं गतो राजति राजराजिषु।।३१।।

।।इति श्रीहरिशास्त्रिविरचितः सुवर्णालक्ष्मीनक्षत्रमालास्तवः।।

श्रीदुर्गा-पूजन-हवन-सामग्री-पत्रम्

श्रीफल	अरारोट
रोली	हल्दी पिसी हुई
मोली	भोडल का चूरा
सफेद चन्दन का पासा	माचिस पुडा
रक्त चन्दन का पासा	साबुत हल्दी
केसर की डिब्बी, नागकेसर	चांदी के वर्क
यज्ञोपवीत	गुलाब जल
सुपारी मोटी	केवडा जल
सुपारी छोटी	गङ्गा जल
दशाङ्ग धूप	चमेली का तेल
गूगल	तिलों का तेल
अगरबत्ती पैकेट	आंवला तेल
कपूर	इत्र
सरसों पीली	कालीमिर्च
लोंग	सैंधा नमक
डोडा	सांभर नमक साबुत
जावित्री	राई
जायफल	मेंहदी पिसी हुई
कङ्कोल	हींगलू सूखा
गुलाल चार रंग की	काजल डिब्बी
चांवलों की खील	काजल सुरमा शीशी
आंवला सूखा	सफेद सुरमा शीशी
आंवला हरा	शदह की शीशी
आंवला मुरब्बा	**सर्वौषधी**
मुनक्का	हल्दी पिसी हुई
सिन्दूर	दारु हल्दी

मरोड फली	अखरोट
वच	काजू
जटामांसी	बादामगुली
चम्पा-पुष्प	पिस्ता
कूट	छिवारा
श्वेतचन्दनचूर्ण	चारोली
शिलाजीत	मिश्री सिरे
नागरमोथा	तालमखाणा
हवनीय - द्रव्य	मीठे मखाणे
गोघृत	मिश्री का चूरा (टुकडे)
तिल	गुड
जौ	पतासा
चांवल	शर्करा
बिल्वगिरि	खीर (दूध की)
जटामांसी	शतावरी
गिरिगोला	कूष्माण्ड-खण्ड (कोह्ले के टुकडे)
छाडछबीला	खोपरे के टुकडे
कमलगट्टा	सफेद चन्दन के टुकडे
भोजपत्र	लाल चन्दन के टुकडे
चन्दन का चूरा	गन्ने के टुकडे
इन्द्र जौ	जावित्री
कपूरकाचरी	कस्तूरी
नागरमोथा	अनार के फल और पुष्प
किशमिश	कपूर के टुकडे

बील-फल के टुकडे
अगर
तगर
केसर
केले के फल
मधुपुष्प-महुआ के फूल
बीजपुरफल-बिजौरा नींबू
चिरञ्जीबीज-चारोली
जवा-ग़ुडहल के फूल
आमलकफल-आंवले
जम्बीर-जम्बीरी निंबू
मातुलुङ्ग-बिजौर के फल

ग्रह-समिधा

आकडे की समिधा
पलाश की समिधा
खैरी की समिधा
आंधी झाडा की समिधा
पीपल की समिधा
गूलर की समिधा
खेजडे की समिधा
दूर्वा (दोब)
कुशा (डाब)

नोटः-प्रत्येक समिधा की लम्बाई एक बालिस्त ।

हवन-समिधा

पीपल की समिधा
आम की समिधा
गूलर की समिधा
खेजडे की समिधा
गो गोटा (आरणा)

पञ्च-पल्लव

पीपल की शाखाऐं
गूलर की शाखाऐं
पाकर पीपल की शाखाऐं
आम की शाखाऐं
बड की शाखाऐं
अशोक (आशापाला)
के पत्ते (बांदरवाल) ।
रंगीन कागजों की बांदरवाल
केले के पत्ते
लाल, सफेद, पीले गुलाब के
फूल, पुष्पमालायें, दोब,
खेजडे के पत्ते, पान नागर बेल

मिट्टी के बर्तन

कलश बडा और छोटा
छोटे कूण्डें
कूण्डा बड़ा
सराईयाँ
डीबे

पीली मिट्टी
भूरी मिट्टी
सकोरे
पत्तल
दोनें
छोटे दोनें
छीले के डांड

ब्राह्मण वरण हेतु वस्त्र

पीताम्बरी
धोवती
दुपट्टा
बगलबन्दी
बनियान
गमछा
आसन
पादुका
पात्र (लौटा)
पञ्चपात्र
चांदी की अंगुठी
गोमुखी, माला
दुर्गासप्तशती और भैरव
नामावली की पुस्तकें

गणेशादि मण्डलों के लिये वस्त्र

लाल वस्त्र
सफेद वस्त्र
पीला वस्त्र
काला वस्त्र
लाल रेशमी वस्त्र
केसरिया साटन

प्रधान-वस्त्र

पीताम्बरी
रक्ताम्बरी
दुपट्टा रेशमी
धोती जोडा
जनानी धोती जोडा
ब्लाउज
लहंगा
ओढनी (चूनरी)
पेटीकोट
गमछा
छींट

विविध-धान्य

जौ
गेंहूँ
चांवल
मूंग
उडद

चणे की दाल
मशूर की दाल
तिल
सांवख्या
माल कांगणी
सरसों

काष्ठ-पात्र

चौकी बडी
चौकी छोटी
पाटा बडा
पाटा छोटा
लकडी की पट्टिका
पट्टा
बांस का टोकरा

स्वर्ण व रजत सामग्री

स्वर्ण शलाका
प्रधान मूर्ति (दुर्गा)
स्वर्ण की
वास्तुमूर्ति रजत की
योगिनीमूर्ति रजत की
क्षेत्रपाल मूर्ति रजत की
ग्रह - प्रतिमा रजत की
रुद्र की मूर्ति रजत की
चाँदी की टिकडियाँ
सोने की टिकडियाँ
सिंहासन चाँदी का
छत्र चाँदी का
पताका चाँदी की
चाँदी का चौकोर पत्र यन्त्र
निर्माण हेतु
नवरत्न पुडिया
पञ्चरत्न पुडिया
प्रधान-प्रतिमा (दुर्गा) के
लिए आभूषण

पूजा-पात्र

प्रधान कलश तांबे का बडा
पूजा-कलश
रामसागर
तांबे की तामडी
कांसी का कटोरा
कांसी की थाली
पीतल की परात
चरु के लिये भगोना बडा
पूर्णपात्र के लिये भगोना बडा
कटोरियाँ
पूजा सामग्री के लिए थाल
गिलास
कलई का लौटा
बालटी पीतल की
दीपपात्र छोटे
शंख
गरुडघण्टा

पञ्च-पात्र

नित्यपूजा-सामग्री

पुष्प खुल्ले
पुष्पमालायें
पुष्प कमल के
गजरे
दूर्वा
आम्रपल्लव
मिठाई मावे की
लड्डू
आगरे का पेठा
कंगण
कचोरी
पापड
मूंग (पकाये हुये)
उडद की पकौडी
पकौडी बेसन की
उडद का बाकला
बाटी
थूली
दही
कङ्गण
आगरे का पेठा
गेंहूँ की घूघरी
मैदा का पेठा
पान नागरवेल के
लोंग
इलायची
सिन्दूर
पुष्प माला
गुड
दक्षिणा

दक्षिणा-द्रव्य

नित्यार्चन द्रव्य
वरण-दक्षिणा
पुण्याह-वाचन दक्षिणा
आचार्य दक्षिणा
ब्रह्मा दक्षिणा
उपाचार्य - दक्षिणा
वैदिक - दक्षिणा
ऋत्विक् - दक्षिणा
प्रधान - भेंट
अग्नि - भेंट
पूर्णपात्र - दक्षिणा
प्रधान - भेंट
अग्नि - भेंट
पूर्णपात्र - दक्षिणा
अन्न - दान
गोदान
भूयसी - दक्षिणा
ब्राह्मण-भोजन-दक्षिणा
कुमारी - दक्षिणा

।।श्रीः।।

पद्धति-प्रणेता

नाम	**पं. मोहनलाल शर्मा 'पाण्डेय'** राष्ट्रपतिसम्मानित, वाचस्पतिपुरस्कारसभाजित
पितृनाम	श्रीदुर्गालाल शर्मा पाण्डेय
जन्मतिथि	२३ सितम्बर, १९३४ ई.
जन्मस्थान	जयपुर (राजस्थान)
निवास-सङ्केत	२३८१, 'पाण्डेय-भवन' खजाने वालों का रास्ता, जयपुर (राज.) दूरभाष - ०१४१-२३२११५१
योग्यता	साहित्याचार्य, याज्ञिक-सम्राट्
प्राचार्यचर	राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, अजमेर (राजस्थान)
अध्यक्ष	अखिल भारतीय वेद वेदाङ्ग ज्योतिष स्वाध्याय संस्थान, जयपुर
अध्यक्ष	श्री वैदिक संस्कृति प्रचारक सङ्घ, जयपुर
उपाध्यक्षचर	राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर

कृतित्व

(क) लेखन -

- **'रसकपूरम्'** ऐतिहासिक संस्कृत गद्यकाव्य (अनूदित उपन्यास)। जयपुर रियासत से सम्बद्ध । प्रकाशित १९९३
- **'पद्मिनी'** ऐतिहासिक संस्कृत गद्यकाव्य (उपन्यास) । प्रकाशित १९९९

- **'पत्रदूतम्'** (खण्डकाव्य) विश्वप्रसिद्ध ईराक के खाड़ी युद्ध की घटना पर आधारित । प्रकाशित १९९९
- **'श्रीरामचरिताब्धिरत्नम्'** महाचित्रकाव्य (पं. नित्यानन्द शास्त्री विरचित) की 'रत्नप्रभा' हिन्दी टीका । प्रकाशित २००३
- **'नतिततति'** (वर्णैकप्रधान मुक्तकचित्रकाव्य) विभिन्न देवताओं की स्तुति । प्रकाशित २००७
- **'श्रीहनुमत्पूजा-पद्धतिः'** स्वरचित पौराणिक पद्यों सहित साङ्गोपाङ्ग पूजा-विधि । प्रकाशित २००७
- **'संस्कार सोपान'** भारतीय जीवन-पद्धति के आधार १६ संस्कार । प्रकाशित २००७
- **'श्रीरामपूजा-पद्धतिः'** स्वरचित पौराणिक पद्यों सहित साङ्गोपाङ्ग पूजा-विधि । प्रकाशित २००७
- **'गणेशपूजा-पद्धतिः'** स्वरचित पौराणिक पद्यों सहित साङ्गोपाङ्ग पूजा-विधि । प्रकाशित २००७
- **'श्रीकृष्णपूजा-पद्धतिः'** स्वरचित पौराणिक पद्यों सहित साङ्गोपाङ्ग पूजा-विधि । प्रकाशित २००८
- **'श्रीशिवपूजा-पद्धतिः'** स्वरचित पौराणिक पद्यों सहित साङ्गोपाङ्ग पूजा-विधि । प्रकाशित २००९
- **'श्रीदुर्गापूजा-पद्धतिः'** स्वरचित पौराणिक पद्यों सहित साङ्गोपाङ्ग पूजा-विधि प्रकाशित २०१० ।
- **'ग्रहशान्तिः'**, प्रकाशनाधीन ।
- **'समस्या-सौहित्यम्'** **'मुक्तकमौक्तिकम्'** आदि मुक्तक काव्यों का संग्रह, प्रकाशनाधीन ।
- **अभिनन्दन-पत्र, कविताञ्जलि** आदि लब्धप्रतिष्ठ-विद्वानों के सम्मानार्थ रचना, प्रकाशनाधीन ।

(ख) सम्पादन -

- **'स्वातन्त्र्यसहयोगिनः'** राजस्थान संस्कृत अकादमी द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ -१९९९
- **'राजस्थानगौरवम्'** राजस्थान संस्कृत अकादमी द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ - २००१
- **'स्वरमंगला'** राजस्थान संस्कृत अकादमी द्वारा प्रकाशित त्रैमासिकी संस्कृत पत्रिका १९९७-१९९९

सम्मान तथा पुरस्कार -

- **'सम्मान-पत्र'** नवम्बर, १९९२, द्वारा कुलपति, वेद-वेदाङ्ग आयुर्वेद विद्यापीठ, इन्दौर एवं अखिल भारतीय वेद महोत्सव, इन्दौर (म०प्र०)
- **'माघपुरस्कार'** - सन् १९९३, राजस्थान संस्कृत अकादमी का सर्वोच्च पुरस्कार 'पत्रदूतम्' खण्डकाव्य पर ।
- **'श्रीरामजीलाल शास्त्री स्मृति सम्मान'** मई १९९५, द्वारा राजस्थान संस्कृत संसद् , जयपुर ।
- **'राज्यस्तरीय विद्वत्सम्मान एवं पुरस्कार'** - सन् १९९५, राजस्थान सरकार द्वारा संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट सेवा एवं योगदान के उपलक्ष्य में ।
- **'योग्यता-पारितोषिक'** - १९९८-९९, संस्कृत शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा पुरस्कार ।
- **'विशिष्ट-विद्वत्सम्मान'** - सन् २०००, जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्य- सप्तशताब्दीसमारोहसमिति, जयपुर ।
- **'अखिलभारतस्तरीयविद्वत्सम्माननम्'** १९९९-२०००, द्वारा मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार एवं राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली ।

- **'राष्ट्रपतिसम्मान'** - सन् २०००, द्वारा महामहिम राष्ट्रपति, भारत सरकार, नई दिल्ली ।
- सन्. २००० - **अखिल-भारतीय पुरस्कार**-राजस्थान-संस्कृत-अकादमी, जयपुर द्वारा "पद्मिनी" उपन्यास पर शिक्षा-मन्त्री कमला द्वारा ।
- **'दिव्यावदान आलेख'** प्रशस्तिपत्र, जनवरी २००१, द्वारा ब्रह्मर्षि हरिकृष्ण छंगाणी ज्योतिष शोध संस्थान, फलोदी, जोधपुर (राज०)
- **'सम्मान-पत्रम्'** फाल्गुन कृष्णा-पञ्चमी, सम्वत् २०५७ (१२ फरवरी,२००१), द्वारा संस्कृतम्, संस्कृत भाषा प्रचार संस्थान, कोटा (राज०)
- **'प्रथम पुरस्कार'** - 'अखिल भारतीय समस्यापूर्ति स्पर्धा' मार्च २००१, राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन, जयपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रिय संस्कृत सम्मेलन के अवसर पर ।
- **'सम्मान-पत्र'** जुलाई २००१, उत्कृष्ट संस्कृत साहित्य सर्जन के लिए, द्वारा व्यास बाला बक्ष शोध संस्थान, जयपुर
- **'हारित ऋषि सम्मान'** - २०००-२००१, द्वारा - महाराणा मेवाड़ फाउन्डेशन, उदयपुर (राजस्थान) ।
- **'वाचस्पति-पुरस्कार'** - सन् २००२, 'पद्मिनी' उपन्यास पर, के.के. बिड़ला फाउन्डेशन, नई दिल्ली ।
- **'सम्मान-पत्र'** जुलाई २००४, शिवमय जीवनधारा, पावटा, जयपुर
- **'सम्मान-पत्र'** अगस्त, २००४, श्रीगोपुष्टि-नवकुण्डात्मक महायज्ञ समिति, चौमूँ (जयपुर)

- **'भट्ट-मथुरानाथशास्त्रिसाहित्यसम्मान'** वर्ष २००४-२००५, विशिष्ट वैदुष्य के लिए, द्वारा राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर ।
- **'विशिष्टविद्वत्-सम्मान'** - सन् २००४-०५, द्वारा राजगङ्गा चेरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर ।
- **'सम्मान-पत्र'** - १८ मार्च २००७, द्वारा राजस्थान गौड़ ब्राह्मण महासभा, मालवीय नगर सम्भाग, जयपुर
- **'महर्षि पुरस्कार'** - ११ अप्रेल २००७, द्वारा व्यास बालाबक्ष शोध संस्थान, जयपुर ।
- **'सम्मान-पत्र'** जून २००७, अञ्जना-हनुमान् धाम, चौमूँ, जयपुर
- **'पं. नित्यानन्दशास्त्रिस्मृतिसम्मानः'** - ७ सितम्बर २००८, द्वारा अखिल भारतीय साहित्य परिषद् एवं संस्कृत विभाग, जयनारायण विश्वविद्यालय, जोधपुर ।
- **'योग्यता-पारितोषिक'**- मार्च,२००९ ई. को संस्कृत शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर द्वारा **'नतिततति'** एकवर्णप्रधान चित्रकाव्य के लिए पुरस्कार ।
- **''विद्वत्-सम्मान''** ३० अगस्त,२००९ जयविनोदी ज्योतिष-परिषद्, जयपुर द्वारा
- **श्रीवाणी-अलङ्करण-सम्मान-** श्रीरामकृष्ण जयदयाल डालमिया द्वारा पद्मिनी उपन्यास पर ।

सम्मानोपाधियाँ -

- **'शास्त्रमहोदधि-उपाधि'**- सन् १९९५, श्री वैदिक संस्कृति प्रचारक संघ, जयपुर के द्वारा प्रौढ शास्त्रीय पाण्डित्य के लिए महामहोपाध्याय पं. श्री गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी की स्मृति में सम्मानित एवं पुरस्कृत ।
- **'विद्या-सागर'**- २९ अगस्त २००६, बदरिकाश्रमस्थ-ज्योतिर्मठ एवं द्वारकास्थ-शारदापीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य श्री स्वरूपानन्दसरस्वती द्वारा जयपुरीय चातुर्मास के अवसर पर सत्पदवी से अलंकृत ।

व्यक्तित्व-कृतित्व पर शोध कार्य -

- **'मोहनलाल पाण्डेय कृत 'पत्रदूत' का समीक्षात्मक अध्ययन'** शीर्षक से राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर की एम.फिल (संस्कृत) परीक्षा १९९६ हेतु डॉ. सुभाष तनेजा के मार्ग निर्देशन में सुश्री कल्पना शर्मा द्वारा लघु शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत ।
- **'आचार्य मोहनलाल पाण्डेय विरचित 'पद्मिनी' उपन्यास का समालोचनात्मक अध्ययन'** शीर्षक से महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर की एम. ए. (संस्कृत) उतरार्द्ध परीक्षा २००० के पञ्चम पत्र हेतु डॉ. कुञ्जबिहारी पाण्डेय के मार्ग निर्देशन में श्री शिवकुमार विश्नोई द्वारा लघु शोध प्रबन्ध प्रस्तुत।
- **'पद्मिनीगद्यकाव्यस्य समीक्षात्मकमध्ययनम्'** शीर्षक से श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) की विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) उपाधि २००६ के लिए डॉ. रमेश चन्द्र चतुर्वेदी के मार्ग निर्देशन में श्री अमित कुमार द्वारा शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत ।

- **'पं. मोहनलालशर्मपाण्डेयानां व्यक्तित्वकृतित्व-समीक्षा'** शीर्षक से ज़गद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर की विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) उपाधि के लिए देवर्षि कलानाथ शास्त्री के मार्ग निर्देशन में श्री सुरेश गुप्ता द्वारा किये जाने वाले शोध कार्य हेतु वर्ष २००७ में पंजीकरण ॥
- **'पद्मिनी गद्य काव्य का काव्य शास्त्रीय अध्ययन'** शीर्षक से विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म०प्र०) की एम.फिल. (संस्कृत) परीक्षा २००८ के लिए डॉ. राजू मूँसलगाँवकर के शोध निर्देशन में लक्ष्मी नारायण ऐरवाल द्वारा लघु शोध प्रबन्ध प्रस्तुत ।
- **'रसकपूरस्य ऐतिहासिकोपन्यासस्य संस्कृतानुवादस्य सर्वाङ्गीणमध्ययनम्'** शीर्षक से जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर की विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) उपाधि के लिए डॉ. जितेन्द्र कुमार अग्रवाल के मार्ग निर्देशन में श्री नरेन्द्र जोशी द्वारा किये जाने वाले शोध कार्य हेतु वर्ष २००८ में पंजीकरण ।

प्रसारण -

- दूरदर्शन तथा आकाशवाणी के कार्यक्रमों में परिचर्चा, काव्यपाठ, कथा आदि का अनेकों बार प्रसारण ।

कविसम्मेलन -

- राजस्थान संस्कृत अकादमी तथा अन्य संस्थानों द्वारा विभिन्न अवसरों पर आयोजित संस्कृत कवि सम्मेलनों में काव्यपाठ ।

धार्मिक कार्य -

- राजस्थान राज्य तथा अन्य राज्यों में समय-समय पर आयोजित यज्ञादि का अनुष्ठान, देवप्राण प्रतिष्ठा आदि कार्यक्रमों में आचार्य, उपाचार्य तथा ब्रह्मा के पद पर कार्य सम्पादन, जिसमें १०८ कुण्डीय यज्ञ सम्पादन उल्लेखनीय है ।

ए-३, हीदा की मोरी, **डॉ. राजेन्द्र कुमार तिवाडी**
गलता रोड़, जयपुर (राज०) कार्यालय सचिव,
दूरभाष : ९४१४०-६४८५९ राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
जयपुर परिसर, जयपुर
पुस्तकालय
क्रमांक 23414

प्रकाशक परिवार

स्व. श्री रामगुलाम
नाटाणी

स्व. श्रीमती सरस्वती देवी
नाटाणी

स्व. श्रीलक्ष्मणशरण
नाटाणी

रामशरण नाटाणी – पुष्पा देवी नाटाणी

विनोद नाटाणी – वर्षा नाटाणी

रमाशंकर नाटाणी – ऋतु नाटाणी

मोनीशा

दीपक

सुशान्त

निहाल

श्री जीण माता जी

काल भैरव (खण्डेला धाम)

J-